www.jvbi.ac.in

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान) की ओर से प्रो. बी.एल. जैन (कुलसचिव, जैन विश्वभारती संस्थान) द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। मुद्रणालय - मेसर्स पोपुलर प्रिण्टर्स, जयपुर में मुद्रित। सम्पादक - प्रो. दामोदर शास्त्री।

RNI-RAJBIL/2009/32418

Vol: 15, Issue: 2, July-December, 2023

Samvahini

Half Yearly Newsletter | Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun (Rajasthan)

अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन किये

06

सशक्त नारी:सशक्त राष्ट्र' पर राष्ट्रीय सेमिनार

08

12 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

10

वास्तुशास्त्र पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

12

निःशुल्क निसर्गोपचार शिविर का आयोजन

15

Grade 'A' by NAAC & Category 'A' by Ministry of Education

Jain Vishva Bharati Institute

(Deemed-to-be University)

Ladnun-341306, District- Didwana-Kuchaman (Raj.) India

A University Dedicated to Oriental Studies & Human Values

D.Lit. / Ph.D. / M.A. / M.Sc.
- Jainology and Comparative Religion & Philosophy
- Prakrit & Sanskrit
- Nonviolence and Peace
- Political Science
- Yoga and Science of Living

- English, M.Ed., B.Ed.
- B.A., B.Com, B.Sc.
- Integrated Courses (B.A.-B.Ed. & B.Sc.-B.Ed.)
- Various Diploma & Certificate Courses

Regular and Distance Education

Upcoming Programme : Bachelor of Naturopathy and Yogic Sciences

- Value-based Education with Spiritual Ambience
- Lush Green Campus with Gurukul Environment
- Education for Women Empowerment and Entrepreneurship
- Student Exchange Programme with various National and International Institutions

Highlights :
- Grade 'A' by NAAC, Bangalore
- Category 'A' by Ministry of Education, GoI, New Delhi
- 12B Status by UGC, New Delhi
- India's 10 Best Universities to Watch in 2021 by Education Stalwarts magazine
- "Dr Shri Prakash Dubey Smriti National Philosophy Award" by All India National Philosophy Council.
- 'Best in Class University award' in 2018 at World HRD Congress
- "Best Deemed University in Rajasthan" by Asia Education Summit & Awards, 2018
- Ranked 10th in Top-25 Private/ Deemed Universities in India-2017 by Higher Education Review Magzine
- Recognized in "The 20 Most Admired Universities in India 2017" by The Knowledge Review
- "Jaina Presidential Award" by Federation of Jaina Association of North America
- Presidential award conferred to four faculty members
- 7 World records by the students of Dept. of Yoga and Science of Living
- Smart Classrooms
- Wi-Fi Equipped Safe and Secure Campus
- Rich Placements
- Hostel and Canteen Facility
- Air Conditioned Auditorium
- More than 15 highly Equipped Labs

For more details please visit - www.jvbi.ac.in or Contact Tel. 01581-226110, 224332, 226230

आचार्य महाश्रमण

अनुशास्ता
जैन विश्वभारती संस्थान

अनुशास्ता उवाच

अनासक्ति से क्या मिलेगा ?

प्रश्न किया गया- **अप्पडिबद्धयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ?** भंते! अप्रतिबद्धता से जीव क्या प्राप्त करता है? समाधान दिया गया– **अप्पडिबद्धयाए णं निस्संगत्तं जणयइ। निस्संगत्तेणं जीवे एगे एगग्गचित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ।** अप्रतिबद्धता से वह असंगता को प्राप्त हो जाता है। असंगता के द्वारा जीव अकेला, एकाग्रचित्त वाला, दिन और रात बाह्य संसर्गों को छोड़ता हुआ अप्रतिबद्ध होकर विहार करता है।

आदमी के जीवन में ध्यान देने से यह अनुभव होता है कि कहीं-कहीं प्रतिबद्धता है, आसक्ति है। आसक्ति बन्धन है और अनासक्ति मुक्ति है। व्यक्ति की शरीर के प्रति प्रतिबद्धता और आसक्ति रहती है, क्योंकि सबसे निकट शरीर होता है। साधक यह चिन्तन करे कि मेरा शरीर के प्रति ज्यादा मूर्च्छा का भाव न रहे, ज्यादा आसक्ति का भाव न रहे। वह अन्यत्व भावना का विकास करे अर्थात् मैं (आत्मा) अलग हूं और शरीर अलग है। यद्यपि आत्मा शरीर में है, किन्तु आत्मा का अस्तित्व अलग है और शरीर का अस्तित्व अलग है। जैसे– मिट्टी और सोना प्रारंभिक अवस्था में बिलकुल मिले-जुले रहते हैं परन्तु दोनों का अस्तित्व अलग-अलग है।

हमारी आत्मा सोने के समान है और शरीर मिट्टी के समान है। हमें ज्यादा ध्यान आत्मा पर देना चाहिए। शरीर की भी सार संभाल की जा सकती है। क्योंकि शरीर से हमारा स्वार्थ सिद्ध होता है। **शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्** शरीर धर्म की साधना का मुख्य साधन है। साधना करनी है तो शरीर को टिकाए रखना होगा। यदि शरीर को टिकाए रखना है तो इसकी देखभाल भी करनी होगी। इसे भोजन भी देना होगा, सर्दी-गर्मी आदि से भी इसकी अपेक्षित सुरक्षा करनी होगी। शरीर की सार-संभाल तो की जा सकती है किन्तु उस पर मोह न रहे, आसक्ति का भाव न रहे। वह पदार्थ का भोग करे, किन्तु उसके साथ मेरापन न जुड़े। जब किसी वस्तु पर ममत्त्व हो जाता है, किसी पदार्थ के प्रति प्रतिबद्धता हो जाती है तब साधना में, ध्यान में, स्वाध्याय आदि में कमी आ जाती है और ध्यान बार-बार उसी जगह जाता है, जहां से मोह का कांटा लगा है।

शास्त्रकार ने कहा है कि अप्रतिबद्धता से एकाग्रचित्तता आती है, जिससे ध्यान, साधना, स्वाध्याय आदि में मन एकाग्र होता है। साधक यह चिन्तन करे कि ज्ञान, दर्शन युक्त एक मेरी आत्मा शाश्वत है। शेष जो बाह्य संबंध हैं, वे अनित्य हैं और कभी-न-कभी वे संबंध विसंबंध में बदलने वाले हैं। संयोग वियोग में परिणत होने वाला होता है। जब चेतना परम के साथ जुड़ेगी तब आसक्ति का परित्याग हो सकेगा। साधक अनासक्ति का अभ्यास करे। अभ्यास करते-करते अनासक्ति सिद्ध हो सकती है और वह अप्रतिबद्धता का अनुभव कर सकता है, अप्रतिबद्ध विहारी बन सकता है।

अनुक्रमणिका

01. संपादकीय- नेचुरोपैथी, ज्योतिष, वास्तु, राजस्थानी भाषा आदि क्षेत्रों में भी अहम् भूमिका 05
02. जैविभा विश्वविद्यालय के सदस्यों ने अनुशास्ता आचार्यश्री के दर्शन किए 06
03. 'सशक्त नारी : सशक्त राष्ट्र' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित 08
04. 'आचार्य हरिभद्र सूरि का षड्दर्शन' पर 12 दिवसीय कार्यशाला आयोजित 10
05. वास्तुशास्त्र पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित 12
06. डॉ. लिपि जैन की दो पुस्तकों का विमोचन 13
07. जीतो फाउंडेशन कोलकाता करेगा रिसर्च व अन्य पाठ्यक्रमों पर एमओयू 13
08. एल्युम्नी मीट का आयोजन 14
09. अल्पकालिक व्यावसायिक विकास कार्यशाला में चौरड़िया को मिला 'ए' ग्रेड 14
10. तीन दिवसीय नि:शुल्क निसर्गोपचार शिविर का आयोजन/दो दिवसीय नि:शुल्क नैचुरोपैथी व योग शिविर आयोजित 15
11. भारतीय दार्शनिक दिवस पर राष्ट्रीय समारोह आयोजित 16
12. विद्यार्थियों ने किया राजस्थान विश्वविद्यालय के गांधी अध्ययन केन्द्र का भ्रमण 17
13. गांधी जयंती पर पांच दिवसीय कार्यक्रम 18
14. नवागन्तुक छात्राध्यापिकाओं का स्वागत समारोह 19
15. संस्कृत दिवस समारोह का आयोजन 20
16. जैन स्कॉलर्स कार्यशाला में 17 प्रशिक्षणार्थियों को प्राकृत का प्रशिक्षण 20
17. साईबर सिक्योरिटी पर जागरूकता कार्यक्रम 21
18. तीन दिवसीय सूचना संचार प्रौद्योगिकी कार्यशाला आयोजित 22
19. शिक्षा जागृति प्रसार कार्यक्रम 22
20. पांच दिवसीय सघन साधना शिविर 23
21. अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस का आयोजन 24
22. 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी की प्रासंगिकता' पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित 24
23. मासिक व्याख्यानमाला 25
24. 'भारत का गौरव : प्राकृत भाषा एवं साहित्य' विषयक मासिक व्याख्यानमाला 26
25. छात्राओं के दल ने किया शैक्षणिक भ्रमण 28
26. एमओयू के तहत छह दिवसीय एक्सचेंज प्रोग्राम आयोजित 28
27. एंटी रैगिंग गतिविधियाँ 29
28. 75 दिवसीय भारतीय भाषा उत्सव मनाया 30
29. स्वतंत्रता सेनानियों व शहीदों के सम्मान में प्रदर्शनी व कार्यक्रम आयोजित 31
30. 'मेरी माटी-मेरा देश अभियान' आयोजित 32
31. स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम आयोजित 35
32. राष्ट्रीय एकता दिवस कार्यक्रम श्रृंखला आयोजित 35
33. शिक्षक दिवस पर सम्मान व मनोरंजन का समारोह आयोजित 36
34. बिरसा मुण्डा जयंती पर 'जनजातीय गौरव दिवस' मनाया 37
35. महिला समानता दिवस का आयोजन 38
36. विश्व जनसंख्या दिवस पर कार्यक्रम आयोजित 38
37. पर्युषण पर्व के अंतर्गत सामायिक दिवस पर कार्यक्रम 39
38. शिक्षा समागम के प्रधानमंत्री कार्यक्रम के प्रदर्शन से ली नई शिक्षा नीति की जानकारी 40
39. विकसित भारत निबंध प्रतियोगिता 40
40. छात्राओं ने लघु नाटिका से अंधविश्वास उन्मूलन का दिया सार्थक संदेश 40
41. युवा शक्ति की सहभागिता से सफल हो पायेगा राजस्थान मिशन-2030 41
42. चंद्रयान मिशन-3 का किया अवलोकन 41
43. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी की प्रासंगिकता पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित 42
44. प्रधानमंत्री उद्बोधन 'विकसित भारत 2047 : वॉयस ऑफ यूथ' का लाइव विजय आयोजित 42
45. राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) की गतिविधियां 43
46. दिव्या और पूजा को सीनियर व जूनियर अंडर ऑफिसर रैंक की घोषणा 47
47. एनसीसी के एक दिवसीय शिविर में मैप रीडिंग व राईफल का प्रशिक्षण दिया 47
48. एनसीसी कैडेट्स ने की महात्मा गांधी की प्रतिमा की सफाई 47
49. लाडनूं में आधुनिकतम सुविधाओं से युक्त आचार्य महाप्रज्ञ नेचुरोपैथी चिकित्सा केन्द्र 48
50. भामाशाह बोकड़िया परिवार के आर्थिक सौजन्य से नेचुरोपैथी चिकित्सा पर 50 प्रतिशत की विशेष छूट 49
51. आचार्य जयकीर्ती पुरस्कार से प्रो. जिनेंद्र जैन सम्मानित 50
52. संस्थान की छात्राओं ने राज्य स्तरीय वाद विवाद प्रतियोगिता में हासिल की चल वैजयंती 50
53. प्रो. त्रिपाठी को राजस्थान बाल साहित्य मनीषी सम्मान मिला 50

RNI-RAJBIL/2009/32418

Samvahini

(अर्द्धवार्षिक समाचार पत्र)
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

वर्ष-15, अंक- 2
जुलाई-दिसम्बर, 2023

संरक्षक
प्रो. बच्छराज दूगड़
कुलपति

सम्पादक
प्रो. दामोदर शास्त्री

कम्प्यूटर एण्ड डिजाईन
पवन सैन

प्रकाशक
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ – 341306
जिला- डीडवाना कुचामन (राजस्थान)
दूरभाष : (01581) 226110, 226230
E-mail : jvbiladnun@gmail.com
Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

प्राच्य विधाओं के साथ डिजीटलाईजेशन में निरन्तर प्रगतिमान जैन विश्वभारती संस्थान

नेचुरोपैथी, ज्योतिष, वास्तु, राजस्थानी भाषा आदि क्षेत्रों में भी अहम् भूमिका

जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) पाम्परिक शिक्षा के साथ प्राच्य भारतीय विधाओं ही नहीं, बल्कि नैतिक शिक्षा और संस्कार व चरित्र निर्माण की दिशा में समूचे देश में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाए हुए है। साथ ही आधुनिकता की दौड़ में डिजीटल युग को भी लगातार साधे हुए है। कुलपति प्रो. बच्छराजजी दूगड़ के नेतृत्व में और धार्मिक आचार्यों के अनुशासन में यह संस्थान निरन्तर अपनी विशिष्टता को कायम रखे हुए है, वहीं आचार्यों के पावन मार्गदर्शन में उत्तरोतर नवीन आयाम स्थापित कर रहा है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में आचार्य महाप्रज्ञ चिकित्सा केन्द्र के कारण लोगों में आधुनिक हानिकारक दवाओं के स्थान पर प्राकृतिक व आध्यात्मिक ढंग से अपने उपचार के मार्ग को अपनाने की प्रवृत्ति बढी है। यहां आयोजित शिविरों और रियायती दरों पर उपचार की आधुनिकतम उपकरणों-सुविधाओं की व्यवस्थाओं और सुयोग्य चिकित्सकों व सहायकों की टीम ने लोगों को लाभान्वित भी किया है। जटिल व असाध्य माने जाने वाले कतिपय रोगों का उपचार तक नेचुरोपैथी से संभव हो पाया है। यहां सेरेब्रल पाल्सी, डायबिटीज, उच्च रक्तचाप, हृदयरोगों आदि का समाधान प्रत्यक्ष रूप से संभव हुआ है।

संस्थान के वर्तमान अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी की प्रेरणा से संस्थान निरन्तर चुनौतियों का सामना करता हुआ सफलता से आगे बढ रहा है। आचार्यश्री द्वारा संस्थान को पूर्ण स्वायत्तता से कार्य करने एवं स्वतंत्रतापूर्वक विकास की प्रेरणा देने से यहां के समस्त प्रशासनिक व शैक्षणिक स्टाफ का मनोबल बढा है। उनके संघर्ष द्वारा कठिनाइयों पर विजय पाने के मंत्र को सबने अंगीकार किया है। यहां नेचुरोपैथी के अलावा ज्योतिष व वास्तु शास्त्र में भी पाठ्यक्रमों की शुरूआत की जा चुकी है। क्लासिकल म्यूजिक पर अलग से विभाग स्थापित किए जाने की प्रक्रिया चल रही है। संस्थान जैन विद्या, धर्म व दर्शन, योग एवं जीवन विज्ञान, प्राकृत व संस्कृत भाषाओं आदि में लगातार उच्च शिक्षा और शोध को बढावा देता रहा है। इन विषयों में यहां पीएचडी करने वालों की संख्या भी अच्छी रही है। राजस्थानी भाषा एवं साहित्य केन्द्र की यहां स्थापना की जाकर काम शुरू किया जा चुका है। संस्थान के प्रथम अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी का लगाव सदा से ही राजस्थानी भाषा के प्रचार-प्रसार और उचित दर्जा दिए जाने का रहा था। ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में संस्थान उत्तरोत्तर अपने कदम बढाता जा रहा है।

संस्थान की डिजीटल एक्टीविटीज भी निरन्तर प्रगति पर है। संस्थान की वेबसाइट लगातार अपडेट रहती है। इस वेबसाइट पर स्वतंत्र स्रोत के रूप में 800 से अधिक वीडियो लेक्चर उपलब्ध हैं। वर्द्धमान ग्रंथागार के रूप में संस्थान का केन्द्रीय पुस्तकालय इस समूचे क्षेत्र का सबसे बड़ा पुस्तकागार है। यहां सभी विषयों पर प्राचीन व अर्वाचीन समस्त प्रकार के ग्रंथ, पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएं और जर्नल आदि उपलब्ध हैं। इस लाईब्रेरी की पुस्तकों का डिजीलाईजेशन किया जा रहा है। यहां पांडुलिपि संरक्षण केन्द्र भी बना हुआ है और उसमें संरक्षित दुर्लभ प्राचीन हस्तलिखित व स्वर्णाक्षरों युक्त पांडुलिपियों का भी डिजीलाईजेशन किया जा रहा है। संस्थान की शोध पत्रिका 'तुलसी प्रज्ञा' एवं संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'संवाहिनी' का प्रकाशन निरन्तर एवं नियमित रूप से किया जा रहा है।

इंडियन कौंसिल आफ फिलोसोफिकल रिसर्च (आईसीपीआर) यहां विश्व दर्शन दिवस और भारतीय दर्शन दिवस के अवसर पर संस्थान के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय स्तर के समारोह का आयोजन करवाती है। इंडियन कौंसिल आफ सोशल साईंस रिसर्च द्वारा भी यहां राष्ट्रीय स्तर के आयोजन करवाए जाते हैं। इसी तरह से विभिन्न विश्वविद्यालयों आदि संस्थानों के साथ जैविभा विश्वविद्यालय का एमओयू और एक्सचेंज प्रोग्राम लगातार चलते रहते हैं। संस्थान के प्रोफेसर्स, व्याख्याताओं के लेक्चर्स देश के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में, सामाजिक संस्थाओं आदि द्वारा आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों, समारोहों आदि में प्रस्तुत किए जाते हैं। यहां का स्टाफ राष्ट्रपति से लेकर केन्द्र व राज्य स्तर पर सरकारी व गैरसरकारी संगठनों द्वारा निरन्तर सम्मान भी प्राप्त करते रहे हैं। यहां के विद्यार्थी भी राष्ट्रीय स्तर तक की भागीदारी एवं सम्मान प्राप्त करके संस्थान का परचम फहराते रहे हैं। यहां विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने के लिए पूर्ण रूप से तैयार किया जाता है। संस्थान कुलपति प्रो. बच्छराजजी दूगड़ के नेतृत्व व मार्गदर्शन में हर क्षेत्र में निरन्तर आगे बढ रहा है और उपलब्धियां हासिल करके गर्वोन्नत है।

– जगदीश यायावर (अतिथि सम्पादक)

चुनौतियों का मुकाबला साहस व बुद्धिमत्ता पूर्वक करने पर निश्चित सफलता- आचार्यश्री महाश्रमण

जैविभा विश्वविद्यालय के सदस्यों ने अनुशास्ता आचार्यश्री के दर्शन किए

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा है कि विकास के पथ पर समस्याएं सामने आती ही हैं, लेकिन उनका मुकाबला साहस और बुद्धिमत्ता से किया जाए तो सफलता अवश्य मिलती है। चुनौतियों से ही संभावनाएं जन्म लेती हैं। उन्होंने जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि मंडल से 22-23 नवम्बर को भेंट के दौरान सम्बोधित करते हुए संस्थान की प्रगति का विवरण जाना और संतोष व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि संस्थान आचार्य तुलसी के स्वप्नों को मूर्तिमान कर रहा है। उन्होंने संस्थान के संचालन में पूर्ण स्वायत्तता रखे जाने की ओर इंगित करते हुए कहा कि उन्हें स्वतंत्रतापूर्वक विकास के लिए कार्य करना चाहिए। इसमें कठिनाइयां आएंगी, लेकिन संघर्ष से उन पर विजय पाई जा सकती है। लाडनूं से अनुशास्ता आचार्य के दर्शन करने के लिए संस्थान के सदस्यों का दो दिनों का मुम्बई प्रवास रहा।

जटिल रोगों के इलाज में सफल रहा प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उन्हें संस्थान की विविध क्षेत्रों में हुई प्रगति की जानकारी दी और विभिन्न क्षेत्रों में मिली सफलताओं व शोध आदि के बारे में बताते हुए संस्थान की वेबसाईट पर 800 से अधिक वीडियो लैक्चर उपलब्ध होने, संस्थान में राजस्थानी भाषा एवं साहित्य केन्द्र की स्थापना की जाने, ज्योतिष व वास्तुशास्त्र के अध्ययन के लिए पाठ्यक्रमों की शुरूआत की जाने, राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताओं और राष्ट्रीय मानकों के संस्थापन के बारे में भी विवरण प्रस्तुत किया। प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र की चिकित्सा अधिकारी डॉ. श्रेया त्रिपाठी ने चिकित्सा केन्द्र पर उपलब्ध सुविधाओं, संसाधनों आदि की जानकारी देते हुए बताया कि पिछले तीन माह में सेरेब्रल पाल्सी, डायबीटीज आदि के जीर्ण रोगों के इलाज में उन्हें सफलता

मिली है। पोषण विशेषज्ञा श्रेया सिन्हा ने डायबीटीज मरीजों के लिए केन्द्र द्वारा तैयार पोषण सप्लीमेंट्स के बारे में बताया। प्राकृत एवं जैन विद्या के विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेन्द्र जैन ने शोध एवं शिक्षण गतिविधियों के बारे में बताया।

राजस्थान सरकार की प्राकृत अकादमी द्वारा प्रदत्त सहायता का उल्लेख भी उन्होंने किया और राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित संगोष्ठियों आदि की जानकारी भी प्रदान की। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने विभिन्न गतिविधियों, सफलताओं एवं बहुआयामी विस्तार के बारे में जानकारी दी।

विश्वविद्यालय के कीर्तिमान व उपलब्धियां बताई

विशेषाधिकारी प्रो. नलिन के. शास्त्री ने विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में लगातार बनाए जा रहे कीर्तिमानों एवं उपलब्धियों के बारे में बताते हुए नई शिक्षा नीति की जानकारी एवं उसको लागू करने एवं चुनौतियों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने विश्वविद्यालय का बहुविषयक स्वरूप बनाने, नामांकन अनुपात बढाने, ज्ञान की विविध शाखाओं में नवाचार प्रवर्तन से उत्कृष्टता प्राप्त करने, विज्ञान, इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी, खेल और अन्य विषयों का प्राध्यापन, स्टार्ट-अप इन्क्यूबेशन केन्द्र स्थापित करने, उद्योगों में विद्यार्थियों की इंटर्नशिप अनिवार्य करने, एकेडेमिक बैंक का गठन आदि के बारे में बताया। इस अवसर पर केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी के पूर्व कुलपति प्रो. संजीव शर्मा, साईकोलोजिस्ट प्रो. ए.के. मलिक, राजस्थान सरकार की हायर एजुकेशन सोसायटी के सदस्य प्रो. संजय लोढा, प्रो. सुषमा सिंघवी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। बाद में सबने साध्वी वर्याजी के दर्शन भी किए तथा उन्हें भी संस्थान की गतिविधियों एवं आचार्य महाप्रज्ञ प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र की प्रगति और सफलताओं के बारे में जानकारी प्रदान की। महिला मंडल सदस्यों को साध्वी वर्याजी ने दूरस्थशिक्षा के पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने की प्रेरणा प्रदान की और कहा कि सामाजिक सशक्तीकरण के लिए इन पाठ्यक्रमों की उपयोगिता है।

‘सशक्त नारी:सशक्त राष्ट्र’ विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित

‘ये कैसी तस्वीर बनाई है हमने, सिर पर ताज और पैरों में जंजीर बनाई है हमने’– कुलपति प्रो. सुधि राजीव

संस्थान में जैनोलोजी व प्राकृत एवं संस्कृत विभागों के संयुक्त तत्त्वावधान में इंडियन कौंसिल फोर सोशियल साईंस रिसर्च के प्रायोजन में ‘सशक्त नारीः सशक्त राष्ट्र’ विषय पर 30 नवम्बर और 1 दिसम्बर को दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि हरिदेव जोशी पत्रकारिता एवं जन संचार विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुधि राजीव ने देश में महिलाओं की स्थिति का सटीक चित्रण करते हुए कहा है, ‘ये कैसी तस्वीर बनाई है हमने, सिर पर ताज और पैरों में जंजीर बनाई है हमने।’ उन्होंने कहा कि महिला जब सशक्त होगी और उसकी समानता की सोच होगी तो निश्चित ही राष्ट्र भी सशक्त बनेगा। जो महिला परिवार की धुरी होती है, उसे समाज और राष्ट्र की भी धुरी बनाया जा सकता है। उन्होंने आचार्य तुलसी के महिला उत्थान के कार्यों का उल्लेख भी किया और आचार्य महाप्रज्ञ के महिलाओं के महत्त्व सम्बंधी उद्धरण प्रस्तुत किए। प्रो. सुधि ने महिलाओं की राजनीतिक भूमिका के बारे में बताते हुए कहा कि उन्होंने राजनीति को संवेदनशीलता प्रदान की है। महिलाएं सकारात्मक बदलाव लाने में सक्षम होती हैं।

महिलाएं अपने गुणों से विशिष्ट बनती हैं

राष्ट्रीय सेमिनार की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने सामाजिक बदलाव की आवश्यकता बताते हुए कहा कि देश में अभी भी महिलाओं की स्थिति कोई अच्छी नहीं है। महिलाओं में उन्होंने अनेक विशेषताएं बताते हुए कहा कि कार्यनिष्ठा, समयबद्धता, भावनाओं की परख और दृढ़ता के गुण उसे विशेष बनाते हैं। इसी कारण अनेक प्रतिष्ठित संस्थान अपने कार्मिकों में महिलाओं को रखना पसंद करते हैं। उन्होंने राष्ट्र के लिए अपना अभूतपूर्व योगदान करने वाली महिलाओं- झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, प्रधानमंत्री रही इंदिरा गांधी और अंतरिक्ष में जाने वाली कल्पना चावला के उदाहरण देते हुए कहा कि महिलाएं हर क्षेत्र में अग्रणी हैं। महिलाओं को उनकी मजबूरियों से मुक्त करना होगा और उन्हें सशक्त बनाना होगा। महिलाओं के सशक्त होने से निश्चित ही राष्ट्र सशक्त बनेगा।

महिला दबी हुई व कुंठित नहीं होनी चाहिए

विशिष्ट अतिथि राजस्थान प्राकृत भाषा एवं साहित्य अकादमी के अध्यक्ष प्रो. धर्मचंद जैन ने कहा कि अर्थ-सम्पन्न, आयुध-सम्पन्न शक्तिशाली, मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ, शुद्ध व संरक्षित पर्यावरण, भ्रष्टाचार रहित, नैतिक व चरित्र युक्त राष्ट्र, आत्मनिर्भर राष्ट्र इन सभी गुणों से सम्पन्न देश को ही सशक्त राष्ट्र कहा जा सकता है। इस उपलब्धि में महिला व पुरूष दोनों का ही योगदान रहता है। दोनों प्रकृति की देन हैं और दोनों से ही जगत का संचालन संभव है। स्त्री को कुंठित और दबी हुई नहीं होना चाहिए, इसी कारण उसे ऊंचा उठाने की बात कही जाती है। नारी शक्ति वंदन अधिनियम द्वारा उसे 33 प्रतिशत आरक्षण देकर सबल बनाने का प्रयास हुआ है। नारी के लिए चरित्रनिष्ठा, स्वतंत्रता, निर्भयता, विवेकशक्ति सम्पन्नता, आत्मनिर्भर होना, सीखने की प्रवृत्ति, संतुलन व समन्वयवादिता, सहिष्णुता आदि गुणों की आवश्यकता रहती है। इनके आने से ही वह सशक्त नारी बन पाएगी और राष्ट्र के लिए भी अपना योगदान देकर सशक्त राष्ट्र निर्मित कर पाएगी। कार्यक्रम का प्रारम्भ संरस्वती पूजन से किया

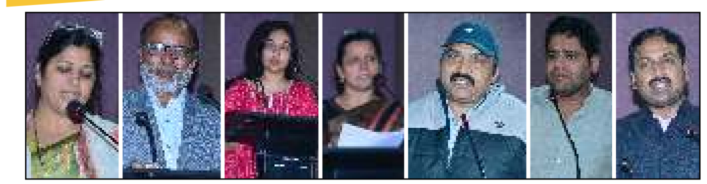

गया। मुमुक्षु शैफाली ने प्रारम्भ में मंगलगान प्रस्तुत किया। जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया और सेमिनार की विषयवस्तु सबके सामने रखी। प्राकृत व संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने अतिथि परिचय प्रस्तुत किया। अंत में डॉ. रामदेव साहू ने आभार ज्ञापित किया।

विश्वविद्यालयों में हो महिला सशक्तिकरण पर नीतिगत काम

राष्ट्रीय सेमिनार के समापन समारोह की मुख्य अतिथि ‘युनिवर्सिटी न्यूज’ की सम्पादक एवं विदुषी डॉ. एस. रमादेवी पाणि ने नारी की समस्याओं और लक्ष्य को इंगित करते हुए कहा कि देश भर में 1100 विश्वविद्यालय हैं, उनमें महिला कुलपतियों की संख्या मात्र 7 प्रतिशत ही है। विश्वविद्यालय महिला सशक्तीकरण के नीतिगत विषय पर काम किया जाए, तो समस्याओं का समाधान संभव है। उन्होंने कहा कि हमारे देश में सभी तरह की नीतियां मौजूद हैं, लेकिन वे पूर्ण रूप से अभ्यास में नहीं आ पाती हैं। विश्वविद्यालयों को सामाजिक सरोकारों से जुड़ना चाहिए। विश्वविद्यालय अगर अच्छा काम करें, तो विभिन्न वैश्विक समस्याओं को दूर किया जा सकता है। अध्यापन, शोध और समुदाय से सम्बद्धता प्रत्येक विश्वविद्यालय के लिए आवश्यक है। सामाजिक बदलाव के लिए आवश्यक है कि पाठ्यपुस्तकों में लैंगिक समानता सम्बंधी विषयों का ध्यान रखा जाए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालयों में ‘वीमेन स्टडी सेंटर’ संचालित किए जाते हैं, मगर वे भी महिलाओं की समस्याओं के समाधान कर पाने में सफल नहीं रहे हैं। भारत उच्च शिक्षा में विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश है। अगर यह समानता पर काम करे तो महिलाएं भी सशक्त बनेंगी और राष्ट्र भी सशक्त हो पाएगा।

सशक्त व समर्थ भारत के लिए महिलाओं की सशक्ति आवश्यक

अध्यक्षता करते हुए प्रो. नलिन के. शास्त्री ने कहा कि सशक्त व समर्थ भारत बनाने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना आवश्यक है। आचार्यश्री तुलसी ने नारी के गरिमामय जीवन व मानवीय जीवन व्यवहार के क्षेत्र में बहुत काम किया था और उन्हीं के स्वप्न के आधार पर बना जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय महिला क्षेत्र में बहुत कार्य कर रहा है। उन्होंने बताया कि अध्यात्म नारी को सुरक्षा प्रदान करता है और उसे सबलता व आत्मसम्मान प्रदान करता है। जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने शक्ति, सम्पदा व शिक्षा को सबके लिए महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा कि इन तीनों की अधिष्ठात्री देवियों के रूप में नारी ही है, जिन्हें दुर्गा, लक्ष्मी व सरस्वती के रूप में हम मानते आए हैं। उन्होंने महिलाओं से अपेक्षा की कि वे अपनी शक्तियों को पहचानें और देश को सशक्त बनाने में अपना योगदान दें। प्राकृत व संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेन्द्र जैन ने दो दिवसीय संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा कहा कि इस राष्ट्रीय सेमिनार में विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत शोधपत्रों का पुस्तकाकार रूप में प्रकाशन करवाया जाएगा। इस अवसर पर सम्भागी प्रो. हामिद अंसारी इंदौर व डॉ. पिंकी कोटा ने अपने अनुभव साझा किए। अतिथि परिचय प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रस्तुत किया। अंत में डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

45 शोधपत्रों का वाचन

इस दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार में कुछ छह सत्र आयोजित किए गए, जिनमें देश भर से आए विभिन्न विद्वानों ने 45 शोधपत्र प्रस्तुत किए। प्रो. धर्मचंद जैन जयपुर, डॉ. रिंकी कोटा, डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह जयपुर, डॉ. सुन्दर शांडिल्य जयपुर, डॉ. तारावती मीना, डॉ. रामकिशोर यादव जयपुर, डॉ. ज्योतिबाबू जैन उदयपुर, डॉ. सुमत कुमार जैन, डॉ. कृष्णमोहन जोशी उदयपुर, डॉ. जसवंतसिंह चौधरी, नवीन कुमार जोशी, डॉ. तबस्सुम चौधरी अलीगढ, डॉ. रितिक जादौन अलीगढ, असलम अलीगढ, प्रो. हदीस अंसारी इंदोर, रेखा बडाला, नीलम जैन उदयपुर, प्रो. दामोदर शास्त्री, डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा, डॉ. सब्यसाची सारंगी, डॉ. सुनीता इंदौरिया, डॉ. रामदेव साहू, डॉ. घनश्यामनाथ कच्छावा, डॉ. जिनेन्द्र कुमार जैन, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज, अभिषेक चारण, डॉ. मनीषा जैन, डॉ. प्रेयस सोनी, प्रो. समणी कसुम प्रज्ञा, प्रो. बी.एल. जैन, डॉ. अमिता जैन, वर्षा जैन, गौतमचंद जैन, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, डॉ. आभासिंह, महेन्द्र सिंह, डॉ. वीरेन्द्र भाटी आदि विद्वानों ने सेमिनार में स्वतंत्रता संग्राम में महिलाएं, पर्यावरण संरक्षण में योगदान, स्त्री पत्रकारिता, राजस्थानी, उर्दू व हिन्दी साहित्य में महिलाओं का योगदान, सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति आदि विभिन्न महिला-केन्द्रित विषयों पर पत्र-वाचन किए गए।

12 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

पश्चिम का व्यक्ति-केन्द्रित दर्शन है और भारतीय परम्परा में विचार-केन्द्रित दर्शन- प्रो. मिश्रा

'आचार्य हरिभद्र सूरि का षड्दर्शन' पर 12 दिवसीय कार्यशाला आयोजित

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् (इंडियन कौंसिल आफ फिलोसोफिकल रिसर्च) नई दिल्ली के प्रायोजन में संस्थान के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के तत्त्वावधान में महाश्रमण ऑडिटोरियम में आयोजित 'आचार्य हरिभद्र सूरि का षड्दर्शन समुच्चय' विषयक 12 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला (1 से 12 अगस्त) के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि इंडियन कौंसिल आफ फिलोसोफिकल रिसर्च के सचिव प्रो. सच्चिदानन्द मिश्रा ने कहा कि विश्व को देखने का मोड अलग-अलग होता है और इसी कारण दर्शनों की विविधता भी जरूरी है। सब दर्शन एक ही मॉडल या मानक पर नहीं हो सकते, सबके मोडल अलग होने से दर्शनों की विविधता होती है, जो जरूरी है। भारत में अलग-अलग दर्शन होने के बावजूद सब सुसंगत हैं। यहां अनेकान्त और स्याद्वाद की अवधारणा ने इस विविधता के बारे में व्यवस्थित राय दी है। उन्होंने बताया कि व्यक्ति एक बार में किसी का एक भाग ही देख सकता है। कोई कितना ही प्रयास करे, सबके दृष्टिकोण अलग ही होंगे। सब कोई खास दृष्टिकोण, खास विचारधारा को लेकर चलता है। परन्तु इस खास विचारधारा को परिष्कृत किया जा सकता है और परिवर्तित किया जा सकता है।

विचार-केन्द्रित हैं भारतीय दर्शन

प्रो. मिश्रा ने बताया कि पश्चिमी देशों ने भारतीय दर्शनों को खारिज किया और भारतीय दर्शन को स्वतंत्र चिन्तन के बजाए धर्ममूलक बताया, जबकि भारत में धर्म को कभी एक दृष्टि से नहीं देखा गया। यहां ईश्वर की अवधारणा के बिना भी धर्म मौजूद है। बौद्ध धर्म और जैन धर्म ऐसे ही हैं, जबकि पश्चिम में सेकुलर को और नास्तिकता को दर्शन माना गया है। भारतीय दर्शन के तीन मिथक माने गए हैं, जिनमें मोक्ष की अवधारणा भी शामिल है। बौद्ध धर्म को अद्भुत बताते हुए उन्होंने बताया कि वह आत्मा को भी नहीं मानता, जबकि परलोक और पुनर्जन्म को स्वीकार करता है। आचार्य हरिभद्र सूरि के 'षड्दर्शन समुच्चय' के दृष्टिकोण में दर्शनों पर लगे आरोपों का समाधान है। यहां कोई भी दर्शन किसी व्यक्ति का दर्शन नहीं है, बल्कि अनेक व्यक्तियों का दर्शन हैं। पश्चिम में व्यक्ति-केन्द्रित दर्शन है और भारतीय परम्परा में विचार-केन्द्रित दर्शन हैं। हमें अपूर्ण दृष्टि से परे रह कर समग्र दर्शन को देखना चाहिए। सबकी दृष्टि अलग-अलग होती है, लेकिन सबका समन्वय संभव है।

सभी समस्याओं का समाधान है भारतीय दर्शन में

इस द्विसाप्ताहिक कार्यशाला के विशिष्ट अतिथि जीएसटी के पूर्व चीफ कमिश्नर अनिल कुमार जैन (आईआरएस) ने कहा कि भारतीय दर्शन में निहित प्राचीन दार्शनिक मूल्यों की आवश्यकता इस युग में अधिक बढ गई है। इस दर्शन की छोटी-छोटी बातें भी जीवन में उतारे जाने के लिए उपयोगी हैं। उन्होंने जैन धर्म और भारतीय दर्शन के सिद्धांतों अहिंसा, सत्य, अनेकांत, अपरिग्रह, क्षमा, जिओ और जीने दो, शाकाहार, पर्यावरण आदि का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उनकी वर्तमान में आवश्यकता बताई। वसुधैव कुटुम्बकम्, यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान आदि

सूत्रों को उन्होंने भारतीय दर्शन की विशेषता बताते हुए कहा कि भारतीय दर्शन में समस्त समस्याओं का समाधान छिपा है, केवल उन्हें खोजने और अपनाने की जरूरत है।

दर्शन पर शोध को आगे बढाना जरूरी

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कार्यशाला के शुभारम्भ समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि भारतीय दर्शन का सम्बंध जीवन से जुड़ा है, यह जीवन-दर्शन है। उन्होंने बताया कि दार्शनिक ऊहापोह के बिना मस्तिष्क उर्वरक नहीं हो सकता है। दर्शन का उपयोग हमारे दैनन्दिन जीवन में होता है, लेकिन उसका दार्शनिक उपयोग नहीं होता। आज पूरे विश्व में जैन दर्शन के संयम, अल्पीकरण, अनेकान्त, उपवास आदि की चर्चा है। इन पर पूरा विश्व चलने लगा है। हमें दर्शन पर शोध को आगे बढाना चाहिए, इसमें आए अवरोधों को रोकना होगा। प्रो. दूगड़ ने बताया कि हरिभद्र सूरि ने षड्दर्शन समुच्चय में न्याय, वैशेषिक, सांख्य, जैमिनी आदि दर्शनों का प्रतिपादन जैन दर्शन की तुलना में किया है। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंगलाचरण से किया गया। प्रारम्भ में जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने स्वागत वक्तव्य व कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि जहां विचारों की स्वतंत्रता होती है, वहां विचारों का विकास होता है। उन्होंने सत्य को एक बताया और कहा कि दर्शन अनेक हैं, लेकिन उन सबका लक्ष्य एक ही है। इससे पूर्व अतिथियों का परिचय कार्यशाला समन्वयक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रस्तुत किया। अंत में कोर्डीनेटर डॉ. समणी अमलप्रज्ञा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यशाला में भाग ले रहे देश के विभिन्न भागों से आए विद्वान, शोधार्थी एवं अन्य सहभागी इस अवसर पर मौजूद रहे।

सांख्य दर्शन में सम्यक् ज्ञान और 25 तत्वों का खेल बताया गया है

कार्यशाला में प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय दर्शनों में सांख्य दर्शन अत्यंत प्राचीन दर्शन है, जिसका उल्लेख श्रुतियों, स्मृतियों, पुराणों, महाभारत, गीता आदि में मिलता है। इसके प्रवर्तक महर्षि कपिल हैं। इनकी कृति तत्त्व-समास और सांख्य-सूत्र है। वर्तमान समय में ईश्वर कृष्ण रचित सांख्यकारिका से सांख्य दर्शन का अध्ययन और अध्यापन होता है। आचार्य हरीभद्र सूरी रचित षड्दर्शन समुच्चय में 11 श्लोकों में सांख्य दर्शन की व्याख्या हुई है। सांख्य दर्शन में सांख्य शब्द की सार्थकता संख्या और ज्ञान से है। संख्या से तात्पर्य सांख्य दर्शन 25 तत्वों का एक खेल है। सम्यक् ख्यानम् से सांख्य का एक अर्थ सम्यक ज्ञान से भी है। सम्यक ज्ञान से तात्पर्य व्यक्त, अव्यक्त प्रकृति और पुरुष के ज्ञान से है। प्रो. त्रिपाठी ने बताया कि सांख्य दर्शन को द्वैतवादी इसलिए माना गया है कि इसमें प्रकृति और पुरुष जैसे दो नित्य शाश्वत और स्वतंत्र तत्त्व स्वीकार किए गए हैं। दोनों तत्त्व विरोधी होते हुए भी अंधे और लंगड़े की तरह एक दूसरे के सहयोगी भी हैं। दोनों के संबंध से ही विकासवाद की शुरुआत होती है। प्रकृति से महत्, महत् से अहंकार, अहंकार से 11 इंद्रियां और पंच तन्मात्र तथा पंच तन्मात्र से पंचमहाभूत की उत्पत्ति होती है। सांख्य का विकासवाद यंत्रवत न होकर प्रयोजनमूलक है, क्योंकि इस विकास में प्रकृति तत्त्व का प्रयोजन अपने स्वरूप को दिखाना तथा पुरुष का उद्देश्य अपने को मुक्त करना है। इन्हीं दोनों उद्देश्य से विरोधी इन दो तत्वों में आपस में संबंध होता है और सृष्टि की अभिव्यक्ति होती है। सत्र का संयोजन मनीष जैन ने किया तथा आभार ज्ञापन पवित्र जैन ने किया।

प्राचीन भारतीय दर्शन की गुत्थियों को सुलझाने में लगे प्रमुख विद्वान

कार्यशाला में देश भर से प्रमुख विद्वान सम्मिलित हुए और सभी ने विषय से सम्बंधित उप विषयों पर अपने व्याख्यान प्रस्तुत करके और प्राचीन भारतीय दर्शनों के गूढ़ रहस्यों की गुत्थियों को सुलझाने के प्रयास किया। कार्यशाला में संस्थान के प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी द्वारा 'षड्दर्शनसमुच्चय एवं आचार्य हरिभद्रसूरि का परिचय' पर, प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा द्वारा 'जैन दर्शन का वैशिष्ट्य' विषय पर, दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. ओमनाथ बिमली द्वारा 'मीमांसक मत' पर, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के जैन-बौद्ध दर्शन

विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अशोक कुमार जैन द्वारा 'जैन मत' पर, संस्थान के ही प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री द्वारा 'वैशेषिक मत' पर, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. धर्मचंद जैन द्वारा 'मीमांसक मत' पर और संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेंद्र जैन के 'हरिभद्रसूरि का प्राकृत साहित्य को योगदान' विषय पर व्याख्यान प्रदान किए गए। कार्यशाला में विभिन्न राज्यों से कुल 36 प्रतिभागियों ने भाग लिया। साथ ही स्थानीय परमार्थिक शिक्षण संस्थान से 15 मुमुक्षु बहनों ने भी कार्यशाला में गंभीर अध्ययन का लाभ लिया। इस राष्ट्रीय कार्यशाला के आयोजन में जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष एवं कार्यशाला-निदेशक प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा, कार्यशाला-समन्वयक समणी नियोजिका डॉ. समणी अमलप्रज्ञा तथा कार्यशाला के संयोजक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने पूरा योगदान किया।

वास्तुशास्त्र पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

वास्तु शास्त्र सैद्धान्तिक होने के साथ ही प्रायोगिक विज्ञान है- कुलपति प्रो. दूगड़

संस्थान के जैन धर्म एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग और अखिल भारतीय ज्योतिष शोध संस्थान जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 'वास्तुशास्त्र : समस्या एवं समाधान' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन 22 सितम्बर को किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने बताया कि वास्तुशास्त्र समस्या के साथ समाधान भी प्रस्तुत करता है, लेकिन यह भी देखा गया है कि जो सिद्धांत वास्तु शास्त्र प्रतिपादित करता है, समय के साथ-साथ सही और गलत सिद्ध होते रहते हैं। उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि वास्तु शास्त्र एक तरह का विज्ञान है, जो सैद्धान्तिक होने के साथ ही प्रायोगिक भी है। ज्योतिष विषय भारत की 14 विद्याओं में समाहित है, लेकिन आज की पीढी इस ओर ध्यान नहीं दे रही है। उन्होंने वास्तुशास्त्र को स्थापत्य कला से सम्बंधित बताते हुए कहा कि यह भवन-निर्माण आदि पद्धतियों और नियमों को बताता है। कार्यशाला के मुख्य वक्ता रामदेव साहू जयपुर ने वास्तु शास्त्र में वर्णित भवन निर्माण एवं भूमि के विषय में उल्लेखित सिद्धांतों के बारे में बताया। अखिल भारतीय ज्योतिष शोध संस्थान जयपुर के संस्थापक अध्यक्ष पं. चन्द्रशेखर शर्मा ने कार्यशाला में अपने वक्तव्य में वास्तुशास्त्र को आज के युग में प्रासंगिक बताते हुए इसकी महत्ता बताई। संयोजक डॉ. रवि शर्मा ने कार्यशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

देशभर से समागत 54 विद्वानों ने लिया भाग

कार्यशाला का प्रारम्भ सरस्वती अर्चना एवं डॉ. सब्यसाची सारंगी के मंगलाचरण से किया गया। प्रारम्भ में स्वागत वक्तव्य प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने प्रस्तुत किया। अंत में दूरस्थ एवं ऑनलाईन शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने आभार ज्ञापित किया। कार्यशाला का संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। राष्ट्रीय कार्यशाला में देश भर से आए 54 प्रतिभागियों व विषय विशेषज्ञों ने वास्तुशास्त्र के सिद्धांतों पर खुलकर चर्चा की। कार्यशाला के निष्कर्ष के रूप में वास्तुशास्त्र पर अभी अधिक शोध कार्य की आवश्यकता महसूस की गई। कार्यशाला के समापन पर सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्रों का वितरण किया गया।

ज्ञातव्य रहे कि जैन विश्वभारती संस्थान में नियमित व दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत 'वास्तु शास्त्र' पर प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा है। यह पाठ्यक्रम जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा एवं संयोजिका डॉ. अमल प्रज्ञा के नेतृत्व में संयोजित किया गया है।

आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में हुआ डॉ. लिपि जैन की दो पुस्तकों का विमोचन

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग की सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन कृत दो पुस्तकों का विमोचन 23 नवम्बर को आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा किया गया। संस्थान के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के मुम्बई प्रवास के दौरान संस्थान से उनके दर्शनार्थ गए प्रतिनिधिमंडल से उनसे भेंट के दौरान यह पुस्तक विमोचन किया गया। उन्होंने इस पुस्तकों की प्रशंसा करते हुए अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर 'भारतीय लोकतंत्र और राजनीति' एवं 'कंफ्लिक्ट रिजोल्युशन एंड पीस टेक्नोलोजी' शीर्षक की इन दोनों पुस्तकों की विषयवस्तु की जानकारी देते हुए डॉ. लिपि ने बताया कि 'भारतीय लोकतंत्र और राजनीति' पुस्तक का उद्दीपन भारतीय समाज, सांस्कृतिक विविधता और लोकतन्त्र के अद्भुत सिद्धांतों पर हुआ है, जिसमें भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के विकास क्रम को स्पष्ट करते हुए भारतीय संस्कृति और विविधता को बढ़ावा देने वाले कदमों की चर्चा की गई है। लोकतंत्र की विकास यात्रा में लैंगिक समानता, शासन सत्ता में जन सहभागिता की वृद्धि, सतत् विकास की प्रक्रिया को बढ़ावा, स्वस्थ शासन व्यवस्था, नीतियों के प्रभावक तत्त्व सकारात्मक विकास के आधार माने जा सकते हैं, इन्हें भी पुस्तक की विषय-वस्तु में शामिल किया गया है। पुस्तक के माध्यम से देश को विश्वपटल पर अग्रणी बनाने वाले भारत की समृद्धि और लोकतंत्र के अनगिनत पहलुओं को जाना जा सकेगा।

उन्होंने अपनी दूसरी पुस्तक 'Conflict Resolution and Peace Technology' (संघर्ष समाधान और शांति की प्रौद्योगिकी) के बारे में बताया कि इसमें आधुनिक समाज में विघटनकारी गंभीर समस्या तनाव और संघर्ष की स्थिति में संघर्षों का सामना करते हुए सामंजस्यपूर्ण और शांतिमय समाज की ओर कदम बढ़ा सकने के बारे में जानकारी दी गई है। पुस्तक में संघर्षों की उपादेयता तथा इससे जनित वैश्विक शांति के खतरों को भी दर्शाया गया है। संघर्ष निराकरण के लिए उद्भूत अनेक संधियों तथा संस्थाओं के साथ संघर्ष निराकरण की गांधी और जैन दृष्टि को भी बताया गया है। शांति-शिक्षा, शिक्षा में मूल्यों का समावेश तथा हृदय परिवर्तन जैसे बिंदुओं के साथ अनेक शांतिदूतों को भी इस पुस्तक में सम्मिलित किया गया है। अणुव्रत आंदोलन के साथ विभिन्न राष्ट्रीय आंदोलनों को समाहित करते हुए यह पुस्तक शांति के विभिन्न आयामों को प्राप्त करने की दिशा में एक छोटा सा प्रयास है।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, विशेषाधिकारी प्रो. नलिन के. शास्त्री एवं संस्थान के प्रतिनिधियों के अलावा केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी के पूर्व कुलपति प्रो. संजीव शर्मा, साईकोलोजिस्ट प्रो. एके मल्लिक, राजस्थान सरकार की हायर एजुकेशन सोसायटी के सदस्य प्रो. संजय लोढा, प्रो. सुषमा सिंघवी आदि भी उपस्थित रहे।

जीतो फाउंडेशन कोलकाता करेगा रिसर्च व अन्य पाठ्यक्रमों पर एमओयू

जीतो एडमिनिस्ट्रेटिव एंड ट्रेनिंग फाउंडेशन कोलकाता के चैयरमेन एवं मालावी के मानद सलाहकार विनोद दूगड़ एवं जीतो के निदेशक भावेन कामदार ने जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय के साथ एम.ओ.यू. करने एवं संस्थान के संरक्षक बनने की इच्छा व्यक्त की है। उनका संस्थान में पहुंचने पर 11 दिसम्बर को भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ द्वारा उन्हें संस्थान की विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी दी गई। उन्होंने संस्थान द्वारा संचालित आचार्य महाप्रज्ञ प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र का अवलोकन किया और व्यवस्थाओं, सुविधाओं, आधुनिक मशीनों आदि को देखकर वे अभिभूत हुए। इस बारे में उन्होंने अपनी अनेक जिज्ञासाएं भी व्यक्त की, जिनके बारे में नेचुरोपैथी चिकित्सकों ने उन्हें पूरी जानकारी दी। दोनों को संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने संस्थान के पाठ्यक्रमों, कार्यक्रमों, गतिविधियों के बारे में उन्हें अवगत करवाया। यहां संचालित विभिन्न स्किल बेस्ड पाठ्यक्रमों एवं अन्य शैक्षिक गतिविधियों से प्रभावित होकर उन्होंने एम.ओ.यू. करने की बात कही।

श्रीमान् दूगड़ व कामदार ने शोध कार्य को महत्त्व देते हुए जैन फूड पर रिसर्च की आवश्यकता बताई और पूर्ण सहयोग करते हुए संस्थान को सेंटर फोर एक्सीलेंस बनाने की जरूरत पर बल दिया।

दो दिवसीय हरित परिवहन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो .बी.एल. जैन के निर्देशन में दो दिवसीय हरित परिवहन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन 19 दिसम्बर को किया गया। भारतीय अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 'जिज्ञासा 2.0' के तहत प्रथम दिवस विद्यार्थियों में जागरूकता बढ़ाने के लिए पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने अपनी कला के माध्यम से हरित परिवहन में प्रौद्योगिकी की नई तकनीकों को प्रदर्शित किया। पोस्टर के माध्यम से सीएनजी गैस तथा वैद्युत परिचालकों के महत्तम उपयोग को दर्शाया गया। अगले दिन विद्यार्थियों के मध्य हरित परिचालन की महत्ता को बताने के लिए प्रो. बी. एल. जैन ने अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने बताया कि हरित परिचालन के माध्यम से दैनिक प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सकता है। तकनीकी विकास के नए आयामों में विकास कर तथा कम प्रदूषक ईंधनों का उपयोग कर प्रदूषण रहित पर्यावरण का विकास किया जा सकता है। साथ ही उन्होंने वक्षारोपण के महत्व पर भी जोर दिया।

अंत में कार्यक्रम के सहसंयोजक सहायक आचार्य खुशाल जांगिड़ तथा स्नेहा शर्मा ने विद्यार्थियों को उनके प्रयासों के लिये बधाईयां दी। उन्होंने कार्यक्रमों के माध्यम से अपने शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक विकास को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया।

राजस्थानी भाषा के विकास के लिए कार्य करेगा राजस्थानी केन्द्र- कुलपति प्रो. दूगड़

एल्युम्नी मीट में पूर्व विद्यार्थियों ने साझा किए अनुभव व स्मृतियां

संस्थान के पूर्व छात्रों का सम्मेलन 'एल्युम्नी मीट' का आयोजन 7 अक्टूबर को किया गया, जिसमें पूर्व छात्रों को सम्बोधित करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि कुछ अंतराल के बाद वापस मिलना बहुत खुशी देता है। इसके लिए दो दिनों का आयोजन रखा जाना चाहिए। यह एल्यूम्नी मीट एक उत्सव की तरह होनी चाहिए। इस दरमियान होने वाले विचारों के आदान-प्रदान को भी उन्होंने महत्त्वपूर्ण बताया। उन्होंने विश्वविद्यालय की प्रगति को रेखांकित करते हुए बताया कि नैक द्वारा 'ए' ग्रेड मिलना, एकेएस वर्ल्डवाइड प्रा. लि. द्वारा दुबई में आयोजित ग्लोबल एजुकेशन समिट-2023 में बेहतरीन पाठ्यक्रमों का निर्माण करने एवं उन्हें लागू करने हेतु 'बेस्ट डीम्ड यूनिवर्सिटी' श्रेणी का अवार्ड मिलना आदि उपलब्धियां हैं। संस्थान ने आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल आफ नेचुरोपैथी एंड योग का भवन तैयार करने के साथ ही नेचुरोपैथी ट्रीटमेंट शुरू कर दिए हैं। बीएनवाईएस के डिग्री पाठ्यक्रम के लिए राज्य सरकार की एनओसी मिलने पर प्रवेश प्रारम्भ कर दिए जाएंगे। यह विश्वविद्यालय की महत्त्वाकांक्षी योजना थी, जिसमें आधुनिकतम मशीनें उपचार के लिए स्थापित की गई हैं और नेचुरोपैथी की हर तरह की चिकित्सा के डाक्टर्स व डायटीशियंस की टीम सक्रिय है।

वास्तु व ज्योतिष पर पाठ्यक्रम शीघ्र

कुलपति प्रो. दूगड़ ने बताया कि संस्थान में इसी सेशन में राजस्थानी सेंटर स्थापित किया जा रहा है, जिसमें राजस्थानी भाषा के विकास के लिए कार्य किया जाएगा। यह संस्थान ओरिएंटेड स्टडी का केन्द्र है, यहां प्राच्य विधाओं पर काम होता है। वास्तु एवं ज्योतिष पर पाठ्यक्रम शुरू किया जा रहा है। क्लासिकल म्यूजिक पर भी काम हो रहा है और इसका अलग विभाग अगले सत्र से शुरू किया जाएगा। उन्होंने संस्थान की वित्तीय स्थिति की सुदृढता के बारे में आंकड़े प्रस्तुत किए। कुलपति ने संस्थान के रिसर्च प्रोग्राम की जानकारी दी और बताया कि केन्द्र सरकार के आर्थिक सहयोग से विभिन्न प्रोजेक्ट्स चल रहे हैं। उन्होंने रिसर्च के पब्लिकेशन और रिसर्च के काम को आगे बढ़ाने की

आवश्यकता बताई। कुलपति ने मैन्युस्क्रिप्ट सेंटर द्वारा अपने मिशन के तहत भारत सरकार के प्रोजेक्ट पर काम हो रहा है। यहां पांडुलिपियों को संरक्षित किया जा रहा है। उन्होंने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के राष्ट्रीय स्तर पर योग के क्षेत्र में 25 से 30 रिकॉर्ड बनाने, सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में राष्ट्रीय स्तर पर अवार्ड के रूप में उपलब्धियां प्राप्त करने के लिए प्रशंसा व्यक्त की तथा संस्थान के शिक्षकों द्वारा प्राप्त सम्मान व पुरस्कारों के बारे में भी बताया।

नैतिक व चारित्रिक पहचान का संस्थान

एल्यूम्नी मीट के उद्घाटन सत्र में कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन ने संस्थान की विशेषताओं की जानकारी देते हुए इसे शिक्षा के साथ ही नैतिक, चारित्रिक व आध्यात्मिक उन्नयन की पहचान रखने वाला संस्थान बताया। कार्यक्रम में डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज व डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने भी अपने विचार व्यक्त किए। पूर्व विद्यार्थियों में प्रतिष्ठा कोठारी, मरूधर कंवर, रूपाराम टाक, हेमंकवर, जयप्रकाश, शक्तिसिंह व उषा यादव ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए पुरानी यादों और उपलब्धियों, अनुभवों को साझा किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. अशोक भास्कर ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. युवराज सिंह खंगारोत ने किया।

अल्पकालिक व्यावसायिक विकास कार्यशाला में चोरड़िया को 'ए' ग्रेड मिला

इन्दिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी (इग्नू) के दूर शिक्षा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (स्ट्राइड) द्वारा आयोजित यूजीसी अनुमोदित अल्पकालिक व्यावसायिक विकास कार्यक्रम में दूरस्थ शिक्षा, ऑनलाइन व मिश्रित शिक्षण प्रणाली के सम्बंध में छह दिवसीय राष्ट्रीय वर्कशॉप में स्व-अध्ययन सामग्री निर्माण एवं विकसित करने पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। दिल्ली में 25 नवम्बर को आयोजित इस वर्कशॉप में हिस्सा ले रही जैन विश्वभारती संस्थान के दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र की सहायक आचार्य सुश्री प्रगति चौरडिया ने परीक्षा अंकन के बाद 'ए' ग्रेड प्राप्त की है। इस छः दिवसीय वर्कशॉप में सुश्री चोरडिया ने एम.ए. राजनीति प्रबन्धन पर स्टडी मेटेरियल की रूपरेखा एवं मैट्रिक्स तैयार की तथा प्रजेन्टशन प्रस्तुत किया।

स्ट्राइड के निदेशक प्रो. संतोष पंडा, कार्यक्रम समन्वयक डॉ. टाटा रामाकृष्णन, प्रो. सी.आर.के. मूर्ति व डॉ. अली असगर ने उन्हें प्रमाण पत्र प्रदान किया। चोरड़िया ने बताया कि इस छः दिवसीय वर्कशॉप में एन.ई.पी. 2020 की तुलना में उच्च शिक्षा के बदलते परिदृश्य और दूरस्थ और ऑनलाइन शिक्षा और मिश्रित शिक्षा के लिए यूजीसी के नए दिशानिर्देशों पर चर्चा, ऑनलाइन और मिश्रित शिक्षण के लिए विशिष्ट कार्यक्रम या पाठ्यक्रम के लिए कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम डिजाइन मैट्रिक्स और अवधारणा मानचित्र विकसित करने, दूरस्थ, ऑनलाइन और मिश्रित शिक्षा और स्वतः अध्ययन सामग्री के लिए एसएलएम लिखने का कौशल विकसित करने, आगे के सम्पादन और व्यापक उपयोग के लिए स्व-शिक्षण संसाधनों का मसौदा विकसित करने, ओडियो, विडियो और वेब संसाधनों के एकीकरण सहित मौजूदा प्रिंट-सामग्री को ऑनलाइन डिलीवरी के लिए परिवर्तित करने की अतिरिक्त रणनीतियों की व्याख्या करने तथा एसएलएम विकास के लिए विशेषज्ञों का एक नेटवर्क बनाने और अंतर-संस्थागत सर्वोत्तम प्रथाओं के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करने के सम्बंध में व्यापक कार्य किया गया।

तीन दिवसीय निःशुल्क निसर्गोपचार शिविर का आयोजन

दवाओं से दूर व प्रकृति के पास रहने पर ही रोगों से मुक्ति संभव- कुलपति प्रो. दूगड़

संस्थान के तत्वावधान में यहां तीन दिवसीय (14-16 जुलाई, 2023) आचार्य महाप्रज्ञ निसर्ग उपचार शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में अहमदाबाद, चैन्नई, मुम्बई, उदयपुर, सूरत, बीकानेर आदि अलग-अलग स्थानों से 13 महिला-पुरूष शिविरार्थियों ने भाग लिया, जिनका निःशुल्क उपचार विभिन्न प्राकृतिक चिकित्सा प्रणालियों द्वारा किया गया। शिविर में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने शिविरार्थियों को कुदरती उपायों से स्वास्थ्य लाभ की श्रेष्ठता बताई और कहा कि व्यक्ति जितना दवाओं से दूर और प्रकृति के पास अनुकूल रहेगा, उतना ही उसे रोगों से मुक्ति और स्वास्थ का फायदा मिल पाएगा। उन्होंने बताया कि प्रकृति ने हमें हर बीमारी व विपरीत परिस्थिति से मुकाबला करने की शक्तियां प्रदान की है, केवल उनको उपयोग में लेने की विधि की जानकारी जरूरी है। प्रशिक्षक डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने शिविरार्थियों को निसर्ग उपचार की विभिन्न विधियों के बारे में बताते हुए कहा कि प्राकृतिक तरीके से शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए निसर्ग-पद्धति सबसे अधिक लाभदायक है।

मरीजों को दिए गए विभिन्न उपचार

शिविर के दौरान निसर्गोपचार विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा परामर्श के साथ मरीज का पोस्चर एससेसमेंट, बॉडी कम्पोजिशन एनालिसिस, नियमित समूह कक्षाओं, योग थैरेपी सेशन, विशेष स्वास्थ्य वार्ता, आहार चिकित्सा में थैरेप्यूटिक फूड तथा फ्रेश हर्बल मेडिसिन का प्रयोग किया गया। इनमें मरीजों का बॉडी मसाज, स्टीम व सोना बाथ, मड पैक बाथ, सैंड फोर्मेशन, एक्यूपंक्चर, फेसियल व लोकल स्टीम, शिरोधारा, होट व कोल्ड कम्प्रेस एड पैक तथा थ्रोट, एब्डोमिन, आर्म, नी, लैग पैक, नेचुरल, होट एंड कोल्ड हिप बाथ, एनिमा, गेंजी, टर्मरिक, नीम बाथ, जकुजी व सर्कुलर जेट हायड्रोथैरेपी, कटि स्नान, जानु स्नान, ग्रीवा बस्ति आदि की सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई। शिविर में डॉ. पीएस शेखावत, डॉ. श्रेया, डॉ. कृतिका, मनीष, तनुजा, श्रद्धा, कल्पिता, मुकेश आदि ने अपनी सेवाएं प्रदान की। शिविर के समापन पर सूरत के अजीत चौरड़िया, राजश्री चौरड़िया, अहमदाबाद की शिल्पा नाहटा, खुशी नाहटा, उदयपुर के रेशु जैन, गंगा शहर के हंसराज डागा, श्रद्धा डागा आदि ने शिविर को लाभदायक बताते हुए अपने अनुभव साझा किए और कहा कि उन्हें बहुत अधिक बेहतर महसूस हो रहा है। बिना दवा के केवल रहन-सहन व खान-पान और प्राकृतिक विधियों से भी दवाओं के प्रयोग से अधिक स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

दो दिवसीय निःशुल्क नेचुरोपैथी एवं योग शिविर आयोजित

विभिन्न मानसिक व शारीरिक रोगों का योग व नेचुरोपैथी से किया उपचार

संस्थान के अन्तर्गत संचालित आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एंड होस्पिटल ऑफ नैचुरोपैथी एंड योगा में दो दिवसीय (7-8 जुलाई, 2023) नेचुरोपैथी एंड योग शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में मरीजों का विभिन्न प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों के माध्यम से उपचार किया गया।

शिविर पर्यवेक्षक विनीत सुराणा ने बताया कि नेचुरोपैथिक चिकित्सक डॉ. श्रेया त्रिपाठी, डॉ. प्रीतिका रामटेके व डॉ. नीलेश मायरा की देखरेख में मरीजों का विभिन्न तरीकों से ट्रीटमेंट प्रेस्क्राइब किए गए। थैरेपिस्ट तनूजा, मनीष व कल्पिता द्वारा मड थैरेपी, डाइट थैरेपी, फास्टिंग थैरेपी, हाइड्रो थैरेपी, मैन्युपेलेटिव मसाज, एक्यूप्रेशर, एक्यूपंक्चर, कपिंग थैरेपी, हिजामा पद्धति आदि के अलावा ग्रास वाकिंग व विभिन्न यौगिक क्रियाओं द्वारा चिकित्सकों की देखरेख में उपचार किया गया। डाइटिशियन श्रद्धा के निर्देशन में मरीजों की आहार चिकित्सा की गई।

पर्यवेक्षक डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने बताया कि शिविर में विश्वविद्यालय के सदस्यों की विभिन्न बीमारियों को दूर करने के लिए प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति व योग चिकित्सा द्वारा उपचार किया गया। इनमें तनाव, चिंता, डिप्रेशन, साइको सोमेटिक डिजीज आदि मानसिक रोगों की चिकित्सा के अलावा मोटापा, कालेस्ट्रोल का बढना, एंजाइना पेक्टोरिस, डायबीटीज और उसके कारण उत्पन्न आंखों, गुर्दों, न्यूरोपैथिक समस्याओं के इलाज, उच्च रक्तचाप, निम्न रक्तचाप, रिफ्लक्स, गैस्ट्राइटिस, डिस्पेप्सिया, पेप्टिक अल्सर, क्रोनिक टाइफाइड, अल्सरेटिव कोलाइटिस आदि विभिन्न मानसिक व शरीरिक बीमारियों का उपचार किया गया। इनके लिए कोलोन हाइड्रोथैरेपी मशीनों हिपबाथ, स्पाइनल बाथ, आर्म एंड फुट बाथ, जकूजी वाटर ट्रीटमेंट, स्टीम बाथ, सोना बाथ, इमर्सन बाथ, सर्कुलर जेट, पंचकर्म चिकित्सा में शिरोधारा, तक्रधारा, जानुबस्ति, ग्रीवाबस्ति, हृदयबस्ति आदि द्वारा चिकित्सा कार्य किया गया।

शांति के लिए समन्वय जरूरी है – प्रो. सोढ़ी

भारतीय दार्शनिक दिवस पर पर आयोजित समारोह में स्थाई शांति पर विचार

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्वावधान में इंडियन कौंसिल आफ फिलॉसोफिकल रिसर्च (आईसीपीआर) के सहयोग से महाप्रज्ञ ऑडिटोरियम में 24 जुलाई को आयोजित भारतीय दार्शनिक दिवस समारोह में 'स्थायी शांति के लिए दार्शनिक साधनों की तलाश' विषय पर मुख्य वक्ता राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा विकास संस्थान (आरजीएनवाईडी) चंडीगढ के लोक प्रशासन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. इन्द्रजीत सिंह सोढी ने कहा है कि शांति को केवल युद्ध की रोकथाम के रूप में ही नहीं होती है, बल्कि शांति उससे आगे होती है और वह है मन की शांति, तनाव मुक्त जीवन। हम जितना ज्यादा फैलाव देश की सीमाओं का या आर्थिक क्षेत्र में करते हैं, उतनी ही शांति को भंग करते हैं। उन्होंने कहा कि भारत ज्ञान का केन्द्र रहा है। यहां तक्षशिला, नालन्दा जैसे विश्वविद्यालय रहे हैं, जिनसे दुनिया भर के विद्वानों ने ज्ञान प्राप्त किया। भारत में ज्ञान की पुस्तकें बहुत थीं, जो संस्कृत आदि भाषाओं में थीं और उनका अनुवाद अनेक अन्य भाषाओं में किया गया। प्रो. सोढी ने टेक्नोलोजी, साईबर क्राईम, पर्यावरण आदि की स्थितियों को लेकर शांति की अवस्था और विश्व शांति दिवस के उद्देश्यों के बारे में बताते हुए कहा कि पर्यावरण संतुलन और शांति एक दूसरे के पूरक हैं। जलजला या भूकम्प आने का कारण प्रकृति के साथ छेड़छाड़ का नतीजा है। इससे जन समुदाय की शांति भंग होती है। हम प्रकृति की शांति को भंग करते हैं, तो प्रकृति उसका परिणाम भी हमें देती है। उन्होंने सहयोग और समन्वय को परिभाषित करते हुए कहा कि शांति के लिए समन्वय जरूरी है, केवल सहयोग नहीं। भारतीय ऋषियों ने समन्वय पर जोर दिया था, लेकिन हम सहयोग कर देते हैं, पर समन्वय नहीं कर पाते। शांति के लिए अनुशासन भी जरूरी है। केवल अपने हिसाब से जीना कभी शांति नहीं ला सकता। धर्म का मतलब शांति से रहना, सहयोग से रहना और परस्पर सामंजस्य से रहना होता है। लेकिन, आज लोग धर्म के लिए लड़ते हैं, जो गलत है। दर्शन विवेकपूर्वक व ज्ञान पूर्वक बात बताने को कहते हैं। दर्शन से समझा और समझाया जा सकता है। भारत 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा वाला देश है और सह अस्तित्व ही शांति का प्रेरक होता है।

आखिर शांति की पहचान क्या है

मुख्य अतिथि के रूप में इंडियन कौंसिल ऑफ फिलोसोफिकल रिसर्च (आईसीपीआर) के पूर्व सचिव एवं सुखाड़िया विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. एसआर व्यास ने कहा कि जब सभी लोग शांति की बात करते हैं, फिर भी शांति नहीं आती, तो सोचने की बात है कि आखिर शांति क्या है। सभी देश, सभी धर्म, संत-महात्मा, अनुयायी, संगठन आदि सब शांति के लिए प्रयास करते हैं, लेकिन हम शांति को पहचानते ही नहीं और जिसे हम पहचान नहीं पाते, उसकी तलाश मुश्किल होती है। शांति के लिए ही सारी अशांति फैली हुई है। उन्होंने सार्वजनिक शांति या सामूहिक शांति को कोरी कल्पना बताया और कहा कि शांति केवल वैयक्तिक ही हो सकती है। शांति को कहीं बाहर से नहीं खरीदा जा सकता। शांति हमेशा अंदर से होती है। शांति रचनात्मक होती है। उसका निर्माण जितने समय तक और जितने प्रतिशत तक हम कर पाते हैं, उतना ही गुस्सा, ईर्ष्या, लालच आदि नियंत्रण में रहते हैं। उन्होंने कहा कि साधु-संत आदि शांति नहीं दे सकते, वे केवल प्रेरक होते हैं। हम दूसरों को प्रेरक मान सकते हैं, लेकिन प्रयत्न हमें खुद को ही करने होंगे।

आत्मनिर्भरता से शांति नहीं मिल सकती

जैविभा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर दूगड़ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि अधिकतम युद्ध धर्म के नाम पर लड़े गए, लेकिन शांति का मार्ग भी धर्म ही दिखाता है। यह देखने वाले पर निर्भर करता है कि वह कौन सा मार्ग देखता है। उन्होंने बताया कि आत्मनिर्भरता या स्वावलम्बन से शांति खंडित हो रही है, इसलिए अन्तनिर्भर बनना जरूरी हो गया है। हमें एक-दूसरे के प्रति सहयोग की भावना को बढाना होगा। परस्पर सहयोग बढाने से शांति कायम हो सकती है। उन्होंने अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण को भी जरूरी बताया और कहा कि हमारी इच्छाएं जितनी कम होंगी, उतने ही परिमाण में शांति बढ़ती जाएगी। कार्यक्रम का प्रारम्भ मुमुक्षु बहिनों द्वारा मंगलगान करके किया गया। अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन एवं विषय प्रवर्तन प्रारम्भ में संयोजक डॉ. लिपि जैन ने किया। अंत में आभार ज्ञापन डॉ. बलवीर सिंह ने किया। कार्यक्रम में प्रो. नलिन के. शास्त्री, प्रो. बी.एल. जैन, विनीत सुराणा, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, आरके जैन, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. अमिता जैन, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, दीपाराम खोजा, पंकज भटनागर समस्त संकाय सदस्य, ममुक्षु बहिनें, विद्यार्थी आदि उपस्थित थे।

विद्यार्थियों ने किया राजस्थान विश्वविद्यालय के गांधी अध्ययन केंद्र का भ्रमण

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के 19 सदस्यीय विद्यार्थियों के समूह ने 13 अक्टूबर को राजस्थान विश्वविद्यालय में संचालित गांधी अध्ययन केंद्र का भ्रमण किया एवं वहां गांधी प्रतिमा तथा अद्भुत कलाकृति इकोडोम का अवलोकन किया। गांधी अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ. राजेश कुमार शर्मा एवं उनकी टीम ने संस्थान के संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों का स्वागत किया और इस प्रकार के शैक्षणिक मेलजोल को लाभदायक बताया। उन्होंने अध्ययन केंद्र की शैक्षणिक गतिविधियों के बारे में जानकारी देते हुए वहां 6 माह के गांधी दर्शन पर सर्टिफिकेट कोर्स के बारे में बताया कि इस कोर्स में गांधी दर्शन एवं गांधीजी के विचारों का अध्ययन करवाया जाता है। इस अवसर पर आयोजित व्याख्यान में मुख्य वक्ता राजस्थान विश्वविद्यालय के भारतीय संस्कृति एवं इतिहास विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. निक्की चतुर्वेदी ने राष्ट्रीय संस्कृति एवं कला को विश्वप्रसिद्ध बताते हुए उसे अक्षुण्ण रखने को सबका दायित्व बताया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रविंद्र सिंह ने की। विभाग के सहायक आचार्य डॉ.बलबीर सिंह ने संस्थान का परिचय प्रस्तुत किया एवं इस शैक्षणिक भ्रमण के उद्देश्य बताए। अंत में विभाग की सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन ने आभार ज्ञापित किया और जैन विश्वभारती संस्थान तथा गांधी अध्ययन केंद्र के मध्य आपसी संपर्क सूत्रता निरन्तर बनाए रखने की आवश्यकता बताई।

सारा बानो ने जीता मिस फ्रेशर का खिताब और मिस परफेक्ट बनी किरण

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग में नव-प्रवेशित विद्यार्थियों के लिए तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों द्वारा वेलकम पार्टी का आयोजन 22 अगस्त को किया गया, जिसमें सारा बानो को मिस फ्रेशर का ताज पहनाया गया। मिस्टर प्रिंस के रुप में श्रीराम जांगिड़ को चुना गया। मिस ड्रेस-अप के रूप में खुशी शर्मा तथा मिस परफेक्ट के रूप में किरण को चुना गया। डे ऑफ द डे के रूप में टीना कुमारी तथा नरेंद्र सिंह को खिताब मिला। कार्यक्रम के दौरान सीनियर विद्यार्थियों हरून्निशा, पूनम मेघवाल, संगीता जानू, दीपांशी चिंतलांगिया व रामस्वरूप के नेतृत्व में जूनियर विद्यार्थियों के लिए गेम्स भी आयोजित किए गए, जिनके परिणामों में म्यूजिकल चेयर में अनोखा प्रथम रही। पेपर डांस गेम में टीना व आयशा ग्रुप तथा मुस्कान खिलजी व किरण ग्रुप विजेता रहा। बैलून गेम में गिरीजा कंवर विजेता रही।

विभाग की सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन ने नवीन प्रवेश देने वाले विद्यार्थियों को शुभकामनाएं प्रेषित की और अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निष्ठा से मेहनत करने के लिए प्रेरित किया। साथ ही विभाग में आयोजित होने वाली विभिन्न शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक गतिविधियों की भी जानकारी प्रदान की। विभागाध्यक्ष डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने कार्यक्रम को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास एवं आपसी समन्वय बनाए रखने में काफी लाभदायक बताया और कहा कि आपसी सहयोग, समायोजन एवं उत्साहपूर्ण आचरण रखते हुए हमें लक्ष्य की दिशा में निरंतर आगे बढ़ना चाहिए। अंत में सहायक आचार्य डॉ. बलबीर सिंह ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम के आयोजन में विभाग के पूर्व छात्र धीरज प्रजापत व लीलाधर सोनी का विशेष योगदान रहा। मंच का संचालन सिमरन बानो तथा निशा पारीक ने किया।

जिला स्तरीय युवा उत्सव- 2023 में गोरा व भास्कर प्रथम रही

भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम के तहत 16 अगस्त को नेहरू युवा केंद्र संगठन नागौर में आयोजित जिला स्तरीय युवा उत्सव- 2023 कार्यक्रम में संस्थान की दो छात्राओं ने अलग-अलग प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान हासिल किया है। संस्थान के शिक्षा विभाग की बीए-बीएड की छात्रा ममता गोरा ने भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। संस्थान की ही एक अन्य छात्रा बीए-बीएड की दिव्या भास्कर ने मोबाईल फोटोग्राफी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

अब इन दोनों छात्राओं को राजस्थान राज्य स्तर पर आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिता में शामिल होने का अवसर दिया जाएगा। इन छात्राओं ममता गोरा व दिव्या भास्कर को कुलपति प्रो.बच्छराज दूगड़ ने उनकी सफलता पर बधाई देते हुए प्रगति की शुभाशंसा व्यक्त की है।

'हुनर हाट' में संगीत, चित्रकला, फूड आइटम्स, दस्तकारी, मेहंदी, रंगोली आदि से दिखाया छात्राओं ने अपना हुनर

गांधी जयंती पर पांच दिवसीय कार्यक्रम आयोजित

संस्थान में महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर शिक्षा विभाग द्वारा 29 सितम्बर से आयोजित पांच दिवसीय समारोह में प्रथम दिवस 'हुनर हाट' लगाई गई। इसमें छात्राओं ने अपनी-अपनी रूचि के अनुसार विभिन्न कलाओं का बेहतरीन प्रदर्शन किया। वाद्य-यंत्र वादन कला में ऐश्वर्या सोनी ने हारमोनियम, कोमल प्रजापत ने ढोलक, दिव्या पारीक ने गिटार और वृंदा दाधीच ने मंजीरा का कुशल वादन कर सबको रिझाया। इन सभी ने संगान भी प्रस्तुत किए। इनके अलावा हुनर हाट में रंगोली, मिठाई-पकवान बनाने, चित्रकला, हाथों में मेहंदी सजाने, हस्तशिल्प तैयार करने, व वस्त्र सिलाईकला का प्रदर्शन श्रेष्ठ रहा। विश्वविद्यालय के विशेषाधिकारी प्रो. नलिन के. शास्त्री, रजिस्ट्रार प्रो. बी.एल. जैन, उप रजिस्ट्रार विनीत सुराणा, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, जगदीश यायावर आदि ने सभी का निरीक्षण किया और मुक्त कंठ से सराहना की। प्रो. शास्त्री ने कहा कि छात्राओं में विभिन्न कलाओं में अच्छी दक्षता है, लेकिन फिर भी इन्हें अधिक निखारने के लिए और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए अच्छे ट्यूटर को बुलाने, इनकी कला की वृहद् प्रदर्शनी आयोजित करने और कलात्मक वस्तुओं की उचित मूल्य पर बिक्री करने की व्यवस्था विश्वविद्यालय की ओर से होनी चाहिए। इस सम्बंध में सभी ने अपने-अपने सुझाव भी प्रस्तुत किए।

रंगोली में सुदेश, सिलाई में कोमल व मेहंदी में रूचिका प्रथम रही

हुनर हाट संयोजिका डॉ. अमिता जैन ने बताया कि रंगोली हुनर में छात्राओं ने समूह बनाकर अपनी कला को फर्श पर रंग-बिरंगे रंगों से उभारा। उन्हें महात्मा गांधी के योगदान, स्वच्छ भारत अभियान आदि को अपनी थीम बनाकर रंगोलियां बनाई, वहीं चन्द्रयान को लेकर भी रंगोली सजाई गई। सुमित्रा, अनिषा, प्रियंका, सुमन, विद्या, निकिता, अर्चना शर्मा, चुकी, मनीषा, दिव्या, राधिका, पूजा व शारदा के नेतृत्व में 100 से अधिक छात्राओं ने इसमें हिस्सा लिया। इनमें से सुदेश चौधरी ग्रुप प्रथम रहा, सुनीता डूडी ग्रुप द्वितीय व पूजा चौधरी ग्रुप तृतीय स्थान पर रहा। मेहंदी प्रतियोगिता में एक दर्जन छात्राओं ने हिस्सा लिया, जिनमें से रूचिका पारीक प्रथम, यशोदा द्वितीय और मिताली सोनी तृतीय रही। वस्त्र सिलाई कला की प्रतियोगिता में छात्राओं ने अपने हाथों से वस्त्रों की कटिंग और हाथ की सिलाई करके सुन्दर परिधान तैयार किए, जिनमें चुन्नी घाघरा व राजपूती ड्रेस की परम्परागत ड्रेस से लेकर सलवार सूट, प्लाजा सूट, सरारा कुर्ता, फ्रॉक, टॉप-नुड्डी, नायरा कुर्ता आदि बनाकर उनका प्रदर्शन किया। इनमें प्रथम स्थान पर कोमल प्रजापत रही। द्वितीय मंजू गोदारा व तृतीय मिताली सोनी रही।

पैंटिंग में दिव्या, दस्तकारी में नीलम व भोजन कला में नेहा प्रथम रही

पैंटिंग व चित्रकला प्रतियोगिता में छात्राओं ने एक से बढ कर एक प्रस्तुतियां दी और दर्शकों को अपनी कला से अचम्भित कर दिया। इस प्रतियोगिता में दिव्या भास्कर प्रथम रही। हिमांशी चौधरी व ममता ने द्वितीय स्थान पाया और मिताली सोनी तृतीय स्थान पर रही। आर्ट एंड क्राफ्ट में छात्राओं ने सुन्दर दस्तकारी आइटम्स तैयार करके उनका प्रदर्शन किया। इनमें आकर्षक कलात्मक पायदान, तोरण, थालपोश, आरती की थाली, वाल-डेकोरेशन आदि विभिन्न निर्माण की हुई सामग्री से सभी चकित रह गए। इसमें नीलम शर्मा प्रथम, सिमरन सोनी द्वितीय तथा निकिता प्रजापत तृतीय स्थान पर रही। इसी प्रकार छात्राओं भोजन की विविध स्वादिष्ट डिश तैयार करके उनका प्रदर्शन किया, जिसमें उन्हें डिश का नाम, उनको बनाने की रेसिपी का भी प्रदर्शन किया। कोरिया की वेजीटेरियन डिश 'टबोकी' की सभी ने प्रशंसा की। दही-बड़ों के जायके, लस्सी के स्वाद, गुलाब व गुलकंद के शरबत और अन्य विविध लजीज आइटम्स बेहतर स्वाद से भरपूर थे। फूड आईटम्स प्रतियोगिता में नेहा सोनी प्रथम रही। द्वितीय स्थान पर ज्योति बुरड़क, मोनिका बुरड़क, हर्षिता सोनी व चंचल सोनी संयुक्त रूप से रही तथा आरती चौहान, निर्मला बिशोर, कीर्ति सोनी, व राजनन्दानी सामूहिक रूप से तृतीय स्थान पर रही।

आचार्य तुलसी की 110वीं जयंती पर गुरू सुमरिन सभा आयोजित

तेरापंथ धर्मसंघ के नौंवें आचार्य एवं जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के प्रथम अनुशास्ता गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी के 110वें जन्मोत्सव पर उनकी स्मृति में गुरु सुमिरन सभा का आयोजन 16 नवम्बर को विश्वविद्यालय के सेमिनार होल में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। प्रो. दूगड़ ने बताया कि आचार्य तुलसी का देश के सभी महत्त्वपूर्ण राजनीतिज्ञों द्वारा सम्मान किया जाता था। उन्होंने प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू, साहित्यकार डॉ. जैनेन्द्र जैन, जयप्रकाश नारायण आदि के साथ आचार्य तुलसी के संस्मरण भी प्रस्तुत किए। कुलपति ने आचार्य तुलसी के समाज सुधार सम्बंधी, महिला उत्थान एवं अछूतोद्धार सम्बंधी उदाहरण भी दिए और कहा कि वे बहुआयामी संत थे। वे साहित्यकार, शिक्षाविद्, आध्यात्मिक, प्रशासनिक सुधारक आदि सभी क्षेत्रों में अपनी परिवर्तन के अग्रदूत रहे। वे सबको जोड़ कर रखते थे। छोटे से छोटे व्यक्ति को पहचान कर उन्हें प्रेरित करते थे। उसके बाद वह व्यक्ति सदा के लिए जुड़कर रह जाता था।

सभा में प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. नलिन के. शास्त्री, प्रो. बी.एल. जैन, डॉ. लिपि जैन, डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, डॉ. घनश्यामनाथ कच्छावा व डॉ. रविन्द्रसिंह राठौड़ ने अपने विचार व्यक्त करते हुए आचार्य तुलसी प्रणीत अणुव्रत आंदोलन, नैतिकता का प्रसार, सब धर्म जातियों से पहले मानवता को मानने आदि गुणों का वर्णन प्रस्तुत किया और उन्हें महात्मा गांधी के बाद सदी का सबसे महान व्यक्ति बताया। सभी ने उनके लिए श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर डॉ. अशोक भास्कर, शरद जैन, पंकज भटनागर, डॉ. सरोज राय, प्रगति चौरड़िया, राजेन्द्र बागड़ी, जगदीश यायावर, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. प्रगति भटनागर, मनीषा आदि उपस्थित रहे।

नवीनता ही सजीवता होती है, हुनर को निरन्तर परिष्कृत करें- कुलपति

नवागन्तुक छात्राध्यापिकाओं का स्वागत समारोह आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 6 अक्टूबर को आयोजित 'नव आगन्तुक स्वागत' समारोह में छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। समारोह में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि जीवन की हर कठिनाई को एक अवसर की तरह लेना चाहिए, इससे जीवन में निरन्तर खुशी मिलती रहती है। जीवन में आने वाले प्रत्येक सुअवसर का पूरा लाभ उठाने के लिए प्रेरित करते हुए कुलपति ने अपने हुनर को निरन्तर परिष्कृत करने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि नवीनता ही सजीवता होती है। विचारों का उन्मेष एक तरह से पुनर्जन्म की तरह होता है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के विकास के लिए संस्थान द्वारा हर संभव प्रयास किया जाता है। यहां शैक्षिक उन्नयन के साथ नैतिक व चारित्रिक विकास का मार्ग भी प्रशस्त होता है। उन्होंने छात्राओं द्वारा प्रस्तुत गायन, वादन, सिलाईकला, पेंटिंग आदि कलाकृतियों का अवलोकन करते हुए उनकी सराहना की। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रमुख विशेषताओं और उपलब्धियों के बारे में बताया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने शिक्षण कार्य की व्यावसायिक कुशलताओं और व्यावहारिक गुणों, कौशल तथा मानवीयता का विकास करने के लिए प्रेरित किया तथा कहा कि सदैव आत्मविकास के लिए तत्पर रहना चाहिए। प्रो. रेखा तिवाड़ी ने सदैव मूल्यपरक सिद्धांतों को ग्रहण करते रहने के लिए प्रेरित किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति

कार्यक्रम में ऐश्वर्या सोनी व समूह, उषा व समूह, रेणु एवं समूह ने स्वागत गान, नृत्य, गायन प्रस्तुत किए। दिव्या कंवर ने भरतनाट्यम व दिव्या भास्कर पारीक ने योग के साथ नृत्य की प्रस्तुति दी तथा गिटार वादन के साथ गीत पेश किया। इस अवसर पर डॉ. लिपि जैन, डॉ. विनोद कस्वां व डॉ. सरोज राय निर्णायक के रूप में रही। कार्यक्रम में डॉ. गिरधारीलाल शर्मा के निर्देशन में छात्राओं द्वारा निर्मित डोक्यूमेंटरी भी प्रदर्शित की गई। समारोह में सभी नवागन्तुक छात्राध्यापिकाओं ने अपना परिचय मंच पर आकर रैम्प-वॉक के साथ प्रस्तुत किया। अंत में डॉ. अमिता जैन व प्रमोद ओला ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन दिव्या भास्कर व आरती पारीक ने किया।

फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन

सुनीता को मिस फ्रेशर, प्रिया को मिस डीवा और ट्विंकल भंसाली को मिस ब्रैनी सम्मान

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में नवागंतुक छात्राओं के लिए फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन 27 सितम्बर को किया गया। इसमें छात्रा सुनीता काजला को मिस फ्रेशर, प्रिया पाटनी को मिस डीवा और ट्विंकल भंसाली को मिस ब्रैनी के रूप में चयनित कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत छात्रा अमीरा द्वारा गणेश वंदना के साथ हुई। स्वागत गीत मीनाक्षी भंसाली द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. प्रगति भटनागर ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने की। मुख्य अतिथि शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन एवं विशिष्ट अतिथि अंग्रेजी विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवाड़ी थी। सभी अतिथियों का स्वागत छात्राओं ने पुष्पगुच्छ प्रदान कर किया। कार्यक्रम में नवागंतुक छात्राओं द्वारा भी विभिन्न प्रस्तुतियां दी। छात्रा हवा कंवर, नेहा तथा तमन्ना द्वारा नृत्य, सुनीता काजला ने कवि सोहनलाल द्विवेदी की प्रसिद्ध कविता 'कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती' का पाठ किया। सीनियर छात्राओं द्वारा नवागंतुक छात्राओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी रखा गया, जिनमें रैंप वॉक और ब्रेनी राउंड आदि मुख्य आकर्षण रहे। कार्यक्रम का संचालन स्नेहा बोहरा तथा कान्ता सोनी ने किया। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. त्रिपाठी ने छात्राओं को जीवन में सफलता प्राप्ति हेतु सदैव आगे बढते रहने एवं समय नियोजन को महत्त्व देने को जरूरी बताया और कहा कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अच्छा काम करने वाले सदैव महान बनते हैं। मुख्य अतिथि प्रो. बी.एल. जैन ने कहा, नवीन ऊर्जा के साथ फ्रेशर पार्टी का सच्चा स्वरूप परिलक्षित हुआ है। किसी भी कार्य को आगाज से अंजाम तक सफलतापूर्वक ले जाना ही कार्य-साधना होती है। उन्होंने मेहनत एवं लगन से शिक्षा अध्ययन से सकारात्मक परिणाम के श्रेष्ठ अंजाम तक ले जाने के लिए प्रेरित किया। विशिष्ट अतिथि प्रो. तिवाड़ी ने छात्राओं को उज्जवल भविष्य की कामना की।

संस्कृत दिवस पर समारोह का आयोजन

अंतरिक्ष विज्ञान के लिए सबसे उपयुक्त भाषा सिद्ध हुई है संस्कृत- प्रो. जयकुमार

संस्कृत दिवस के अवसर पर प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के तत्त्वावधान में 29 अगस्त को आयोजित संस्कृत समारोह उत्सव में मुख्य अतिथि प्रो. जयकुमार जैन जयपुर ने संस्कृत को विश्व की प्राचीनतम भाषा बताते हुए बताया कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन् 1977 में यह स्वीकार किया था कि संस्कृत सभी भाषाओं के निकट है। नासा ने भी अपने प्रकाशन के जुलाई 1987 के अंक में कम्प्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त भाषा संस्कृत को माना है। अंतरिक्ष में संदेश भेजे जाने के लिए संस्कृत सबसे बेहतर भाषा है। अंग्रेजी व अन्य भाषाओं में संदेश भेजे जाने पर उनमें शब्द आगे-पीछे और गलत हो जाते हैं, लेकिन संस्कृत में भेजे संदेश का अर्थ यथावत् रहता है। अंतरिक्ष विज्ञान के लिए संस्कृत आवश्यक है और संस्कृत साहित्य में समस्त अंतरिक्ष विज्ञान समाहित है। वैदिक साहित्य संस्कृत में है और जैन साहित्य भी बहुतायत से संस्कृत में है। उन्होंने साहित्यिक भाषा संस्कृत को बताया, वहीं लोकभाषा के रूप में प्राकृत को समानान्तर बताया।

विज्ञान की भाषा है संस्कृत

जसवंतगढ के तापड़िया संस्कृत महाविद्यालय के प्रो. चन्द्रशेखर ने कार्यक्रम में सारस्वत अतिथि के रूप में अपना सम्बोधन संस्कृत में देते हुए कहा कि प्राचीन काल में श्रावणी पर्व पर शाला में प्रवेश की व्यवस्था थी। प्रवेश के बाद संस्कृत में भी समस्त आचरण किए जाते थे। इसी दिन को अब संस्कृत दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने इस विज्ञान युग में और वायुयान युग में संस्कृत को विज्ञान की भाषा बताया और कहा कि हमारा प्राचीन ज्ञान-विज्ञान बेहतर था। समारोह में सारस्वत विद्वान प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि संस्कृत से वाणी शुद्ध होती है। पतंजलि ने तीन शास्त्रों की रचना की, वैद्यक, योगशास्त्र एवं व्याकरण। इनमें वैद्यक शरीर की शुद्धि करता है, योग मन को शुद्ध बनाता है और व्याकरण वाणी को शुद्ध करता है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रो. जैनेन्द्रकुमार जैन ने कहा कि जीवन के समस्त क्रियाकलापों व दिनचर्या से जुड़ी हुई भाषा है संस्कृत। हम पूजा पद्धति में संस्कृत का ही इस्तेमाल करते हैं। जीवन का हर पहलू संस्कृत से जुड़ा हुआ है। इसमें दैनिक व्यवहार, व्यापार, सामाजिक जीवन, व्यक्तिगत जीवन, मानवीय मूल्यों की उद्भावनाएं आदि सभी संस्कृत साहित्य से ही मिलती है। कार्यक्रम में मुमुक्षु बहिनों ने भी संस्कृत में अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रारम्भ में स्वागत वक्तव्य डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम मंगलाचरण से प्रारम्भ किया गया। अंत में डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन सब्यसाची सारंगी ने किया।

जैन स्कॉलर कार्यशाला में 17 प्रशिक्षणार्थियों को दिया प्राकृत का प्रशिक्षण

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के स्थानीय कार्यालय 'रोहिणी' में जैन स्कॉलर बैच-4 की आठ दिवसीय चतुर्थ प्रशिक्षण कार्यशाला में देश भर के 17 प्रशिक्षणार्थियों को जैन विश्वभारती संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग की सह आचार्या डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा द्वारा प्राकृत भाषा का प्रशिक्षण प्रदान किया। उन्होंने प्राकृत भाषा को सरलीकरण करके समझाया तथा पाठ के मध्य में आये हुए देशी व अर्धमागधी भाषा के शब्दों से भी परिचित करवाया, जिससे प्राकृत भाषा का ज्ञान सभी शिक्षार्थियों के लिए सुगम हो गया। कार्यशाला में प्राकृत के अलावा संस्कृत, कर्मग्रंथ, न्याय मीमांसा आदि गूढ विषयों का प्रशिक्षण भी दिया गया। इनके अन्य प्रशिक्षण में डॉ. मंजु नाहटा, सुषमा आंचलिया, राजु दूगड़, विकास गर्ग, कमलेश जैन आदि प्रशिक्षणार्थियों ने अपना योगदान दिया। यह जैन स्कॉलर प्रशिक्षण कार्यशाला निदेशिका मंजू नाहटा के निर्देशन में आयोजित की गई।

पर्सनल जानकारी व बैंक डिटेल कभी शेयर नहीं करें- सांवरमल

साइबर सिक्योरिटी पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

भारत सरकार एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रत्येक महीने के प्रथम बुधवार को मनाए जाने वाले साइबर जागरूकता दिवस पर संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में साइबर सिक्योरिटी विषय पर 4 अक्टूबर को आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पीएनबी बैंक के शाखा मैनेजर भरत देवल थे। मुख्य वक्ता पीएनबी के ही सांवरमल ने कार्यक्रम में साइबर अपराध के विभिन्न प्रकार एवं उनसे सुरक्षित रहने के उपायों पर प्रकाश डाला तथा कहा कि अपनी पर्सनल जानकारी, बैंक डिटेल्स आदि कभी भी किसी से शेयर नहीं करनी चाहिए। किसी भी अनधिकृत ऐप को इंस्टॉल नहीं करना चाहिए तथा किसी भी वेबसाइट का इस्तेमाल करते समय पूर्ण सतर्कता बरतनी चाहिए। किसी भी कार्य के लिए उस आर्गेनाइजेशन की ऑफिशल वेबसाइट का ही इस्तेमाल किया जाना चाहिए। मोबाइल या ईमेल पर आए अनधिकृत लिंक पर क्लिक न करें। एटीएम का उपयोग भी अत्यंत सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। कोई भी फाइनेंशियल ट्रांजेक्शन करते वक्त अपने अकाउंट नंबर पासवर्ड तथा सीवीवी सेव नहीं करने चाहिए। मुख्य अतिथि पीएनबी बैंक मैनेजर भरत देवल ने साइबर अपराध से बचने के लिए सभी को जागरूक रहने की आवश्यकता बताई।

छात्राओं ने ड्रामा प्रस्तुत कर दिया संदेश

कार्यक्रम में छात्राओं मीनाक्षी भंसाली, कांता सोनी, नसरीन, सुनीता काजला द्वारा साइबर जागरूकता संबंधी एक प्रभावपूर्ण ड्रामा प्रस्तुत किया गया। छात्रा सुनीता काजला ने साइबर सिक्योरिटी संबंधित एक कविता तथा नेहा पारीक ने भाषण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. प्रगति भटनागर ने सभी छात्राओं को साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक करने की जरूरत बताई। कार्यक्रम के प्रारम्भ में प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने अतिथियों का स्वागत किया तथा स्वागत वक्तव्य में साइबर जागरूकता कार्यक्रमों को देश के विकास में महनीय कदम बताया। अंत में सहायक आचार्य अभिषेक चारण ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

साइबर सिक्योरिटी पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

भारत सरकार एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 2 अगस्त को साइबर जागरुकता दिवस पर संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में साइबर सिक्योरिटी पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में नवागंतुक सहित सभी छात्राओं को साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक करने का कार्य किया गया। कार्यक्रम में छात्राओं मीनाक्षी भंसाली, कांता सोनी एवं खुशी जोधा ने साइबर अपराध और उनसे होने वाले नुकसानों के साथ साइबर अपराध के विभिन्न प्रकार एवं उनसे सुरक्षित रहने के उपायों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. प्रगति भटनागर ने बताया कि विश्वविद्यालय में हर महीने के प्रथम बुधवार को होने वाले साइबर जागरूकता के लिए विभिन्न कार्यक्रमों में विषय विशेषज्ञों को बुलाकर साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया जाता है। साल भर साइबर जागरूकता से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाता है। कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने विश्व भर में बढ़ते साईबर अपराधों को ध्यान में रखते हुए साइबर जागरूकता कार्यक्रमों की आवश्यकता बताई।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के आगाज पर शपथ ग्रहण

केंद्रीय सतर्कता आयोग एवं यूजीसी द्वारा निर्देशित सतर्कता जागरूकता सप्ताह के तहत संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 30 अक्टूबर को सप्ताह के प्रथम दिन भ्रष्टाचार का विरोध करने एवं राष्ट्र के प्रति सदैव समर्पित रहने हेतु सतर्क होने के साथ-साथ जागरूक बने रहने की शपथ समस्त संकाय सदस्यों के साथ महाविद्यालय की छात्राओं को दिलाई गई। प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने शपथ दिलाने के पश्चात छात्राओं को प्रेरित किया कि वे सतर्कता आयोग के पोर्टल पर ई-शपथ भी ग्रहण करें। सतर्कता जागरूकता साप्ताहिक कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. प्रगति भटनागर ने इस अवसर पर बताया कि सप्ताह भर आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों पोस्टर प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता के साथ साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छात्राओं ने भागीदारी निभाई।

साइबर सिक्योरिटी पर ऑनलाइन पावर पॉइंट प्रतियोगिता आयोजित

भारत सरकार एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रत्येक महीने मनाए जाने वाले साइबर जागरूकता दिवस पर 5 जुलाई को संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में साइबर सिक्योरिटी विषय पर ऑनलाइन पावर पॉइंट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. प्रगति भटनागर ने बताया कि प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर बी.एससी. की छात्रा खुशी जोधा रही एवं द्वितीय स्थान बी.एससी. की ही छात्रा तानिया खान ने प्राप्त किया।

तीन दिवसीय सूचना संचार प्रोद्यौगिकी आधारित कार्यशाला आयोजित

आईसीटी कार्यशाला में अनेक वर्चुअल कार्यक्रमों का छात्राओं ने अभ्यास किया

संस्थान के शिक्षा विभाग में आयोजित तीन दिवसीय (20-22 जुलाई, 2023) सूचना संचार प्रोद्यौगिकी आधारित कार्यशाला में छात्राध्यापिकाओं को इंटरनेट गतिविधियों के संचालन, ईमेल बनाने, गूगल फार्म और उसके फंक्शंस, चैट जीपीटी अदि विभिन्न विषयों के बारे में जानकारी प्रदान करने के साथ उन्हें व्यावहारिक ज्ञान भी दिया गया। कार्यशाला में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने वर्तमान में आईसीटी आधारित ज्ञान की आवश्यकता बताते हुए कहा कि आईसीटी आधारित कार्यक्रमों की वर्तमान में सबसे अधिक आवश्यकता है। हर विद्यार्थी को आईसीटी का ज्ञान होना जरूरी हो गया है। विद्यार्थियों को सूचना, संचार और सम्बंधित तकनीकी ज्ञान होना आवश्यक बन चुका है। कार्यशाला में डॉ. अमिता जैन ने आईसीटी के बारे में बताते हुए विद्यार्थियों को ई-मेल आईडी बनाने और उसका प्रयोग करने के बारे में विस्तार से बताया। साथ ही विद्यार्थियों को प्रेक्टिकल करवाते हुए इसका अभ्यास भी करवाया गया।

कार्यशाला में छात्राध्यापिकाओं को गूगल फॉर्म बनाने एवं उसके फंक्शन के बारे में जानकारी देते हुए प्रयोगविधि समझाई। इसके आलावा चैट जीपीटी से भी रूबरू करवाया गया और इसकी कार्यविधि की जानकारी तथा अनेक वर्चुअल प्रयोगों से भी विद्यार्थियों को अवगत करवाया गया। कार्यशाला में शिक्षा विभाग की 50 छात्राध्यापिकाओं ने भाग लिया।

शिक्षा जागृति-प्रसार कार्यक्रम

व्यक्तित्व विकास ही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए

जैविभा संस्थान की प्रसार सम्बंधी गतिविधि आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग द्वारा 22 अगस्त को विमल विद्या विहार सी. सै. स्कूल में आयोजित प्रसार कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि शिक्षा जहां विद्यार्थियों को ज्ञान में वृद्धि प्रदान करती है, उसके साथ ही व्यक्तित्व विकास में भी शिक्षा का सहयोग रहता है। शिक्षा का मूल उद्देश्य नैतिक व चारित्रिक विकास होना चाहिए। उन्होंने विद्यालयीय और सामाजिक स्तर पर शिक्षा में नवाचारों, सामाजिक सहभागिता और कौशल विकास पर जोर देते हुए कहा कि इन प्रसार कार्यक्रम के महत्त्व को प्रतिपादित किया। कार्यक्रम की अतिथि डॉ. मधु गढवाल ने अनुशासन पूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि अनुशासन से जीवन में सुगढ़ता आती है। प्राचार्या रचना बालानी ने रचनात्मक, कलात्मक और सम्प्रेषण सम्बंधी कौशल को बढाने के साथ व्यक्तित्व के विकास को विद्यार्थियों के लिए महत्त्वपूर्ण बताया। छात्राध्यापिका नफीसा बानो ने जैन विश्वभारती संस्थान को अपना रोल मॉडल बताते हुए अपने शैक्षिक प्रशिक्षण के अनुभवों को साझा किया। अंत में डॉ. गिरीराज भोजक ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. मीनाक्षी मारू, अंजलि माथुर, शोभा सैन, सुमित कुमार, अभय शर्मा आदि उपस्थित रहे।

शिक्षा जागरूकता रैली आयोजित कर नुक्कड़ नाटक व गीत-संगीत से किया लोगों को जागृत

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत 17 अगस्त को शिक्षा-जागरूकता रैली निकाली गई। रैली को विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। इस रैली में करीब 200 छात्राध्यापिकाएं ग्राम भियानी व खानपुर में पहुंची, जहां उन्होंने नुक्कड़ नाटक, संगीत, नाच-गाने, कविता पाठ आदि के माध्यम से बच्चों एवं उनके अभिभावकों को शिक्षा के अधिकार अधिनियम की जानकारी दी। जागरूकता अभियान का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के महत्त्व के प्रति जागरूकता का प्रसार करना तथा स्कूलों में बच्चों का शत-प्रतिशत नामांकन कराने और स्कूल में उनका ठहराव सुनिश्चित कराना है। इस अभियान के तहत छात्रों एवं उनके अभिभावकों को उनके ही अंदाज में शिक्षा की महत्ता को समझाते हुए बताया गया कि देश के विकास में शिक्षा महत्त्वपूर्ण कड़ी है। गांव से लेकर शहर तक सभी को शिक्षा के प्रति जागरूक होकर बच्चों को शिक्षा की तरफ आकर्षित कराना चाहिए। हर माता-पिता का अपने बच्चों को स्कूल भेज कर पढाना चाहिए। इस अवसर पर कार्यक्रम की प्रभारी डॉ. सरोज राय, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. आभा सिंह आदि उपस्थित रहे।

देश को विकसित राष्ट्र बनाने में युवाओं की अहम् जिम्मेदारी- कुलपति प्रो. दूगड़

स्वतंत्रता दिवस समारोह आयोजित

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि देश ने आजादी के अमृतकाल में विकास की नई रूपरेखा तैयार की है, नवीन स्वप्नों को गढा है और आगामी 2047 तक देश को विकसित राष्ट्र बनाने का रोडमैप बनाया है। यह देश युवाओं का देश है और युवा शक्ति इस देश को विश्व के अन्य देशों की तुलना में अग्रणी राष्ट्र बनाने में सबसे अहम् भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने यहां 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस समारोह में राष्ट्रध्वज फहराने और एनसीसी परेड व सलामी के बाद सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित किया कि युवाओं को अतीत से शिक्षा लेकर भविष्य का लक्ष्य सम्मुख रख कर वर्तमान को सार्थक बनाने के लिए सतत् प्रयत्नरत रहना चाहिए। उन्होंने इस अवसर पर शहीद भगत सिंह की शहादत का उल्लेख भी किया और उनके साहस की प्रशंसा की। कार्यक्रम में छात्राओं ने राष्ट्रभक्ति के गीत, भजन, कविताएं और विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन व वीसी के ओएसडी प्रो. नलिन के. शास्त्री भी मंचस्थ रहे। इस अवसर पर प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. जिनेन्द्र जैन, प्रो. दामोदर शास्त्री, डॉ. बलवीर सिंह, डॉ. जेपी सिंह, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. लिपि जैन, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभासिंह, डॉ. विनोद कस्वा, डॉ. सरोज राय, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. मनीषा जैन, प्रगति चौरड़िया, उपकुलसचिव विनीत सुराणा, सहायक कुलसचिव दीपाराम खोजा, राजेन्द्र बागड़ी, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरधारीलाल, अजय पारीक, शरद जैन, प्रकाश गिड़िया, अमीलाल चाहर, दीपक माथुर, डॉ. सत्यनारायण शर्मा, घासीलाल शर्मा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. युवराज सिंह खंगारोत ने किया।

पांच दिवसीय सघन साधना शिविर आयोजित

साधना से व्यक्तित्व विकास के साथ शारीरिक-मानसिक शक्तियों का विकास संभव- प्रो. जैन

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग में आयोजित पांच दिवसीय (02-06 नवम्बर) सधन साधना शिविर का आयोजन कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन एवं विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत के नेतृत्व में किया गया। शिविर के समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए दूरस्थ एवं ऑनलाईन शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने समाधि के महत्त्व को बताया और शिविर के दौरान किए गए अभ्यासों को योग के मार्ग के लिए विशेष साधना बताई। कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन ने आत्म-उत्थान के लिए योग की उपयोगिता बताई तथा कहा कि साधना शिविरों से व्यक्तिव व शारीरिक-मानसिक शक्तियों का विकास होता है।

प्राकृत व संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेन्द्र जैन ने शिविर को हर व्यक्ति के लिए आवश्यक बताते हुए कहा कि कर्मचारियों सहित सभी श्रेणी के लोगों के लिए योग शिविरों का आयोजन आवश्यक है। शिविरार्थी छात्रा भाविका ने अपने अनुभवों को व्यक्त करते हुए कहा कि शिविर में उन्हें ध्यान व योग की बारीकियों को सीखने व अनुभूत करने का अवसर मिला है। अन्य शिविरार्थियों ने भी लम्बे समय तक ध्यान में लम्बे समय तक चित्त लगाने का और प्राणायाम व आसनों में विशेष अनुभव प्राप्त किए।

इस आवासीय शिविर में व्यस्ततम यौगिक दिनचर्या के तहत ध्यान व योग के प्रयोग करवाए गए। शिविरार्थियों को साध्वीश्री शशिप्रज्ञा ने प्रेक्षाध्यान विधि के प्रयोगों का अभ्यास करवाए। योग प्रशिक्षक दशरथ सिंह ने योगासनों व षट्कर्मों का अभ्यास करवाया। कायोत्सर्ग एवं अनुप्रेक्षा के प्रयोगों का अभ्यास डॉ. अशोक भास्कर, डॉ. हेमलता जोशी व डॉ. विनोद सियाग ने करवाए। डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. युवराजसिंह खंगारोत आदि योग विद्वानों ने ध्यान, योग व प्राकृतिक जीवनचर्या पर व्याख्यान दिए। विभिन्न साधुओं ने शिविर में गमन योग, मंत्रों के प्रयोग आदि का प्रेरणा-पाथेय प्रदान किया।

सतर्कता पोस्टर प्रतियोगिता में मीनाक्षी प्रथम रही

सतर्कता जागरूकता सप्ताह आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में यूजीसी एवं केंद्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार संचालित 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' के समापन कार्यक्रम में 4 नवम्बर को छात्रा खुशी जोधा ने पावरप्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से सतर्कता के जागरूकता के महत्त्व को व्यक्त किया। कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. प्रगति भटनागर द्वारा सप्ताह भर के कार्यक्रमों में करवाई गई पोस्टर प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता के साथ साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में परिणामों की घोषणा की गई। पोस्टर प्रतियोगिताओं में मीनाक्षी भंसाली प्रथम, फातिमा बानो द्वितीय एवं आरजू तृतीय स्थान पर रही। इन सप्ताह भर के आयोजनों में सुनीता काजला ने कविता पाठ किया। कांता सोनी एवं समूह ने भ्रष्टाचार पर एक नाट्य प्रस्तुति दी। साहित्यक कार्यक्रमों में छात्रा ट्विंकल भंसाली एवं नेहा पारीक ने भाषण प्रस्तुत किया। ट्विंकल भंसाली ने भ्रष्टाचार पर प्रहार करने वाले व्यंग्यात्मक गीत की प्रस्तुति दी। छात्रा सना ने निबंध लेखन किया। इन साप्ताहिक कार्यक्रमों में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने भ्रष्टाचार का विरोध करने एवं राष्ट्र के प्रति सदैव समर्पित रहने हेतु सतर्क व जागरूक बने रहने की शपथ दिलाई। इस दौरान छात्राओं ने सतर्कता आयोग के पोर्टल पर ई-शपथ लेकर जागरूकता का परिचय भी दिया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह में प्रो. रेखा तिवाड़ी, अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, मधुकर दाधीच, प्रेयस सोनी, अनूप कुमार, घासीलाल शर्मा आदि मौजूद रहे।

अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 2 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाया गया, जिसमें मुख्य अतिथि संस्कृत एवं प्राकृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जैनेंद्र कुमार जैन ने कहा कि गांधी दर्शन एवं गांधीजी के सिद्धांतों से प्रेरणा मिलती है कि साधन पवित्र होंगे तो निश्चित रूप से साध्य भी पवित्र हो जाएगा। उन्होंने कहा कि गांधी के विचारों को जैन धर्म में प्रचलित अहिंसा के सिद्धांत ने काफी प्रभावित किया था। अध्यक्षता करते हुए दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के निदेशक एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने गांधी के विचारों एवं उनके जीवन के अनेक उद्धरणों द्वारा बताया कि गांधीजी का जीवन ने केवल भारत राष्ट्र ही नहीं, अपितु संपूर्ण विश्व के जन समुदाय के लिए समर्पित रहा। उन्होंने आजीवन सत्य, अहिंसा, मानव प्रेम, पारस्परिक भाव, समरसता जैसे जीवन मूल्य के अनुरूप अपना आचरण रखा। अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवारी ने बताया कि गांधीजी के विचार जीवन को संयमित एवं अनुशासित बनाते हैं। उनके संदेशों को जीवन में उतारें तथा एक सफल नागरिक होने का परिचय दें।

अहिंसा एवं शांति विभाग के अध्यक्ष डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने प्रारम्भ में स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए गांधी दर्शन एवं गांधीजी के आचरण को उदाहरणों से स्पष्ट करते हुए गांधी दर्शन के अंतरराष्ट्रीय प्रभाव को बताया। कार्यक्रम में दीपांशी चितलांगिया, तेजस्विनी शर्मा, अनोखा, उषा टाक, माया कंवर, कोमल प्रजापत आदि ने कविताओं व वक्तव्य के माध्यम से अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का प्रारम्भ कोमल जांगिड़ तथा खुशबू शर्मा ने 'रघुपति राघव' भजन प्रस्तुत करके किया। अंत में डॉ. बलबीर सिंह ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. लिपि जैन ने किया।

सत्य, अहिंसा के साथ शिक्षा में बेहतर कार्य किया था गांधी ने- प्रो. बीना शर्मा

'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी की प्रासंगिकता' पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय केशव विद्यापीठ जामडोली जयपुर एवं जैन विश्वभारती संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में महात्मा गांधी की जयंती के उपलक्ष्य में 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी की प्रासंगिकता' विषय पर 2 अक्टूबर को राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार में विषय विशेषज्ञ केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा की पूर्व निदेशक प्रो. बीना शर्मा ने महात्मा गांधी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा सत्य एवं अहिंसा के लिए किए गए प्रयासों तथा शिक्षा के क्षेत्र में दिए गए बेसिक शिक्षा के संप्रत्यय के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होंने अलग-अलग कविताओं के माध्यम से विषय को स्पष्ट रूप से प्रकाशित किया और वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता बताई। वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए केशव विद्यापीठ समिति, जामडोली जयपुर के पूर्व प्रशासनिक अधिकारी एवं सचिव ओ.पी. गुप्ता ने गांधीजी द्वारा सत्य, अहिंसा, स्वच्छता, ग्राम विकास, दलित उत्थान तथा वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता आदि के संदर्भ में किए गए प्रयासों पर प्रकाश डाला। प्रारम्भ में वेबिनार के संयोजक व संस्थान के शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो. बी.एल जैन ने आयोजन की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए गांधी के विचारों को प्रासंगिक बताया। श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय की प्राचार्य एवं वेबिनार की संयोजिका प्रो. रीटा शर्मा ने अतिथि विशेषज्ञों का परिचय प्रस्तुत करते हुए उनका स्वागत किया। वेबिनार में देश के विभिन्न हिस्सों से लगभग 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। वेबिनार की सह संयोजिका डॉ. अमिता जैन ने अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया।

एक दिवसीय व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 9 सितम्बर को एक दिवसीय व्यक्तित्व विकास शिविर के साथ ओरिएंटेशन प्रोग्राम रखा गया। शिविर में मुख्य अतिथि कुल सचिव प्रो. बनवारी लाल जैन ने शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को एक सिक्के के दो पहलु बताते हुए दिनचर्या को व्यवस्थित बनाने पर जोर दिया। उन्होंने व्यवहार में परिलक्षित गुणों से व्यक्तित्व का वास्तविक आकलन मानते हुए यथार्थ के बारे में बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि किसी भी व्यक्ति के जीवन में नियमितता उसकी दैनिकचर्या को व्यवस्थित करती है और व्यवस्थित दैनिकचर्या से व्यक्ति चारित्रिक शुद्धता एवं विनम्रता को धारण करने में समर्थ हो सकता है। विशिष्ट अतिथि प्रो. रेखा तिवारी ने छात्राओं को सद्चरित्र का महत्त्व बताया और कहा कि अच्छे कर्मों की शुरुआत कभी भी की जा सकती है। शिविर में नवागंतुक छात्राओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। छात्रा नेहा तथा मनीषा ने राजस्थानी नृत्य प्रस्तुत किया। सुनीता काजला एवं ट्विंकल भंसाली ने कविता पाठ किया। भूमिका सेठी, प्रिया जैन तथा आईना ने विचार प्रस्तुत किये। शिविर में डॉ. विनोद कस्वा ने चरित्र निर्माण में प्रेक्षाध्यान की भूमिका का व्यावहारिक पक्ष बताया और अभ्यास करवाया। प्रारम्भ में वरिष्ठ छात्राओं मीनाक्षी भंसाली व कांता सोनी ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। स्वागत वक्तव्य अभिषेक चारण द्वारा दिया गया। अंत में श्वेता खटेड़ ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन संचालन शिविर समन्वयक डॉ. प्रगति भटनागर ने किया।

मासिक व्याख्यानमाला

'साहित्य में प्रस्थान-त्रयी का वैशिष्ट्य' पर व्याख्यान

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 'साहित्य में प्रस्थान-त्रयी का वैशिष्ट्य' शीर्षक पर प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने 4 अगस्त को व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रस्थानत्रयी में उपनिषद गीता एवं ब्रह्मसूत्र की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करते हुए कहा कि उपनिषद् को श्रुति शास्त्र एवं गीता को स्मृति शास्त्र तथा ब्रह्म सूत्र को न्याय शास्त्र के रूप में माना जा सकता है। उन्होंने वेदों के चार भाग संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद की दार्शनिक समीक्षा की, साथ ही प्रो. त्रिपाठी ने उपनिषद को वेदों का अंतिम भाग मानते हुए वेदांत शब्द की भी विस्तृत व्याख्या की। उन्होंने गीता ज्ञान के सार तत्त्व को बताते हुए कर्म, ज्ञान एवं भक्ति के समन्वित स्वरूप को आदर्श जीवन की परिपूर्ण अभिव्यक्ति बताई। उन्होंने ब्रह्मसूत्र में महर्षि बादरायण की भूमिका को शब्दगत करते हुए आचार्य गोविंद भगवदपाद् के शिष्य शंकराचार्य एवं उनके 11 भाष्यों पर प्रकाश डाला।

मासिक व्याख्यान : कंप्यूटरीकृत भाषा की स्वाभाविक विकास के साथ बेहतरीन संभावनाएं

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित मासिक व्याख्यान माला में 'इंट्रोडक्शन ऑफ नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग' विषय पर सूचना प्रौद्योगिकी की सहायक आचार्या डॉ. प्रगति भटनागर ने 28 अक्टूबर को अपने व्याख्यान में आदिमानव कालीन सभ्यता से लेकर वर्तमान तक की विकसित दुनियां की स्वाभाविक विकास प्रक्रिया के माध्यम से कंप्यूटरीकृत भाषा प्रणाली के स्वाभाविक विकास को समझाया।

उन्होंने बताया कि एनएलपी के माध्यम से वाट्सअप, जीमेल, सोशल मीडिया, ट्वीटर, चैटबोर्ड, टॉपिक मॉडलिंग आदि के सदुपयोग के साथ ही इनसे जुड़ी समस्याओं का समाधान भी किया जा सकता है। उन्होंने विभिन्न एन.एल.पी. टास्क की जानकारी भी दी। डॉ. भटनागर ने मानव एवं मशीन के स्वाभाविक अंतर बताते हुए मशीन द्वारा शब्द ग्रहण करने एवं भाव की अनभिज्ञता को मानते हुए कहा कि समय के साथ शनैः-शनैः वैज्ञानिक उपलब्धियां नित नए विकास को छू रही हैं। इस क्षेत्र में बहुत कुछ बेहतरीन संभावनाएं हैं। अध्यक्षता करते हुए प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने एन.एल.पी. को वर्तमान समय की महती आवश्यकता बताई। व्याख्यान का संयोजन अभिषेक चारण ने किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन श्वेता खटेड़ ने किया।

आंतरिक व्याख्यान माला में अंग्रेजी साहित्य में नैतिकता के मूल्य बताए

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 9 अक्टूबर को आंतरिक व्याख्यानमाला में प्रो. रेखा तिवारी ने अंग्रेजी साहित्य में नैतिकता तथा आध्यात्मिकता पर व्याख्यान देते हुए कहा कि नैतिकता और आध्यात्मिकता दर्शनशास्त्र से संबंधित विषय हैं। अंग्रेजी साहित्य में एरिस्टोटल, लिओ टॉलस्टॉय, विलियम वर्ड्सवर्थ, टी एस इलियट, डबल्यू बी यट्स आदि ने अपनी साहित्यिक रचनाओं में नैतिकता और आध्यात्मिकता के बारे में विस्तृत उल्लेख किया है। प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि धर्म हमें अध्यात्म से जोड़ता है। धर्म का संबंध परोपकार के भाव को ग्रहण करते हुए आत्म शुद्धि से है। इस दौरान डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, सुश्री श्वेता खटेड़, मधुकर दाधीच, अनूप कुमार एवं घासीलाल शर्मा आदि उपस्थित रहे। संयोजन एवं धन्यवाद ज्ञापन इतिहास व्याख्याता प्रेयस सोनी ने किया।

मासिक व्याख्यान माला में प्रबंधन के सिद्धांत व महत्व बताए

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आंतरिक व्याख्यान माला के अंतर्गत 26 अगस्त को वाणिज्य संकाय के सहायक आचार्य मधुकर दाधीच द्वारा प्रबंधन के सिद्धांत एवं महत्त्व पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। दाधीच ने प्रबंधन की अवधारणाओं, महत्व एवं कार्य पर प्रकाश डाला और बताया कि किसी भी व्यक्ति को कार्य के लिए अभिप्रेरित करना ही वास्तविक प्रबंधन है। किसी भी व्यक्ति को अति मूल्यांकित व न्यून मूल्यांकित नहीं किया जाना चाहिए, अपितु सभी व्यक्तियों का उचित मूल्यांकन करना आवश्यक है। उन्होंने व्याख्यान में कर्तव्य के साथ अधिकार भी दिए जाने की आवश्यकता बताई, ताकि कर्तव्य का निर्वाह अच्छी तरह से किया जा सके। प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने प्रबंधन का महत्त्व सर्वव्यापक मानते हुए बताया कि भावनात्मक-प्रबंधन की महती आवश्यकता बताई और समय-प्रबंधन को किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए आवश्यक बताया। धन्यवाद ज्ञापन अभिषेक चारण ने किया। कार्यक्रम का संयोजन सहायक आचार्य प्रेयस सोनी ने किया।

'भारत का गौरव : प्राकृत भाषा एवं साहित्य' विषयक मासिक व्याख्यानमाला

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा 'भारत का गौरव : प्राकृत भाषा एवं साहित्य' विषय पर एक मासिक व्याख्यामाला का संचालन लगातार किया जा रहा है। इस व्याख्यानमाला के अन्तर्गत प्रत्येक महिने एक उप विषय पर देश के ख्यातनाम विद्वान का व्याख्यान होता है। प्राकृत भाषा के उत्थान की दिशा में ये व्याख्यान मील का स्तम्भ साबित हो रहे हैं। इस व्याख्यानमाला के अन्तर्गत आयोजित मासिक व्याख्यान इस प्रकार रहे-

प्राकृत साहित्य में वर्णित ध्यान की उपादेयता व उपयोगिता पर व्याख्यान

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा चलाई जा रही 'भारत का गौरव : प्राकृत भाषा और साहित्य' विषयक मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 'प्राकृत साहित्य में ध्यान की शास्त्रीय व्याख्या : उपादेयता और उपयोगिता' विषय पर 29 जुलाई को मुख्य वक्ता मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर के डॉ. ज्योतिबाबू जैन ने कहा कि वर्तमान संदर्भ में प्रत्येक मनुष्य तनावग्रस्त है और इस तनाव को ध्यान के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है। प्राकृत साहित्य में ध्यान के विषय में अनेक स्थानों पर विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। उन्होंने ध्यान के भेदों का भी वर्णन करते हुए बताया कि मनुष्य हमेशा इनमें से किसी न किसी ध्यान में रहता है। इनमें सिर्फ शुक्ल व धर्म ध्यान को ही सभी भेदों में श्रेष्ठ माना गया है। डॉ. जैन ने कहा, यदि जीवन को सुखी व मस्तिष्क को स्थिर बनाना है, तो हमें जीवन में ध्यान को अपनाना होगा।

व्याख्यान के अंत में प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि ध्यान हमें सूक्ष्म दृष्टि प्रदान करता है, अतः हमें निश्चय नय के द्वारा प्रत्येक वस्तु को देखना चाहिए। ध्यान के लिए एकाग्रता चाहिए। वर्तमान में समस्त मनुष्य जगत् अस्थिर और तनावग्रस्त हो रहा है, ऐसे में उसे ध्यान की अधिक आवश्यकता है। विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेन्द्र जैन ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि ध्यान के दो भेद हैं, प्रशस्त और अप्रषस्त। इनमें अप्रक्षस्त ध्यान व्यवहार में रहता है, लेकिन जब मन आत्मा में विलीन हो जाता है, तब प्रशस्त ध्यान की प्रभावना होती है। जैन, वैदिक और बौद्ध तीनों ही परम्पराओं में ध्यान पर समान रूप से बल दिया गया है। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्राकृत अध्ययन की बहनों द्वारा मंगलाचरण से किया गया। स्वागत भाषण व विषय प्रवर्तन डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया तथा अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सव्यसाची सारंगी ने किया। इस व्याख्यान में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 35 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

संस्कृत और बौद्ध साहित्य भारतीय संस्कृति के परिचायक : प्रो. विजय कुमार जैन

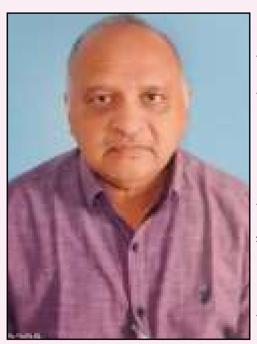

'भारतीय संस्कृति में संस्कृत, प्राकृत एवं पाली साहित्य का समान महत्त्व रहा है और आपस में इनका एक-दूसरे पर प्रभाव दृष्टिगत होता है। फिर भी प्राकृत एवं बौद्ध साहित्य का एक-दूसरे प्रभाव अधिक देखा जा सकता है। विषय की दृष्टि से दोनों परम्पराओं के साहित्य में भी अधिक समानता है।' ये विचार भोगीलाल लहरचन्द इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्डोलॉजी के निदेशक प्रो. विजय कुमार जैन ने 26 अगस्त को आयोजित मासिक व्याख्यानमाला के "प्राकृत एवं बौद्ध संस्कृत साहित्य : प्रभाव एवं वैशिष्ट्य" विषयक 26वें व्याख्यान के मुख्य वक्ता के रूप में प्रस्तुत करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने अनेक उदाहरणों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि प्राकृत और बौद्ध साहित्य का एक दूसरे पर अत्यधिक प्रभाव है और दोनों का वैशिष्ट्य भी अतुलनीय है।

अध्यक्षीय वक्तव्य में विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो जिनेन्द्र जैन ने प्रो. विजय कुमार जैन के व्यक्तव्य का समर्थन किया और उनको साधुवाद व्यक्त किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ आकर्ष जैन के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत एवं संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया तथा आभार ज्ञापन डॉ. सव्यसाची सारंगी ने किया। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 40 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

प्राकृत सट्टक-नाटक भारतीय संस्कृति के प्रतिबिम्ब है- प्रो. जयकुमार जैन

मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 30 सितम्बर को 'प्राकृत सट्टक परम्परा और उसका सांस्कृतिक वैशिष्ट्य' विषय पर व्याख्यान करते हुए प्रो. जयकुमार जैन ने बताया कि जिस प्रकार संस्कृत में नाटक की परम्परा है, उसी प्रकार प्राकृत साहित्य की विधाओं में सट्टक की परम्परा है। इन सट्टकों में भारतीय सांस्कृतिक वैभव को भलीभांति प्रस्तुत किया गया है। प्राकृत सट्टक भारतीय संस्कृतिक के वाहक या प्रतिबिम्ब माने जाते हैं। संस्कृत में नाटक हो या प्राकृत के सट्टक हों, दोनों रचनाएं मनोरंजन के लिए की जाती है। ये सभी रूपक साहित्य के अंतर्गत परिगणित हैं। प्रो. जैन ने कहा कि प्रथम सट्टक की रचना दसवीं शताब्दी के राजशेखर ने कर्पूरमंजरी में प्राकृत भाषा में की, क्योंकि प्राकृत भाषा सुकुमार होने के कारण अल्पज्ञों को भी समझ में आने वाली थी।

प्रो. जैन ने प्राकृतिक सट्टकों के विविध आयामों अथवा तत्वों पर अनेक उदाहरणों के माध्यम से प्रकाश डाला और सट्टकों में वर्णित प्रसंगों के माध्यम से उनमें सांस्कृतिक वैभव का प्रतिपादन किया। कार्यक्रम में प्रो. दामोदर शास्त्री व प्रो. जगतराम भट्टाचार्य ने भी सट्टक परम्परा पर प्रकाश डालते हुए इनके सांस्कृतिक वैभव को प्रतिपादित किया। अध्यक्षीय वक्तव्य में आभार ज्ञापित करते हुए प्रो. जिनेन्द्र जैन ने सट्टक को लोक-नाट्य के रूप में प्रस्तुत किया तथा बताया कि सट्टकों में सांस्कृतिक वैभव मन को आह्लादित करता है। इनमें मनोरंजन के साथ ही संवादों की परिपक्वता और आध्यात्मिकता व आदर्श प्रेम का प्रतिपादन भी हुआ है। अन्त में उन्होंने सभी विद्वान् प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ मीना कोठारी के मंगलाचरण से हुआ।

स्वागत वक्तव्य एवं विषय प्रवर्तन डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सब्यसांची सारंगी ने किया तथा संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। देश के लगभग सभी क्षेत्रों से 30 प्रतिभागियों ने इस व्याख्यान में सहभागिता की।

अहिंसा, संयम एवं तप के सैद्धान्तिक समन्वय के वाहक हैं, जैन एवं बौद्ध दर्शन - प्रो. प्रद्युम्न शाह

मासिक व्याख्यानमाला में 28 अक्टूबर को "प्राकृत मूलसूत्र एवं धम्मपद में सैद्धान्तिक समन्वय" विषयक 28वें व्याख्यान के मुख्य वक्ता बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रो. प्रद्युम्न शाह सिंह ने कहा कि भगवान महावीर और भगवान बुद्ध दोनों ही एक ही समय के महान चिन्तक और दार्शनिक रहे हैं। दोनों ने सम्पूर्ण जगत् के कल्याण के लिए कार्य किया। उनके उपदेशों का लिखित रूप ही प्राकृत मूलसूत्र और धम्मपद हैं। इन शास्त्रों में लिखे सिद्धान्तों को सम्यक रूप से जानकर ही मनुष्य अपना कल्याण कर सकता है। उन्होंने बताया कि भगवान महावीर ने प्राकृत भाषा में तथा भगवान बुद्ध ने पालि भाषा में अपने व्याख्यान दिये, क्योंकि तब ये भाषाएँ लोक भाषाएं रही थीं।

प्रो. शाह ने धर्मसंघ को व्याख्यापित करते हुए संघ और धर्म को एक-दूसरे का पूरक बताया। साथ ही उन्होंने आगमों एवं धम्मपद के महत्त्व के साथ इन शास्त्रों में वर्णित अहिंसा, संयम, तप, विनय और आचार को विस्तार से व्याख्यायित किया। अध्यक्षीय वक्तव्य में विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेन्द्र जैन ने कहा कि जैन दर्शन आत्मवादी दर्शन है और बौद्ध दर्शन अनात्मवादी दर्शन है लेकिन दोनों ही दर्शनों में अहिंसा, संयम तप, विनय, मोक्ष आदि सिद्धान्तों का समन्वय प्राप्त होता है।

कार्यक्रम का प्रारम्भ सपना जैन एवं बॉबी जैन के मंगलाचरण से हुआ, स्वागत व विषय-प्रवर्तन डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने किया। डॉ. सब्यसाची सारंगी ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 40 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

तनाव प्रबन्धन का प्रमुख तत्त्व है- मन का नियन्त्रण- डॉ. तृप्ति जैन

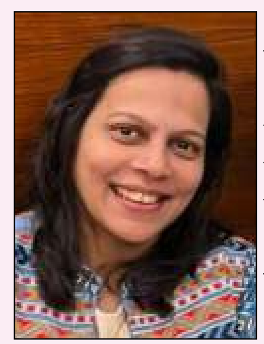

मासिक व्याख्यानमाला के 29वें व्याख्यान की मुख्य वक्ता जैन विश्वविद्यालय, बैंगलुरू के जैन अध्ययन केन्द्र की अध्यक्षा एवं सह-आचार्या डॉ. तृप्ति जैन ने 28 नवम्बर को तनाव की उत्कृष्ट स्थिति और चारों ओर तनाव के अनेक कारण विद्यमान होने का उल्लेख करते हुए तनाव क्रोध, भय चंचलता व मानसिक विकारों का जन्मदाता बताया तथा कहा कि आगमों का भलीभांति अध्ययन करने पर अनेक ऐसे सूत्र मिलते हैं, जो तनाव को प्रबन्धित करने में सहायक है। उन्होंने आगमों से तनाव-प्रबन्धन के अनेक सूत्रों को उद्धृत किया तथा तनाव की विस्तृत परिभाषा एवं भेद-प्रभेदों को मनोवैज्ञानिक आधार पर प्रस्तुत किया तथा तनाव का मूल कारण राग-द्वेष को माना।

डॉ. जैन ने प्रशस्त तनाव एवं अप्रशस्त तनाव के रूप में प्रमुख दो भेदों का विस्तृत विवेचन करते हुए तनाव उत्पन्न होने में कर्मो को भी प्रमुख बताया। साथ ही तनाव का आधार मन को बताया। उन्होंने प्राकृत आगमों से सिद्धान्तों को उद्धृत कर, सोदाहरण व्याख्या प्रस्तुत की तथा तनाव-प्रबंधन करने के लिए आगमों में वर्णित मन को नियन्त्रित करने की बात करते हुए कहा कि यदि हमारा मन नियन्त्रण में रहेगा, तो हम तनाव-मुक्त हो सकते हैं। प्रो. सुषमा सिंघवी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए, आगमों में वर्णित तनाव प्रबन्धन और भेद विज्ञान विषय की व्याख्या की।

प्रो. दामोदर शास्त्री ने तनाव प्रबंधन में कायोत्सर्ग को प्रमुख मानते हुए कहा कि तनाव की अनुभूति केवल चेतन पदार्थ में ही होती है। उन्होंने आगमों के अनेक उदाहरणों से तनाव-प्रबन्धन की व्याख्या की। अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो जिनेन्द्र जैन ने तनाव-प्रबंधन में कषाय विजय को प्रमुख माना तथा कहा कि तीर्थंकरों के जीवन से प्रेरणा लेकर स्वयं को संयत कर समता को धारण करना तनाव के प्रबंधन में मुख्य भूमिका निभा सकता है। कार्यक्रम का शुभारम्भ आकर्ष जैन के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत एवं संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया तथा आभार ज्ञापन डॉ सब्यसाची सारंगी ने किया। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 35 प्रतिभागियों की सहभागिता रही।

आधुनिक जीवन में अधिक महत्त्वपूर्ण है योग- प्रो. पांडे

पार्श्वनाथ विद्यापीठ के निदेशक प्रो. शिवप्रकाश पाण्डे ने कहा है कि, भारतीय संस्कृति अध्यात्मपरक संस्कृति रही है तथा इसमें योग का महत्त्वपूर्ण स्थान है। दुःख निवृत्ति और शाश्वत सुख का आगम योग के माध्यम से ही होता है। अतः आज के युग में योग का अत्यधिक महत्त्व है। वे यहां 23 दिसम्बर को आयोजित मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 'प्राकृत वाङ्मय में योग : शास्त्रीय वैशिष्ट्य एवं तुलनात्मक समीक्षा' विषयक 30वें व्याख्यान में मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने योग के अनेक भेदों-उपभेदों पर भी विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की।

योग-विषयक साहित्य का भी विस्तृत परिचय प्रस्तुत करते हुए उन्होंने योग का समग्र विवेचन प्रस्तुत किया। प्रो. पाण्डे ने योग की तुलनात्मक विवेचना प्रस्तुत करते हुए कहा कि पाणिनी के योग जैन-दर्शन में अयोग के समकक्ष है। मन, वचन, काय की क्रिया को बन्ध का कारण होने के कारण जैनदर्शन में योग कहा गया है, अतः अयोग को आत्मशुद्धि का कारण माना गया है। इस प्रकार योग का आधुनिक जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। उन्होंने कर्मों का भी उल्लेख करते हुए इन सभी कर्मों के क्षय के लिए योग को महत्त्वपूर्ण बताया। कायोत्सर्ग की भी महती भूमिका पर उन्होंने विस्तृत प्रकाश डाला।

त्रिदेवों की योग परम्परा

इस अवसर प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि वेदों में ज्ञान, कर्म, और भक्ति को योग कहा गया है। ये योग हमारे परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति में सहायक है। ऋषभ को ज्ञान योग, ब्रह्मा को कर्मयोग तथा विष्णु को भक्ति योग के रूप में माना गया है, जो हमारी भारतीय संस्कृति की विशेषता है। अध्यक्षता करते हुए प्रो. जिनेन्द्र जैन ने जैन योग-परम्परा में त्रियोग की विवेचना की। उन्होंने आगमों में आई ध्यान की परम्परा पर भी विस्तृत प्रकाश डाला।

इस अवसर भी अनेक प्रतिभागियों ने जिज्ञासाएं भी रखी, जिनका समाधान मुख्य वक्ता प्रो. शिवप्रकाश पाण्डे तथा उपस्थित विद्वानों ने किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ छात्रा अदिति अग्रवाल के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण एवं विषय-प्रवर्तन डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सब्यसाची सारंगी ने किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस व्याख्यान में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 35 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

छात्राध्यापिकाओं के दल ने किया शैक्षणिक भ्रमण

आमेर, नाहरगढ, जलमहल आदि का भ्रमण कर किया ज्ञानवर्द्धन

संस्थान के शिक्षा विभाग की 70 छात्राध्यापिकाओं का एक दल शैक्षिक भ्रमण के लिए 30 जुलाई को जयपुर पहुंचा, जहां इन्होंने आमेर का किला, जलमहल, नाहरगढ़ का किला, बाईलोजीकल पार्क, मोती डूंगरी गणेश मंदिर, बिड़ला मन्दिर आदि देखे और उनकी जानकारी प्राप्त की। छात्राध्यापिकाओं ने इतिहास, पुरातत्व, पुरातन कला, प्राकृतिक सौंदर्य, धर्म-संस्कृति आदि को प्रत्यक्ष देखा और उनके बारे में अपना ज्ञानवर्द्धन किया।

वापसी में खाटूश्यामजी होते हुए श्याम मंदिर के दर्शन किए। संस्थान पहुंच कर छात्राध्यापिकाओं ने अपनी यात्रा को सफल बताया और कहा कि इस भ्रमण से उन्हें जितना ज्ञान अर्जित किया, वह पुस्तकों के अध्ययन से संभव नहीं था। उन्होंने हर वस्तु को नजदीक से और बारीकी से देखा और जाना। इस दल में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन, शैक्षिक भ्रमण प्रभारी डॉ. सरोज राय, डॉ. अमिता जैन एवं कर्मचारी हीरालाल साथ रहे।

छात्राओं के दल ने किया उदयपुर व चित्तौड़ का शैक्षणिक भ्रमण

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के 44 सदस्यीय छात्राओं के दल ने प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी के निर्देशन एवं संकाय सदस्य डॉ. प्रगति भटनागर अभिषेक चारण, सुश्री श्वेता खटेड़ व प्रेयस सोनी की अगुवाई में 11 से 13 अक्टूबर तक उदयपुर एवं चित्तौड़ जिलों के ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण किया। यह दल 11 अक्टूबर को प्रातः संस्थान परिसर से रवाना होकर उदयपुर पहुंचा, जहां प्रसिद्ध फतेहसागर झील, सिटी पैलेस एवं पिछोला झील की अनुपम छटा का आनंद लिया।

इस दौरान समूह ने पिछोला झील में बोटिंग का लुत्फ उठाया एवं उदयपुर के प्रसिद्ध हाथीपोल मार्केट एवं सेलिब्रेशन मॉल में जमकर खरीदारी का आनंद भी लिया। 13 अक्टूबर को प्रातः उदयपुर से रवाना होकर यह दल राजस्थान के प्रसिद्ध सांवरिया सेठ मंदिर के दर्शन करते हुए चित्तौड़ पहुंचा, जहां पद्मिनी जौहर कुंड, विजय स्तंभ, पद्मिनी महल एवं कालीमाता मंदिर के दर्शन करते हुए पुनः जैन विश्व भारती परिसर पहुंचा। छात्राओं ने उदयपुर में तेरापंथ भवन में ठहराव हेतु मिली उत्तम सुविधाओं एवं यात्रा के दौरान समुचित व्यवस्थाओं के प्रति प्रसन्नता जाहिर की।

एमओयू के तहत छह दिवसीय एक्सचेंज प्रोग्राम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग के साथ श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय एवं केशव विद्यापीठ जामडोली जयपुर से किए गए एम.ओ.यू. के अनुसार एक सप्ताह का एक्सचेंज प्रोग्राम 9 से 14 अक्टूबर तक आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत 14 अक्टूबर को शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि इस प्रकार के कार्यक्रम से शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षा का विस्तार, शिक्षा का संवर्धन होता है। श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, केशवविद्यापीठ, जामडोली, जयपुर की प्राचार्या प्रो. रीटा शर्मा ने कहा कि एक्सचेंज प्रोग्राम से ज्ञान का अधिक विनिमय होता है और विद्यार्थियों को अन्य संस्थान की नवीन जानकारी, अध्ययन की नूतन प्रक्रिया सीखने को मिलती है।

अंग्रेजी शिक्षण की चुनौतियों व समस्याओं पर दिया जोर

कार्यक्रम के अंतर्गत अंग्रेजी विषय से संबंधित कक्षाओं का आयोजन किया गया, जिसमें कार्यक्रम में 9 अक्टूबर को श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर के डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा ने अंग्रेजी विषय पर अपने व्याख्यान में कहा कि अंग्रेजी विषय का ज्ञान वर्तमान की आवश्यकता है। अंग्रेजी विषय के अंतर्गत अनेक विधाएं हैं, जो हमारे शिक्षण को रुचिकर बनाती हैं। डॉ. शर्मा ने गद्य शिक्षण पर अपना प्रकाश डाला और कहा कि इसके अंतर्गत अनेक उद्देश्यों को निर्धारित करते हुए पाठ को विकसित किया जा सकता है। इसके तहत 10 अक्टूबर को अंग्रेजी विषय में जितनी गद्य शिक्षण की आवश्यकता है, उतनी ही पद्य शिक्षण की भी आवश्यकता बताई गई। पद्य शिक्षण में विद्यार्थी आनंद पूर्वक मनोरंजनात्मक पूर्वक पढ़ते हैं। छात्रों की पद्य शिक्षण के सम्बंध में क्रियाओं की जानकारी दी गई।

एक्सचेंज के तहत 11 अक्टूबर को कहानी लेखन की प्रक्रिया बताई और कहा कि कहानी के माध्यम से विद्यार्थी कठिन से कठिन विषय वस्तु को भी सरल रूप में समझ सकते हैं। इसके माध्यम से पाठयोजना के गुर भी सिखाये। 12 अक्टूबर को निबंध, पत्र आदि की जानकारी दी गई और डिक्सनरी एवं इनसाइक्लोपीडिया के बारे में बताया और दोनों के अंतर को स्पष्ट किया। साथ ही संप्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया को भी समझाया। 13 अक्टूबर को अंग्रेजी भाषा के शिक्षण में आने वाली परेशानियों एवं चुनौतियों की जानकारी दी गई। 14 अक्टूबर को भारतीय स्कूल पाठ्यक्रम में अंग्रेजी की स्थिति के बारे में बताया गया तथा त्रिभाषा सूत्र से भी अवगत करवाया।

एंटी रैगिंग डे पर कार्यक्रम आयोजित

यूजीसी के निर्देशानुसार संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में एंटी रैगिंग डे का आयोजन 12 अगस्त को किया गया। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. प्रगति भटनागर ने बताया कि शिक्षण संस्थानों में रैगिंग के बढ़ते हुए मामलों को देखते हुए जागरूकता हेतु यूजीसी के 12 से 18 अगस्त तक एंटी रैगिंग सप्ताह मनाने के निर्देश थे। कार्यक्रम में छात्रा खुशी जोधा ने रैगिंग से होने वाले दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला तथा बताया कि यूजीसी ने रैगिंग से निपटने के लिए हर विश्वविद्यालय में एंटी रैगिंग सेल बनाने के निर्देश देकर अच्छा काम किया हैं। साथ ही हर विद्यार्थी को प्रत्येक वर्ष एंटी रैगिंग एफिडेविट भी भरना होता है। कॉलेज के प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि रैगिंग का स्वरूप वर्तमान में भयावह हो चुका है और यह विद्यार्थी के लिए मानसिक एवं शारीरिक प्रताड़ना का कुत्सित रूप धारण कर चुका है। सभी सीनियर छात्राओं को अपने जूनियर से सदैव मैत्रीपूर्ण बर्ताव रखना तथा उनकी सहायता करना चाहिए। कार्यक्रम की सह संयोजक श्वेता खटेड़ ने कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में प्रो. रेखा तिवारी, अभिषेक चारण, प्रेयस सोनी, मधुकर दाधीच, अनूप कुमार, घासीलाल शर्मा आदि संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

एंटी रैगिंग को लेकर विशेष बैठक आयोजित

संस्थान के एंटी रैगिंग प्रकोष्ठ के संयोजक प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि संस्थान में एक एंटी रैगिंग स्क्वाड भी गठित किया गया है, जो लगातार इस प्रकार की गतिविधियों की निगरानी करता है। यहां शिक्षा विभाग में 12 जुलाई को आयोजित एक विशेष बैठक में उन्होंने संस्थान की एंटी रैगिंग गतिविधियों के बारे में जानकारी दी और बताया कि वर्तमान में एंटी रैगिंग प्रकोष्ठ में 9 सदस्य हैं और एंटी रैगिंग स्क्वॉड में 3 सदस्य हैं। रैगिंग-रोधी प्रकोष्ठ के चेयरमैन कुलपति प्रो. बीआर दूगड़ हैं। संयोजक कुलसचिव प्रो. बी. एल. जैन ने बताया कि इस प्रकोष्ठ की यूजीसी के नियमानुसार एक समिति का गठन किया गया है। प्रकोष्ठ की गतिविधियों का जायजा लेने के लिए इस समिति की नियमित बैठक होती है। विश्वविद्यालय में आज तक रैगिंग की कोई घटना सामने नहीं आई है। एंटी रैगिंग की जानकारी विश्वविद्यालय के प्रॉस्पेक्टस में भी प्रकाशित हैं।

इस सम्बंध में सभी आवश्यक दिशा-निर्देश समस्त विभागों, कैंटीन और छात्रावासों में प्रदर्शित किए जाते हैं। यू.जी.सी. के पत्र की अनुपालना में 12 जुलाई से 18 अगस्त तक इस प्रकोष्ठ द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। कार्यक्रम में विभाग के डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ.गिरधारीलाल, खुशाल जांगिड, डॉ. सरोज रॉय, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन एवं शिक्षा विभाग की बी.एड,बी.ए.-बी.एड एवं बी. एस.सी-बी.एड की छात्राध्यपिकाएं उपस्थित रहीं।

'ऑनलाइन सुरक्षित रहें अभियान' के तहत वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित

भारत सरकार के इलेक्ट्रोनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार संस्थान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में चल रहे 'ऑनलाइन सुरक्षित रहें अभियान' के अंतर्गत 'साइबर अपराध एवं सुरक्षा के उपाय' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन 15 जुलाई को किया गया। कार्यक्रम में साइबर स्टोकिंग, साइबर बुल्लिंग, फिशिंग, बैंकिंग फ्रॉड आदि साइबर अपराधों के विविध स्वरूपों पर विचार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम में दिव्या पारीक ने बताया कि साइबर स्टोकिंग के अंतर्गत अपराधी द्वारा पीड़ित के सोशल-मीडिया अकाउंट के माध्यम से बार-बार परेशान किया जाता है, जिसमें पीड़ित को फॉलो करना, धमकी भरे सन्देश भेजना, बार-बार फोन करना, अश्लील तस्वीरें भेजना एवं इसी प्रकार के अन्य कृत्यों के माध्यम से दूसरे व्यक्ति को परेशान किया जाता है। तानियां खान ने बताया कि साइबर बुल्लिंग के अंतर्गत अपराधी द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से दोस्ती बढाकर अन्य व्यक्तियों से नजदीकी बढ़ाना एवं बाद में उन्हें निजी जानकारियों को लेकर परेशान किया जाता है। आशना ने फिशिंग पर चर्चा करते हुए बताया कि फिशिंग का प्रमुख कारण स्पैम ईमेल का उपयोग है। मंजू ने विभिन्न बैंकिंग फ्रॉड्स पर अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ मनीष भटनागर कहा कि प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ते साइबर अपराध चिंतनीय है। थोड़ी सी लापरवाही आर्थिक, मानसिक एवं सामाजिक आघात पंहुचा सकती है। कार्यक्रम संयोजक डॉ. गिरधारी शर्मा ने 'स्टे सेफ ऑनलाइन' अभियान के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में शिक्षा संकाय के सभी सदस्य डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. सरोज राय, डॉ. गिरिराज भोजक, प्रमोद ओला, खुशाल जांगिड़ एवं सभी विद्यार्थियों की सहभागिता रही।

75 दिवसीय भारतीय भाषा उत्सव मनाया

संस्थान के शिक्षा विभाग में एन.सी.टी.ई. एवं यू.जी.सी. के निर्देशों से 28 सितम्बर से 11 दिसम्बर तक चलने वाले 'भारतीय भाषा उत्सव' के 75 दिवसीय कार्यक्रमों की श्रृंखला में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

शिक्षा में परंपरा और नवीनता का मिश्रण जरूरी- प्रो. जैन
'मूल्य शिक्षा का महत्त्व' पर सेमिनार आयोजित

'भारतीय भाषा उत्सव' के 75 दिवसीय कार्यक्रम में शिक्षा विभाग में विभाग 'मूल्य शिक्षा का महत्त्व' विषय पर सेमिनार का आयोजन 8 नवम्बर को किया गया। कार्यक्रम में प्रभारी कुलसचिव व विभागाध्यक्ष प्रो. बनवारी लाल जैन ने कहा कि मूल्य शिक्षा व्यक्तियों के व्यक्तित्व विकास पर जोर देती है, ताकि उनका भविष्य संवर सके और कठिन परिस्थितियों से आसानी से निपटा जा सके। शिक्षा में परंपरा और नवीनता का मिश्रण होना चाहिये। विद्यार्थी को केवल किताबी ज्ञान तक ही सीमित न रख कर उसे जीवन के व्यवहारिक ज्ञान की भी शिक्षा देनी आवश्यक है। विद्यार्थी को दी जाने वाली नैतिक मूल्यों की शिक्षा का प्रभाव उस पर जीवन पर्यंत बना रहता है। यह चरित्र निर्माण का आधार होता है। नैतिक मूल्यों के उत्थान में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहती है। कार्यक्रम प्रभारी डॉ. सरोज राय ने कहा कि जीवन में जीवन मूल्य शिक्षा महत्त्वपूर्ण होती है। मूल्य शिक्षा के माध्यम से समाज में सकारात्मक मूल्यों की क्षमताओं और अन्य व्यवहार को विकसित किया जाता है। मूल्य शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अधिक नैतिक और लोकतांत्रिक समाज बनाना है। अंत में डॉ. अमिता जैन ने आभार ज्ञापित किया।

भारतीय गणितज्ञ विषय पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित

भारतीय भाषा उत्सव के अंतर्गत 9 नवम्बर को भारतीय गणितज्ञ विषय पर भाषण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि साहित्य और विज्ञान से लेकर कला और रंगमंच तक असाधारण प्रतिभाशाली व्यक्तियों के कारण भारत सभी क्षेत्रों में अग्रणी रहा है। गणित एक अनुशासन के रूप में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भारतीय गणितज्ञों ने दुनियां की समझ को चुनौती दी और अपने पीछे महत्त्वपूर्ण खोज और अनुसंधान की विरासत छोड़ गए। ब्रह्मगुप्त ज्यामिति और संख्या प्रणाली के क्षेत्र में अपने अद्वितीय योगदान के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। उनका सबसे बड़ा योगदान शून्य को एक संख्या के रूप में मानना था, जो गणित की प्राचीन दुनियां के लिए अग्रणी अवधारणा थी। उन्होंने शून्य के प्रयोग के सभी नियम एवं मानक स्थापित किए, जिसके परिणामस्वरूप गणित में संख्या प्रणाली का वर्तमान स्वरूप विकसित हुआ। उन्होंने चक्रीय चतुर्भुज के लिए ब्रह्मगुप्त के प्रमेय पर काम किया जो उनके समय की एक प्रमुख खोज थी। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अमिता जैन ने किया।

अनुच्छेद लेखन प्रतियोगिता में दिलाशा प्रथम रही

भारतीय भाषा उत्सव के अंतर्गत 12 अक्टूबर को अनुच्छेद लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलसचिव एवं शिक्षा विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने लेखन शैली की आवश्यकता बताते हुए कहा कि इससे छात्रों में लेखन की प्रवृत्ति का विकास

होता हैं। कार्यक्रम में लगभग 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें से प्रथम स्थान पर दिलाशा पंवार रही। द्वितीय स्थान पर कोमल प्रजापत और तृतीय स्थान पर ज्योति बुरड़क रही। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अमिता जैन ने किया।

क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

भारतीय भाषा उत्सव के अंतर्गत 13 अक्टूबर को क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 'भारत के संविधान में उल्लिखित 22 भाषाओं के विभिन्न शब्दों पर प्रश्नोत्तरी' पर आधारित इस क्विज में लगभग 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर सुमन रेगर रही। द्वितीय स्थान पर मनीषा गोदारा, ज्योति बुरड़क, हर्षिता स्वामी, मोनिका बुरड़क रही। तृतीय स्थान पर देविका चौधरी, मोनिका ठोलिया, प्रियांशी शर्मा, प्रगति शर्मा, कविता, सीमा भाटी रही। कार्यक्रम के अध्यक्ष विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने विभिन्न भाषाओं के ज्ञान को संवाद शैली को बढ़ाने वाला बताया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अमिता जैन ने किया।

'नैतिकता एक सदाचार' नाटक का मंचन

भारतीय भाषा उत्सव कार्यक्रमों की श्रृंखला में 6 नवम्बर को छात्राध्यापिकाओं द्वारा मूल्य शिक्षा पर आधारित नुक्कड़ नाटक 'नैतिकता एक सदाचार' का मंचन किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बनवारी लाल जैन ने इस अवसर पर कहा कि नैतिकता नाटकों में नायक समग्र रूप से मानवता या औसत

आदमी का प्रतिनिधित्व करता है। नैतिकता मानव समाज का एक अभिन्न अंग है। कार्यक्रम की प्रभारी डॉ. सरोज राय ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि नाट्य क्रियाओं के दौरान छात्रों को विभिन्न भूमिकाओं का अनुभव उन्हें विशेष रूप से शिक्षित करता है, जो उनके जीवन में काम आते हैं। नाटक के क्रम में रचनात्मक विकल्पों की तलाश, नये विचारों को सोचना, परिचित वस्तुओं को नवीन तरीकों से दर्शकों के सामने रखना आदि क्रियाओं बच्चों की कल्पनाशीलता में वृद्धि करती हैं।

गायन प्रतियोगिता में रेणु मनोत प्रथम रही

संस्थान के शिक्षा विभाग में भारतीय भाषा उत्सव के अंतर्गत

विभिन्न कार्यक्रमों के सन्दर्भ में 18 नवम्बर को गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलसचिव एवं शिक्षा विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि गीत हमारी धरोहर है। अलग-अलग क्षेत्रों के गीत हमारी संस्कृति में जीवन्तता लाते हैं। रेणु, रेणु मनोत, दिव्या, मुस्कान बल्खी, राधिका आदि प्रतिभागियों ने अलग-अलग क्षेत्रों के गीत प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में लगभग 60 छात्राएं उपस्थित रहीं। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रेणु मनोत, द्वितीय स्थान पर रेणु और तृतीय स्थान पर दिव्या रही। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अमिता जैन ने किया।

'त्रिस्तरीय भाषा नीति' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में भारतीय भाषा उत्सव के अंतर्गत 23 नवम्बर को "त्रिस्तरीय भाषा नीति" विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 20 छात्राध्यापिकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम प्रभारी डॉ. सरोज राय ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि वाद-विवाद में भागीदारी समस्या समाधान और नवीन सोच को बढ़ावा देती है और छात्रों को शब्दों और विचारों के बीच संबंध बनाने में मदद करती है, जो अवधारणाओं को अधिक सार्थक बनाती है। वाद-विवाद व्यक्तित्व के विकास में भी सहायक होता है। वाद-विवाद छात्रों को आलोचनात्मक सोच, संचार कौशल, अनुसंधान तकनीक और सुनने के कौशल सिखाता है।

पोस्टर प्रतियोगिता में दिव्या प्रथम रही

संस्थान के शिक्षा विभाग में आयोज्य भारतीय भाषा उत्सव में 30 नवम्बर को 'विद्यालय की ओर' विषय पर पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर दिव्या पारीक रही। द्वितीय स्थान पालू एवं तृतीय स्थान पर अनिषा खीचर, भवानी लाखन और चंदा मेघवाल ने स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अमिता जैन ने किया।

स्वतंत्रता सेनानियों एवं शहीदों के सम्मान में प्रदर्शनी व कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा अमर शहीदों एवं स्वतंत्रता सेनानियों को याद करने एवं उनके प्रति सम्मान की भावना व जागरूकता बढ़ाने के लिए नजदीकी ग्राम भियानी में राजकीय विद्यालय के समीप 23 अगस्त को एक प्रदर्शनी लगाई गई। कार्यक्रम में नन्हे-मुन्ने बच्चों को राष्ट्रीय नेताओं, अमर शहीदों एवं स्वतंत्रता सेनानियों की जीवनी उनके योगदान एवं उनके जीवन आदर्शों के बारे में जानकारी प्रदान की गई एवं बच्चों को उनके जीवन मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा दी गई। कार्यक्रम में विभाग के सहायक आचार्य डॉ. बलबीर सिंह एवं सिमरन, निशा पारीक, हरून्निशा, संगीता, उषा, निशा, सारा बानो, रुचिका आदि छात्राएं भी उपस्थित रही। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।

'मेरी माटी मेरा देश' अभियान

(भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय एवं यूजीसी के निर्देशानुसार एवं कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति के 75 वर्षों की पूर्णता पर हो रहे आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रमों की श्रृंखला में 'मेरी माटी मेरा देश' का एक अहम् पंचदिवसीय कार्यक्रम 'पंचप्रण' के रूप में विश्वविद्यालय में श्रृंखलाबद्ध तरीके से आयोजित किया गया।)

मातृवंदना कलश में एक-एक मुट्ठी मिट्टी का संग्रहण पांच दिवसीय 'पंच प्राण' कार्यक्रम श्रृंखला के तहत ली मातृवंदना की शपथ

'मेरी माटी-मेरा देश' अभियान के तहत आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने 16 अगस्त को छात्राओं एवं स्टाफ सदस्यों को मातृवंदना के प्रति आस्था व पंचप्रण के प्रति समर्पण की शपथ दिलवाई। कार्यक्रम में सभी शिक्षकों एवं छात्राओं ने मातृवंदना कलश में एक-एक मुट्ठी मिट्टी का योग देकर देश के स्वाभिमान एवं सम्मान को बनाए रखने का संकल्प लिया। एकता और अखंडता के प्रतीक मिट्टी के घड़े के रूप में निर्मित एवं परम्परागत रंगों से सुसज्जित 'मातृवंदना-कलश' में अलग-अलग जगहों से लाई गई एक-एक मुट्ठी मिट्टी को भरा गया। कार्यक्रम संयोजक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कार्यक्रम का महत्त्व बताया। कार्यक्रम में महाविद्यालय की समस्त छात्राओं के साथ कार्यक्रम समन्वयक अभिषेक चारण, प्रो. रेखा तिवारी, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. बलवीर सिंह, श्वेता खटेड़, मधुकर दाधीच, अनूप कुमार आदि उपस्थित थे।

'मेरी माटी मेरा देश' अभियान का उद्घाटन

इससे पूर्व 9 अगस्त को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान का उद्घाटन प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में किया गया। प्रो. त्रिपाठी ने मिट्टी की सोंधी महक में मौजूद भारतीय संस्कृति के संस्कारों को मानवीयता की प्रथम पाठशाला बताया तथा मिट्टी से गहरा लगाव रखने वाले क्रांतिकारियों, किसानों, सैनिकों एवं उत्कृष्ट साहित्यकारों के साथ उन सभी व्यक्तित्वों को याद किया।

एकल गीत व कविता पाठ ने माहौल को देशप्रेम में डुबोया पंच प्रण पर आधारित पांच दिवसीय कार्यक्रम सुरों को अर्पित

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में चल रहे पंच दिवसीय पंचप्रण कार्यक्रम श्रृंखला के तहत 17 अगस्त को आयोजित देश प्रेम पर आधारित सुर संगम कार्यक्रम में एकल गीत एवं कविता पाठ ने माहौल को देशभक्ति से सराबोर कर दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने जीवन में राष्ट्रीयता के भाव को सर्वोत्कृष्ट मानते हुए राष्ट्र सेवा का संदेश दिया।

उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2047 तक विकसित राष्ट्र निर्माण के संकल्पित पंचप्रणों विदेशी वस्तुओं के त्याग के साथ स्वदेशी वस्तुओं प्रति गहरी आस्था एवं लगाव रखने, प्राचीन भारतीय विरासत को संजोए रखने एवं उसमें अभिवृद्धि करने के भाव, राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता में विश्वास व नागरिक कर्तव्यों में अगाध आस्था रखने की विस्तृत जानकारी दी। छात्राओं प्रकृति चौधरी, हेमपुष्पा, प्रियंका भंसाली, अभिलाषा स्वामी, नेहा पारीक, यास्मीन बानो, कांता सोनी, मीनाक्षी भंसाली, तानिया खान, ईशा जांगिड़ व ट्विंकल भंसाली ने कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम की सह-समन्वयक प्रेयस सोनी ने भी एक गीत संगीतमय सुनाते हुए आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी व्याख्याता अभिषेक चारण ने किया।

भाषण प्रतियोगिता आयोजित

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में पंचप्रण कार्यक्रम श्रृंखला के तीसरे दिन देश के सांस्कृतिक सौहार्दभाव, शौर्य, पराक्रम, स्वाभिमान एवं वीर जांबाज स्वतंत्रता सेनानियों के योगदानों के महत्त्व पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन 18 अगस्त को किया गया। प्रतियोगिता में सुष्मिता, खुशी जोधा, सना, नाज, प्रकृति चौधरी, खुशबू सोनी, मोनिका, पूजा, ईषिता, रौनक, ट्वींकल भंसाली, ममता गौरा, नेहा पारीक आदि छात्राओं ने राष्ट्रभक्ति पूर्ण अपनी अभिव्यक्तियां दी। कार्यक्रम में अध्यक्ष प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि देश का प्रत्येक नागरिक मातृभूमि से सच्चा लगाव एवं अनन्य निष्ठाभाव से कर्म करके ही राष्ट्र का आराधन कर सकता है। कार्यक्रम का संचालन समन्वयक अभिषेक चारण ने किया। अंत में कार्यक्रम की सह-समन्वयक प्रेयस सोनी ने आभार ज्ञापित किया।

छिपोलाई बालाजी मंदिर परिसर में पौधारोपण कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में पंच दिवसीय पंचप्रण कार्यक्रम श्रृंखला के अंतिम पांचवें दिन 21 अगस्त को प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अगुवाई में स्थानीय छिंपोलाई ताल स्थित बालाजी मंदिर परिसर में पर्यावरण संवर्द्धन के लिए पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न प्रकार के फलदार, छायादार एवं पुष्पों से संबंधित पेड़-पौधे लगाए गए। प्रो. त्रिपाठी ने

स्वयं श्रमदान करने के साथ ही विद्यार्थियों को प्रकृति के प्रति अपने कर्तव्य एवं निष्ठा भाव से प्रेरित किया। कार्यक्रम से जुड़े मंदिर के कार्यकर्ता बनवारी लाल ने महाविद्यालय परिवार द्वारा लगाए गए इन पौधों के प्रति सेवा भाव व्यक्त करते हुए इनके संरक्षण एवं संवर्द्धन की जिम्मेदारी ली। कार्यक्रम में समन्वयक अभिषेक चारण, डॉ. प्रगति भटनागर, श्वेता खटेड़, प्रेयस सोनी, मधुकर दाधीच, प्रियंका भंसाली, सुनिता काजला, हेमलता बिरड़ा, ट्विंकल भंसाली राजश्री सोनी आदि मौजूद रहे।

भाषण प्रतियोगिता आयोजित

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में संस्थान के शिक्षा विभाग में चल रहे 'मेरी माटी मेरा देश अभियान' कार्यक्रम के तहत वीरों के वंदन

के लिए 'स्वातंत्र्य-संग्राम के भूले-बिसरे नायक' विषयक भाषण प्रतिगोगिता का आयोजन 19 अगस्त को किया गया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर हर्षिता पारीक रही। द्वितीय स्थान ममता गोरा एवं दिव्या पारीक ने प्राप्त किया तथा तृतीय स्थान निकिता चौधरी ने प्राप्त किया। निर्णायक के रूप में डॉ. सरोज राय थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलसचिव एवं शिक्षा विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने कहा कि भारत ने विदेशी शासन से अपने को मुक्त कराने के लिए दीर्घकालीन संघर्ष किया, वह वीरता की एक बेजोड़ गाथा है। मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वालों के कष्टों और उत्पीड़नों की अनकही दास्तान, स्व-शासन के लिए संकल्प और तड़प की पूर्ण गाथा का राष्ट्र के इतिहास का गौरवशाली हिस्सा है। परंतु, असंख्य ऐसे निःस्वार्थ, साहसी स्वतंत्रता सेनानी भी रहे हैं, जिनका योगदान उजागर नहीं हो पाया या उनकी अनदेखी की गई। स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे करने पर देश के उन महान सपूतों और वीरांगनाओं को याद करना आवश्यक है।

विस्मृत स्वातंत्र्य-सेनानियों को किया याद

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने बताया कि मेरी माटी-मेरा देश अभियान के अंतर्गत वीरों के वंदन हेतु आयोजित इस भाषण प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने स्वतंत्रता संग्राम में अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले अनेक गुमनाम नायकों के योगदान को प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि बी. एससी.-बी.एड. की छात्राओं में नैना ने अंजना देवी चौधरी, पालू ने प्रेमचंद विश्नोई, दिव्या पारीक ने मातंगिनी हजरा, ललिता बिडियासर ने कलि बाई, हर्शल ने मोतीलाल तेजावत, यापिता ने कुनव सिंह, अंकिता ने ऊधम सिंह तथा बी.ए. -बी.एड. की छात्राओं में हर्षिता पारीक ने डॉ. नारायण सावरकर, निकिता चौधरी ने अर्जुनलाल सेठी, ममता गोरा ने तिलका मांझी, बी.एससी. से खुशी जोधा ने इंदुमती जैसे महान स्वतंत्रता सेनानियों के अविस्मणीय योगदान को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में शिक्षा संकाय सदस्य डॉ. मनीष भटनागर, सुश्री प्रमोद ओला, खुशाल जांगिड एवं सुश्री स्नेह शर्मा उपस्थित रहे। अंत में आभार ज्ञापन डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने किया। कार्यक्रम का संचालन हर्षिता पारीक ने किया।

पोस्टर पेंटिंग व स्लोगन लेखन प्रतियोगिताएं आयोजित

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में चल रहे 'मेरी माटी

मेरा देश अभियान' में राष्ट्रप्रेम की भावना के प्रसार हेतु पोस्टर पेंटिंग एवं स्लोगन लेखन' प्रतियोगिता कार्यक्रम का आयोजन 21 अगस्त को शिक्षा विभाग में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के कुलसचिव एवं विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि मेरी माटी मेरा देश अभियान देश की देश की मिट्टी से जुड़ने तथा इस मिट्टी की खातिर अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले विभिन्न स्वतंत्रता सेनानियों को याद करने तथा उनके जीवन से प्रेरणा लेने का अवसर है। उन्होंने विद्यार्थियों द्वारा बनाये गये पोस्टर्स की सराहना करते हुए कहा कि सृजनशील कार्य समाज को सकारात्मक संदेश को देते हैं और व्यक्तित्व विकास में भी सहायक होते हैं। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने बताया कि पोस्टर पेंटिंग एवं स्लोगन लेखन प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता दी। छात्राओं योगेश चौधरी, प्रेम जांगिड, पालू, बिंदु, उर्मिला, विजयलक्ष्मी, मनीषा राठौड़, दीपिका कटारा, प्रियंका मेघवाल, नीलम शर्मा, सरिता सारण, सुभा भोजक, मेघा, शोभा, सोनू, कंचन, सलोनी, पूजा, सना, तानिया, सल्लू, इशिका, ललिता, खुशी जोधा आदि ने राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत, रंग-बिरंगे पोस्टर्स तथा स्लोगन्स के माध्यम से विद्यार्थियों ने मिट्टी से प्रेम, स्वतंत्रता सेनानियों, देश के सैनिकों को सम्मान तथा तिरंगे की आन-बान-शान के लिए सर्वस्व न्योछावर करने का सन्देश दिया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर दीपिका कटारा एवं सना रही। द्वितीय स्थान खुशी जोधा एवं ललिता बिडियासर ने प्राप्त किया तथा तृतीय स्थान पर पालू, सल्लू एवं सलोनी रही।

वसुधा वंदन में वृक्षारोपण कर अमृत वाटिका बनाई

'मेरी माटी मेरा देश अभियान' के तहत 9 से 30 अगस्त तक चल रहे कार्यक्रमों में प्रारंभ में शिक्षा विभाग द्वारा देशहित के लिए वृक्षारोपण कार्यक्रम 9 अगस्त को रखा गया। कार्यक्रम में कुलपति के विशेषाधिकारी प्रो. नलिन के. शास्त्री, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, कुलसचिव एवं विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन तथा उपकुलसचिव विनीत सुराणा ने वृक्षारोपण किया व छात्राओं को प्रेरित करते हुए वृक्षारोपण करके अभियान के प्रथम दिवस 9 अगस्त को वसुधा-वंदन के तहत अमृत वाटिका का निर्माण किया गया।

इस अवसर पर निर्धारित अमृत वाटिका में छात्राओं द्वारा स्वंय लाए गए पौधों पीपल, नीम, मोगरा, मीठा नीम, गुलाब, कनेर, गैंदा, सदाबहार आदि विभिन्न प्रकार के फूलों वाले व छायादार 40 पौधों का रोपण किया गया। छात्राओं ने पौधे लाकर अमृत वाटिका निर्माण के साथ पौधों का पालन का संकल्प लिया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी लाल शर्मा थे।

पौधों पर लगेगी छात्राओं की नाम-पट्टिका

कार्यक्रम में कुलपति के विशेषाधिकारी प्रो. नलिन के. शास्त्री ने बताया कि इन पौधों को जो छात्राएं लेकर आई हैं, उनके नाम सहित एक पट्टिका लगाई जाएगी, जिनमें पौधे के प्रचलित नाम और उसके वैज्ञानिक नाम आदि का उल्लेख भी रहेगा। उपकुलसचिव विनीत सुराणा ने बताया कि मेरी माटी मेरा देश अभियान भारत सरकार द्वारा भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में ''आजादी के अमृत महोत्सव'' के समापन कार्यक्रम के रूप में मनाया जा रहा है, जो 30 अगस्त तक चलेगा। उन्होंने सभी पौधों की देखभाल का जिम्मा लेना छात्राओं के लिए आवश्यक बताया तथा कहा कि जो पौधा उनके नाम से जाना-पहचाना जाएगा, उसके बड़े होने तक उसका पूरा खयाल रखाना आवश्यक है। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने पौधों और पर्यावरण का महत्त्व बताया तथा कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम एक पेड़ अवश्य लगाना चाहिए ओर उसका पालन भी करना चाहिए।

20 गांवों की मिट्टी से निकाली 'अमृतकलश यात्रा एवं तिरंगा रैली'

'मेरी माटी- मेरा देश अभियान' के तहत 14 अगस्त को 'अमृतकलश यात्रा एवं तिरंगा रैली' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन ने हरी झंडी दिखा कर अमृत कलश यात्रा व तिरंगा रैली का प्रारम्भ किया। इससे पूर्व प्रो. जैन ने भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को पूरे राष्ट्र के लिए राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक बताते हुए कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के तहत हमारे ध्वज का सम्मान बढ़ाने के उद्देश्य से 'हर घर तिरंगा' कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस तिरंगा रैली एवं अमृत कलश यात्रा से विद्यार्थियों के दिलों में देशभक्ति की भावना

और राष्ट्र-ध्वज के प्रति जागरूकता बढ़ेगी। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने बताया कि अमृत कलश यात्रा के लिए विद्यार्थी लगभग 20 कलशों में अलग-अलग गावों की मिट्टी लेकर आये तथा कलश और तिरंगों के साथ उत्साहपूर्वक यात्रा में शामिल हुए। पूरी यात्रा के दौरान राष्ट्रीयता के जयघोष लगाए जाते रहे। रैली में डॉ. सरोज राय तथा डॉ. आभा सिंह का सक्रिय सहयोग रहा।

संस्कृत दिवस व रक्षाबंधन पर ली पंच प्रण संकल्प की शपथ

संस्थान के शिक्षा विभाग में रक्षाबंधन, संस्कृत दिवस एवं 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान के तहत 31 अगस्त को आयोजित किए गए संयुक्त कार्यक्रम के समापन पर सभी विद्यार्थियों तथा संकाय सदस्यों को विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने पंच प्रण की शपथ ग्रहण में पांच संकल्पों से देश को विकसित भारत के रूप में आगे बढ़ाने, गुलामी की मानसिकता को खत्म करने, भारत की विरासत और विरासत पर गर्व करने, एकता और एकजुटता की ताकत और राष्ट्र के प्रति नागरिकों के कर्तव्यों के साथ भारत को 2047 तक विकसित देश बनाने का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर प्रो. जैन ने मन, वचन व कायिक की पवित्रता से जोड़ने वाला पर्व रक्षाबंधन को बताया तथा इसकी आध्यात्मिक पृष्ठभूमि की जानकारी दी। संस्कृत दिवस होने से उन्होंने संस्कृत भाषा को संसार की प्राचीनतम भाषा बताया तथा भारतीय संस्कृति का स्रोत बताते हुए कहा कि संस्कृत भाषा साहित्य अत्यधिक समृद्ध है।

इस अवसर पर मेरी माटी मेरे देश कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, संस्कृत दिवस के संयोजक डॉ. अमिता जैन एवं रक्षाबंधन कार्यक्रम की संयोजक डॉ. आभा सिंह ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में विभाग की समस्त छात्राएं उपस्थित रही। अंत में डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने आभार ज्ञापित किया।

स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम आयोजित

शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता जरूरी- प्रो. त्रिपाठी

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशानुसार संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 15 सितम्बर तक चलाए गए स्वच्छता पखवाड़े के तहत आयोजित कार्यक्रम में 1 सितम्बर को प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छता को अनिवार्य बताते हुए कहा कि स्वच्छता के बगैर दीर्घायु जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती, क्योंकि स्वच्छता का सीधा संबंध शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य से भी है। उन्होंने स्वच्छ भारत अभियान के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूरदर्शिता की तारीफ की और कहा कि इस स्वच्छता पखवाड़े के माध्यम से सबको स्वच्छता के प्रति विशेष जागरूकता रखते हुए स्वच्छ भारत हेतु प्रेरक उदाहरण बनना चाहिए। कार्यक्रम में प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, मधुकर दाधीच एवं समस्त छात्राएं उपस्थित रहीं।

स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत शपथ ग्रहण करवाई

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार संस्थान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में 28 अक्टूबर को 'स्वच्छता ही सेवा अभियान 3.0' के तहत आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्रार्थना हाल में आयोजित स्वच्छता शपथ ग्रहण कार्यक्रम में संयोजक प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने स्वच्छता बनाए रखने के लिए विद्यार्थियों को शपथ दिलाई एवं स्वच्छता के महत्त्व को उजागर किया। उन्होंने बताया कि इस अभियान की शुरूआत स्वयं से करनी चाहिए और साथ ही लोगों को भी स्वच्छता के लिए प्रेरित करना चाहिए। कार्यक्रम के सह-संयोजक कुलसचिव प्रो. बी. एल. जैन ने विद्यार्थियों को स्वच्छता बनाए रखने के लिए प्रेरित किया और ऐसे अभियानों को राष्ट्र में स्वच्छता को बढ़ावा देने में सार्थक कदम बताया। कार्यक्रम आयोजक समिति के सदस्य डॉ. आभा सिंह व डॉ. बलबीर सिंह, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, प्रेयस सोनी, मधुकर दाधीच, अनूप कुमार, घासीलाल शर्मा, हीरालाल देवासी आदि के अलावा करीब 80 विद्यार्थी उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय एकता दिवस कार्यक्रम श्रृंखला आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में यू.जी.सी. के निर्देशों के अनुसार 28 से 31 अक्टूबर तक आयोजित राष्ट्रीय एकता दिवस कार्यक्रम श्रृंखला के तहत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित

राष्ट्रीय एकता दिवस कार्यक्रमों के अन्तर्गत 28 अक्टूबर को 'राष्ट्रीय एकता' विषय पर पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान दिव्या भास्कर, द्वितीय स्थान पालू एवं तृतीय स्थान पर अनिशा खीचड़, भवानी लाखन और चंदा मेघवाल ने स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में लगभग 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अमिता जैन ने किया।

सरदार वल्लभ भाई पटेल पर व्याख्यान आयोजित

राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में चल रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला में 30 अक्टूबर को व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने कहा कि भारत रत्न लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल स्वाभिमान, कर्तव्य परायण, अध्ययनशील, देश सेवा के भाव, किसान हितैषी, स्वतंत्रता के महान सेनानी, देशी रियासतों का वर्गीकरण करने वाले आदि गुणों से पूरित थे। सम्पूर्ण भारत में एकता स्थापित करने वाले महापुरुष थे। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अमिता जैन ने किया। कार्यक्रम में समस्त संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

एकता दौड़ एवं शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित

राष्ट्रीय एकता दिवस कार्यक्रमों की श्रृंखला में 31 अक्टूबर को एकता दौड़ का आयोजन प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में हरी झंडी दिखाकर किया गया। इस दौड़ में लगभग 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसी के तहत राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाये रखने के लिए शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अमिता जैन ने किया।

पर्व-जयंती-दिवस

शिक्षक दिवस पर सम्मान व मनोरंजन का समारोह आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग व आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में छात्राओं द्वारा 5 सितम्बर को आयोजित शिक्षक दिवस समारोह में विद्यार्थियों ने शिक्षकों का सम्मान किया। मुख्य अतिथि कुलसचिव व विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि यह आस्था, श्रद्धा व सम्मान का कार्यक्रम है। शिक्षक को शिल्पकार बताते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षक विद्यार्थियों को चाहे जैसे मोड़ कर कोई भी आकार दे सकते हैं। विद्यार्थियों की क्षमताओं को पहचान कर उन्हें समाज के लिए उपयोगी बनाने पर शिक्षकों का ध्यान रहना जरूरी है। प्रो. रेखा तिवाड़ी ने समस्त समाज और मानव जाति के लिए अधिकतम कार्य करने के लिए तैयार रहने की जरूरत बताई। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्राचीन भारतीय गुरु-शिष्य परम्परा में उदाहरण देते हुए तेरापंथ धर्मसंघ के गुरु आचार्यों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गुरु ज्ञान का प्रतीक होता है। गुरु के बिना व्यक्ति का जीवन शब्दहीन पुस्तक की तरह होता है।

कार्यक्रम में कोमल प्रजापत व प्राची ने नृत्य की प्रस्तुतियां दी। विद्यार्थियों के समूह ने नाटक की प्रस्तुति देते हुए गुरु की महत्ता प्रदर्शित की। खुशी जोधा ने सभी शिक्षकों के लिए सम्मानजनक टाईटल प्रदान किए तथा पीपीटी से शिक्षकों का परिचय प्रस्तुत किया। अभिलाषा जैन ने हास्य कविता सुनाई। योगेश व नेहा ने शिक्षकों को मंच पर बुलाकर अनेक ज्ञानवर्द्धक व मनोरंजक गेम खिलाए। कार्यक्रम का प्रारम्भ गणपति वंदना पर नृत्य से किया गया और अंत में डॉ. सरोज राय ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन अभिलाषा व तेजस्विनी ने किया। कार्यक्रम में सभी शिक्षकगण एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

भगत सिंह जयंती मनाई

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में सरदार भगतसिंह जयंती पर 28 सितम्बर को आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि 28 सितंबर 1907 को जन्मे भारतमाता के लाडले वीर सपूत शहीद-ए-आजम भगत सिंह ने भारतीय स्वतंत्रता की वास्तविक आधारशिला रखी थी। उनका बलिदान न केवल भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति में सहायक रहा, अपितु उन्होंने सोए हुए भारतीयों की अंतरात्मा को जगाने का कार्य भी किया था। विशिष्ट अतिथि अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवाड़ी ने भगतसिंह को शौर्य, साहस एवं निडरता का प्रतीक व युवा वर्ग के लिए प्रेरक बताया। कान्ता सोनी, मीनाक्षी भंसाली, मुस्कान बल्खी, ट्विंकल भंसाली, सुनीता काजला आदि छात्राओं ने भगत सिंह के प्रति श्रद्धा-भाव से प्रस्तुत किए। व्याख्याता प्रेयस सोनी ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन व्याख्याता अभिषेक चारण ने किया। अंत में डॉ. प्रगति भटनागर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

नवरात्रि उत्सव पर गूंजा छात्राओं का डांडिया

शारदीय नवरात्रि पर्व पर 23 अक्टूबर को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की कन्याओं ने मां दुर्गा की प्रतिमा के समक्ष डांडिया कार्यक्रम का आयोजन किया। मां दुर्गा की लोक प्रचलित आरती 'जय अंबे गौरी' से कार्यक्रम का प्रारम्भ किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने की। अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवाड़ी एवं संकाय सदस्या डॉ. प्रगति भटनागर ने भी मंच साझा किया। गुजराती एवं राजस्थानी के डांडिया नृत्यों पर छात्राओं ने एकल, युगल एवं सामूहिक प्रस्तुतियां दी। डांडिया प्रोग्राम के संयोजन में आकांक्षा शर्मा, ईशा प्रजापति, गार्गी जांगिड़, नजमा बानो, जीनत बानो, स्नेहा बोहरा, दिव्या भार्गव, उर्वशी सांखला, अभिलाषा स्वामी आदि छात्राओं की भूमिका रही। इस अवसर पर डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. आभासिंह, अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, प्रेयस सोनी, मधुकर दाधीच, अनूप कुमार, प्रकाश गिड़िया, घासीलाल शर्मा, हनुमाना राम चौधरी, हीराराम देवासी, आदि मौजूद रहे। संचालन खुशी जोधा एवं प्रियंका सोनी ने किया।

सरदार पटेल जयंती मनाई

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर 1 नवम्बर को आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि जिस संगठित एवं सशक्त भारत की बात हम आज करते हैं, उसकी रूपरेखा सरदार पटेल द्वारा रखी गई थी। स्वतंत्रता के बाद देश के उप प्रधानमंत्री पद के साथ प्रथम गृहमंत्री के रूप में पटेल ने देश की 562 छोटी-बड़ी रियासतों को भारतीय संघ में विलीन कर अपनी संकल्प शक्ति को सिद्ध किया था।

उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए सूक्त 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' को भी गुजरात में नर्मदा नदी पर बनी सरदार पटेल की विश्व की सबसे बड़ी प्रतिमा 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' को ही समर्पित बताया। छात्रा सुनीता काजला ने भी पटेल जयंती पर काव्य प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया। इस दौरान प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. प्रगति भटनागर, श्वेता खाटेड़, मधुकर दाधीच, अनूप कुमार, घासीलाल शर्मा मौजूद रहे।

बिरसा मुण्डा जयन्ती पर 'जनजातीय गौरव दिवस' मनाया, आदिवासियों के विकास पर चर्चा

आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा की जयन्ती पर संस्थान के शिक्षा विभाग में 26 नवंबर तक मनाए जा रहे 'जनजातीय गौरव दिवस' पर 5 नवम्बर को आयोजित कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने आदिवासियों के बलिदान को याद करते हुए उन्हें नमन किया और बताया कि देश में दलित, पिछड़ी, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के विकास एवं उनको समृद्ध बनाने की आवश्यकता है। इसके लिए लघु व कुटीर उद्योगों का प्रोत्साहन करके ही आर्थिक विकास किया जा सकता है। इन लोगों के लिए शिक्षा की आसानी से उपलब्धता, कृषि-नवाचारों के लिए प्रेरित करना, फसल प्रबंधन आदि की जागरूकता ही उनके विकास में सहायक हो सकती है। कार्यक्रम में बी.एड. तीसरे सेमेस्टर की छात्रा मुस्कान बल्खी एवं बी.एसी-बी.एड. की छात्रा दिव्या पारीक ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की संयोजक असिस्टेंट प्रोफेसर प्रमोद ओला ने बताया कि बिरसा मुण्डा आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी और मुंडा जनजाति के लोक नायक थे। उन्होंने ब्रिटिश राज के दौरान 19वीं शताब्दी के अंत में बंगाल प्रेसीडेंसी (अब झारखंड) में हुए एक आदिवासी धार्मिक सहस्राब्दी आंदोलन का नेतृत्व किया, जिससे वह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बन गए। भारत के आदिवासी उन्हें भगवान मानते हैं और 'धरती आबा' के नाम से भी जाना जाता है। कार्यक्रम में सभी संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

डांडिया एवं गरबा महोत्सव का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में डांडिया एवं गरबा महोत्सव का आयोजन 21 अक्टूबर को किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि नवरात्रि के नौ दिनों में देवी दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है। नवरात्रि पवित्रता, शक्ति और दिव्यता का प्रतीक हैं। नवरात्रि के नौ दिन तक मां शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्री, महागौरी और सिद्धिदात्री की पूजा की जाती है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. नलिन के. शास्त्री ने कहा कि नवरात्रि के दौरान उपवास करने से शरीर और मन शुद्ध होता है, आध्यात्मिक कल्याण और देवी दुर्गा के प्रति भक्ति बढ़ती है। कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम से पर्व एवं त्यौहारों की जीवन्तता बढ़ती है।

संस्थान के कुलसचिव एवं शिक्षा विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए इस अवसर को छात्राओं की शक्तियों में स्फूर्ति एवं क्षमता प्रदर्शन का दिन बताया। छात्राओं ने गुजराती गानों पर नृत्य प्रस्तुत कर बखूबी प्रदर्शन किया। दिव्या समूह ने 'जो रंगीला तारा.....', रुचिका समूह ने 'ढोलिया ढोल रे. ....', मेराज समूह ने 'नगाड़े संग ढोल बाजे.....', दिलाशा एवं कुसुमलता ने 'राधा कैसे न जले.....', सुप्रिया समूह ने 'छमा छम नाच आजे.....', पूजा भाकर समूह ने 'ओ हलो. ....', कोमल समूह ने 'पंछिडा तू उड़ के जाना....., आदि गानों पर डांडिया थिरका। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अमिता जैन ने किया। कार्यक्रम में समस्त शिक्षा विभाग एवं कालू कन्या महाविद्यालय के संकाय सदस्य तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे।

गुरू पूर्णिमा का पर्व मनाया

संस्थान के शिक्षा विभाग में गुरु पूर्णिमा पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में 3 जुलाई को अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि गुरु सत्य की राह से अवगत कराने वाला होता है और जीवन जीने की कला, व्यावसायिक दक्षता, कुशलता एवं संवर्धन, आचरण की पवित्रता, कमजोरियों का निवारण, ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित, प्रकृति प्रेम, मानवीय गुणों का विकास, जीवन में उत्साह, उमंग व उल्लास से परिपूर्ण, दुखों से छुटकारा, बुराइयों से दूर रहना, सकारात्मक सोच, रहन-सहन, खान-पान, उठना-बैठना, बोलना, चलना आदि के तौर तरीकों से अवगत कराता है। अच्छा गुरु शिष्यों के दोषों और कमजोरियों के निवारण के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहता है। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ सरोज राय, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, खुशाल जांगिड आदि एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

जन्माष्टमी पर्व पर छात्राओं ने दी गीत, भजन और नृत्यों की प्रस्तुतियां

शिक्षा विभाग में कृष्ण जन्माष्टमी के पर्व पर 8 सितम्बर को आयोजित कार्यक्रम में छात्राध्यापिकाओं ने मनमोहक प्रस्तुतियां दी। मानसी जोशी मंजु ने 'राधा रमन हरे गोविन्द' गीत पर तथा कोमल प्रजापत व नेहा बैद ने 'कान्हा सुजासरा' गीत पर युगल नृत्य प्रस्तुत किया। मुस्कान बल्खी, अनिशा खीचड़, राधा ने भजन व कविता प्रस्तुत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि कृष्ण के विविधता पूर्ण जीवन से सबको प्रेरणा लेनी चाहिए। पर्व प्रभारी डॉ. सरोज राय ने कहा कि कृष्ण ने समाज में मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना की थी। उनका जीवन अनुकरणीय है। कार्यक्रम का प्रारम्भ कृष्ण-आरती और माल्यार्पण से किया गया। कार्यक्रम का संचालन छात्राध्यापिका रेणु स्वामी ने किया। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, अमिता जैन, प्रमोद ओला, खुशाल जांगिड, स्नेहा शर्मा आदि संकाय सदस्यों के अलावा छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहे।

अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस मनाया

संस्थान के शिक्षा विभाग में 21 सितम्बर को अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि यह दिवस संयुक्त राष्ट्र के मुख्यालय में युद्ध में मारे गये लोगों की स्मृति में मनाया जाता है।

इस अवसर पर मतभेदों एवं मनमुटाव से ऊपर उठने व मानवता के हित में आने की बात की गयी। घृणा, वैमनस्य, ईर्ष्या के भाव न हों, विवाद व झगड़ों को शांति से मिटाने का प्रयास किया जाए। सद्भाव पूर्वक, सकारात्मक और शुद्ध भावना में रहना शांति स्थापना के लिए महत्त्वपूर्ण है। कार्यक्रम में समस्त शिक्षा संकाय सदस्य तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे।

महिला समानता दिवस का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में 26 अगस्त को महिला दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने इस अवसर पर कहा कि महिलाएं सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं शैक्षिक क्षेत्र को समृद्ध बना रही हैं। स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने में महिलाओं ने काफी विकास किया है। कठिनाइयों, चुनौतियों व समस्यात्मक क्षेत्रों में भी महिलाएं की भूमिका अग्रणी रही है। बेटियों को समाज बोझ नहीं समझें, घर की लक्ष्मी समझें और हर स्तर पर उन्हें सशक्त, समर्थ एवं समृद्ध बनाना है। सरकार भी अनेक योजनाओं के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण पर अपना योगदान दे रही है। चंद्रयान-3 मिशन की सफलता में 100 से अधिक महिलाओं ने अपनी भूमिका निभाई। कार्यक्रम में डॉ. अमिता जैन, डॉ. सरोज राय, डॉ. आभा सिंह, सुश्री प्रमोद ओला, अभिलाषा स्वामी आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में समस्त शिक्षा संकाय सदस्य तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने किया।

अन्तर्राष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी दिवस मनाया

संस्थान के शिक्षा विभाग अन्तर्राष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी दिवस के अवसर पर 9 दिसम्बर को 'भ्रष्टाचार के खिलाफ जन जागरूकता' का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने भ्रष्टाचार को रोकने और उसका मुकाबला करने में विद्यार्थियों की भूमिका के बारे में बताते हुए कहा कि समाज में पकड़ बना चुके भ्रष्टाचार के कई स्वरूप हैं, जिनका निराकरण भावी पीढ़ी के आचरण, संस्कार एवं नैतिक मूल्यों की कटिबद्धता पर निर्भर करता है। उन्होंने बताया कि आजकल शिक्षा जगत में भी विभिन्न प्रकार से भ्रष्टाचार व्याप्त हो चुका है, शिक्षक का अध्यापन कार्य में उचित ध्यान न देना एवं विधार्थियो का मन से पढाई नहीं करना भी भ्रष्टाचार का स्वरूप कहा जा सकता है। पूरी दुनियां में भ्रष्टाचार को खत्म करके एक समृद्ध समाज के निर्माण का रास्ता बनाया जा सकता है। कार्यक्रम में सभी संकाय सदस्य एवं छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रही।

विश्व साक्षरता दिवस का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में 8 सितम्बर को विश्व साक्षरता दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष एवं कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि साक्षरता जागरूकता पर ध्यान देने की जरूरत है। बहुत से लोगों को अब भी अक्षर ज्ञान नहीं है, उन्हें जागरूक करना है ताकि अक्षर ज्ञान होने से वे कहीं भी कठिनाइयों का सामना नहीं करें। छात्राओं ने भी इस सन्दर्भ में अपने विचार रखे। कार्यक्रम में संकाय सदस्य एवं विभाग की छात्राएं उपस्थित रहीं।

विश्व जनसंख्या दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस पर हुए कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने जनसंख्या वृद्धि को अनेक विकास योजनाओं, सरकार, प्रशासन के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती बताते हुए कहा कि जनसंख्या वृद्धि के कारण भारत के सामने बेरोजगारी की समस्या, पर्यावरण संरक्षण की समस्या, भूखमरी की समस्या, आर्थिक समस्या, लिंगानुपात समस्या, स्वास्थ्य की समस्या, हिंसात्मक प्रवृत्तियों में वृद्धि, आपूर्ति से अधिक मांग, भौतिक संसाधनों की कमी, पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, स्वच्छता की समस्या आदि विशेष चुनौतियां पैदा हो रही हैं। निरक्षरता, जन जागरूकता का अभाव, लोगों की भागीदारी की कमी, परिवार कल्याण कार्यक्रम की विफलता, अधिक बच्चे-अधिक आय की सोच, स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, समाज में मिथक धारणाएं- यथा बड़ा परिवार सुखी परिवार आदि इसके कारण हैं। उन्होंने बताया कि इस साल विश्व जनसंख्या दिवस की थीम 'एक ऐसे विश्व की कल्पना, जहां हम सभी आठ अरब लोगों का भविष्य प्रतिज्ञाएं और क्षमताओं से परिपूर्ण हो' रखी गई है। इसको मूर्त रूप देने के लिए हमें सतत् प्रयास करने होंगे। कार्यक्रम में डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारीलाल, खुशाल जांगिड, डॉ. सरोज रॉय, डॉ. मनीष भटनागर आदि एवं शिक्षा विभाग की बी.एड, बी.ए.-बी.एड एवं बी.एससी-बी.एड की छात्राध्यपिकाएं उपस्थित रहीं।

पूजा-अर्चना, भजन-संगीत के साथ मनाया दीपावली का पर्व

संस्थान के शिक्षा विभाग में पूजा-अर्चना, गीत-संगीत व नृत्य के साथ 9 नवम्बर को दीपावली पर्व मनाया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने कहा है कि पर्वराज दीपावली अंधकार से प्रकार की ओर बढने का संदेश देने के साथ ही यह आपसी मेल-मिलाप, प्रेम, नम्रता, मान-सम्मान, आदर-सत्कार आदि सद्गुणों का विकास करता है। अंग्रेजी विभाग की अध्यक्ष प्रो. रेखा तिवारी ने दीपावली पर प्रसन्नचित्त रहने और सभी को खुश एवं आनंदित रखने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में दिव्या भास्कर व चंदा पारीक ने भाषण द्वारा अपने भावों को व्यक्त किया। मेहराज, रश्मि, नीलम ने नृत्य द्वारा, रेणु ने गायन प्रस्तुत किया। ऐश्वर्या सोनी एवं समूह ने भगवान राम का सुमधुर भजन पेश करके सबको मोहित किया। कार्यक्रम में डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. सरोज राय, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारी लाल, प्रमोद ओला, खुशाल जांगिड, स्नेहा शर्मा, दीपक माथुर एवं विद्याथीगर्ण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन आरती पारीक ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन संयोजिका डॉ. अमिता जैन ने किया।

अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 12 अगस्त को अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि युवाओं में नई सोच, नई उमंग, नवीन स्फुरण, नव निर्माण, नतन क्रियाएं उसकी भावना में सन्निहित होती हैं। मात्र उन्हें जागृत करने की आवश्यकता है।

युवा शक्ति किसी देश की प्राणशक्ति होती है। उसकी बदोलत देश अपनी तरक्की, विकास व उन्नति कर सकता है। उन्होंने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस पर युवाओं को कुछ प्रतिज्ञा लेनी चाहिए। शिक्षा विभाग के संकाय सदस्य एवं छात्राएं इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

समता के विकास से विपरीत परिस्थितियों में भी रह सकते हैं अडिग

पर्युषण पर्व के अंतर्गत सामायिक दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

पर्युषण पर्व के अंतर्गत संस्थान में 14 सितम्बर को सामायिक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में समणी डॉ. संगीत प्रज्ञा ने कहा कि पर्युषण शब्द परि एवं उषण दो शब्दों के मेल से बना है, जिसका अर्थ अपने अंदर के स्व को पहचानकर उसे महसूस करने से लिया जा सकता है। उन्होंने कहा कि सामंजस्यकता पूर्वक जीवन-निर्वाह जीवन का व्यवस्थित रूप होता है। उन्होंने समता के विकास को मानव जीवन को विपरीत परिस्थितियों में भी अडिग रहने की स्वप्रेरण देने वाला बताया और कहा कि इसके नियमित अभ्यास से व्यक्ति जीवन के नकारात्मक पहलुओं पर भी अपना आपा नहीं खोता। सामायिक के नियमित अभ्यास से व्यक्ति धैर्यशील की पहचान पाता है। उन्होंने देव, सृष्टि व गंगा का उद्धरण देते हुए रोचक पौराणिक एवं ऐतिहासिक घटनाओं द्वारा अपने अन्दर झांकने का आग्रह किया। उन्होंने समता प्राप्त व्यक्ति के जीवन को ही सच्ची सार्थकता बताया। कार्यक्रम समन्वयक आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने सामायिक दिवस पर विचार प्रकट करते हुए मानव धर्म को सर्वोपरि बताया और सभी संप्रदाय को धर्म को सुरक्षित रखने का माध्यम बताया। इस दौरान प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, मधुकर दाधीच, श्वेता खटेड़, प्रेयश सोनी, अनूप कुमार व छात्राएं उपस्थित रहीं।

संत तुलसीदास की जयंती मनाई

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में भक्तिकालीन सगुण भक्त एवं रामचरितमानस जैसे कालजयी ग्रन्थ के रचीयता कवि संतश्री तुलसीदास की जयंती 23 अगस्त को मनाई गई। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. त्रिपाठी ने बताया कि विक्रम संवत 1568 काशगंज, उत्तर प्रदेश में जन्में तुलसीदास का जीवन रामभक्ति काव्यधारा से प्रेरणा लेकर सदैव आदर्शोन्मुख रहा। उन्होंने तुलसी द्वारा रचित रामचरितमानस, कवितावली गीतावली, दोहावली, विनय पत्रिका, वैराग्य संदीपनी, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, रामल्ला नेहछू, रामाज्ञा प्रश्नावली, कृष्ण गीतावली एवं बरवे रामायण आदि गन्थों की भाषा एवं उनके महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने भक्तिकाल को हिंदी साहित्य जगत में स्वर्णिम काल बताते हुए भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को चिरस्थाई बनाए रखने हेतु महाकवि तुलसीदास के प्रयासों की सराहना की। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया।

हिंदी दिवस कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 14 सितम्बर हिंदी दिवस पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि वैश्विक परिदृश्य में हिंदी के बढ़ते वर्चस्व एवं योगदानों की सराहना की और हिंदी की चर्चित पाक्षिक, मासिक एवं साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाओं में पाठकों की विलुप्त होती साहित्यिक रुचि से प्रकाशन बंद करने की नौबत आने को चिंतनीय बताया। उन्होंने हिंदी के साहित्यिक पक्ष को पुनः सशक्त करने के लिए हिंदी साहित्यिक जगत् की बहुचर्चित कृतियों को पढ़ने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने भाषा की उत्पत्ति से लेकर हिंदी के विकसित वर्तमान स्वरूप तक प्रकाश डाला। कार्यक्रम में छात्राओं कांता सोनी एवं समूह द्वारा नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की गई तथा प्रकृति चौधरी, आईना, सुनीता काजला, सुष्मिता, ललिता जांगिड़, इशिता पारिक, सिमरन, स्नेहा एवं तनुश्री आदि ने भी अपनी प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम के संयोजक हिंदी व्याख्याता अभिषेक चारण ने हिंदी के वर्तमान स्वरूप एवं उत्तरोत्तर विकास पर अपने विचार प्रकट किये। अंत में आभार ज्ञापन डॉ. प्रगति भटनागर ने किया।

विकसित भारत निबंध प्रतियोगिता में ओमा प्रथम रही

'विकसित भारत संकल्प' कार्यक्रम श्रृंखला के तहत संस्थान के शिक्षा विभाग द्वारा 16 दिसम्बर को एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में लगभग 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान ओमा ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर सुनीता चौधरी एवं तृतीय स्थान पर संजू रही। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन के निर्देशन में आयोजित इस प्रतियोगिता में निबंध लेखन के माध्यम से प्रतिभागियों ने विकसित भारत के संदर्भ में अपने विचार उल्लेखित किए।

प्रतिभागियों ने अपने लेखन में व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण और व्यक्ति निर्माण में शिक्षण संस्थानों की भूमिका बताई। साथ ही निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर देश के लिए युवाओं में अपार इच्छा, क्षमता, प्रतिभा और क्षमताओं के साथ दृढ़ता का उल्लेख किया। निबंधों में भारत को 2047 तक विकसित भारत बनाने के लिए मिशन मोड में बड़ा काम करने की जरूरत बताई गई तथा इसके लिए एक साहसिक, महत्त्वाकांक्षी और परिवर्तनकारी एजेंडा तैयार करने और सभी हितधारकों तक इसके संचार की आवश्यकता दर्शाई गईं। प्रतियोगिता कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अमिता जैन ने किया।

ग्रीटिंग कार्ड मेकिंग प्रतियोगिता में दिव्या भास्कर प्रथम रही

संस्थान के शिक्षा विभाग में दीपावली पर्व के उपलक्ष्य में चल रही गतिविधियों के अंतर्गत 7 नवम्बर को ग्रीटिंग कार्ड मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन की अध्यक्षता में किया गया। कार्ड मेकिंग प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दिव्या भास्कर ने किया। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि दीपावली का पर्व सद्गुणों का विकास करता है। यह पर्व विविधता में एकता के सूत्र में बांधता है। अनीषा खीचर ने दीपावली की महत्ता को प्रेरक प्रसंग के माध्यम से बताया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ अमिता जैन ने किया।

शिक्षा समागम के प्रधानमंत्री कार्यक्रम के प्रदर्शन से ली नई शिक्षा नीति की जानकारी

संस्थान के शिक्षा विभाग में अखिल भारतीय शिक्षा समागम के लाईव वेबकास्ट के माध्यम से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के उद्बोधन से 29 जुलाई को रूबरू करवाया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन के निर्देशन में यूजीसी द्वारा प्राप्त पत्रानुसार नई शिक्षा नीति की जानकारी अद्यतन करने के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन यहां करवाया गया। कार्यक्रम में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि विद्या के लिए विमर्श जरूरी होता है और शिक्षा के लिए संवाद जरूरी होता है। अखिल भारतीय शिक्षा समागम में एक संदेश छिपा है, वह है प्राचीनता और आधुनिकता के संगम का। हमारी शिक्षा व्यवस्था भारत की प्राचीन परम्पराओं को सहेज रही है। कार्यक्रम में सम्बोधन से पहले प्रधानमंत्री द्वारा बाल वाटिका में नन्हें-मुन्नें बच्चों से मिलना प्रभावोत्पादक रहा। प्रधानमंत्री ने बच्चों की कलाकारियां, उनके वर्किंग मॉडल की सराहना की। शिक्षा विभाग के संकाय सदस्य डॉ. अमिता जैन, डॉ. सरोज राय, डॉ. आभा सिंह एवं बी.एड, बीए-बीएड एवं बी. एससी-बी.एड. की छात्राध्यपिकायें उपस्थित रही।

छात्राओं ने लघु नाटिका से अंधविश्वास उन्मूलन का दिया सार्थक संदेश

पांच दिवसीय कार्यक्रम श्रृंखला में दूसरे दिन 30 सितम्बर को लघु नाटिका आदि का कार्यक्रम एवं रैली का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में छात्राध्यापिकाओं ने महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री का स्वरूप धर कर उन्हें जीवन्त किया। लघु नाटिका के आयोजन में छात्राओं ने हृदयस्पर्शी अभिनय प्रस्तुत करके समाज में व्याप्त अंधविश्वास पर करारा प्रहार किया। इस कार्यक्रम में मुस्कान बल्खी ने कविता पाठ, सीमा कांटीवाल, प्रियंका गुर्जर व सरिता भाकर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री के कर्तृत्व को याद किया। नाटिका को यास्मीन एवं ग्रुप ने मंचित किया। इनमें यास्मीन, चंचल व प्राची का अभिनय व संवाद दिल को छू लेने वाले रहे। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने अपने सम्बोधन में स्वच्छता अभियान, जाति-धर्म के भेदभाव को हटाने, कुप्रथाओं के उन्मूलन, स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग, आत्मनिर्भरता, अहिंसा और एकता आदि के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला तथा बताया कि महात्मा गांधी के आदर्शों और सिद्धांतों को जब तक जीवन में क्रियान्वित नहीं किया जाता, तब तक उनकी कोई सार्थकता नहीं है। अंत में कार्यक्रम संयोजिका डॉ. सरोज राय ने आभार ज्ञापित किया। इसके बाद छात्राओं ने रैली निकाल कर आमजन को अहिंसा, शांति व स्वच्छता का संदेश दिया और जागरूक बनाया।

इनोवेटिव स्कूल पर वर्किंग मॉडल बनाए – संस्थान के शिक्षा विभाग में एन.सी.टी.ई. एवं यूं.जी.सी. द्वारा प्राप्त पत्रानुसार 28 सितम्बर से 11 दिसम्बर तक भारतीय भाषा उत्सव के अंतर्गत विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन की अध्यक्षता में विभिन्न कार्यक्रमों के सन्दर्भ में 1 नवम्बर को वर्किंग मॉडल निर्मित किये गये, जिनका विषय 'इनोवेटिव स्कूल' था। छात्राओं ने इनोवेटिव स्कूल से सम्बंधित अनेक वर्किंग मॉडल बनाये, जो काफी प्रशंसनीय रहे। प्रतियोगिता में लगभग 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अमिता जैन ने किया।

युवाशक्ति की सहभागिता से ही सफल हो पाएगा राजस्थान मिशन-2030- सीबीईओ भाटी

सीधा संवाद कार्यक्रम आयोजित

राजस्थान को सन् 2030 तक अग्रणी राज्यों में शामिल करने के लिए युवाओं की आकांक्षाओं व सुझावों को सरकार तक पहुंचाने के लिए राजस्थान मिशन-2030 के तहत यहां जैन विश्वभारती संस्थान में 29 अगस्त को सीधा संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी रामचन्द्र भाटी ने कहा कि जीवन में आत्मनिर्भर बनना सबसे अधिक आवश्यक है। विद्यार्थियों को लक्ष्य निर्धारित करके कौशल विकास व श्रमनिष्ठा से सतत् प्रयासरत रहना चाहिए। उन्होंने राजस्थान मिशन-2030 की जानकारी देते हुए आगामी रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता के आयोजन के बारे में बताया। भाटी ने शिक्षा, रोजगारपरक शिक्षा, कौशल विकास, आत्मनिर्भरता, महिला सुरक्षा आदि बिन्दुओं पर विद्यार्थियों से सुझाव प्राप्त किए। इस अवसर पर आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने राज्य को सशक्त बनाने के लिए युवाशक्ति का सहयोग जरूरी बताया तथा कहा कि युवा राजस्थान मिशन-2030 से जुड़ कर अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति कर पाएंगे। कार्यक्रम में उपखंड अधिकारी के निजी सहायक माणकचंद सोनी, सीबीईओ रामचन्द्र भाटी, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, नन्दलाल बरवासा, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. आभासिंह, कुशल जांगिड़ आदि उपस्थित रहे। अंत में डॉ. गिरीराज भोजक ने आभार ज्ञापित किया।

चंद्रयान मिशन-3 का अवलोकन किया

संस्थान के शिक्षा विभाग में 4 अगस्त को चंद्रयान मिशन-3 के अवलोकन विषय में छात्राओं से चर्चा की गई। छात्राओं ने बताया कि हमारे लिए बहुत खुशी और आनंद के साथ गौरवान्वित करने वाले पल थे। चंद्रमा की सतह देखने का अवसर पर इस कार्यक्रम से पहली बार मिला है। विक्रम लैंडर के लैंड करने के समय मन में अनेक विचार थे। प्रधानमंत्री की बधाई ने सबको अभिभूत किया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि यह बेहद खुशी का दिन रहा। हमें जीवन में असफलताओं से कभी भी विचलित नहीं होना चाहिए। चुनौतियां आती हैं, हमें उनका मुकाबला वैज्ञानिकों की तरह डटकर करना चाहिए। कार्यक्रम में संकाय सदस्य एवं विभाग की छात्राएं उपस्थित रही।

चंद्रयान महाक्विज का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार 24 अक्टूबर को विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन के मार्गदर्शन में छात्रों के मन में जिज्ञासा जगाने के उद्देश्य से चंद्रयान-3 महामिशन के प्रक्षेपण के संबंध में 'चंद्रयान महाक्विज' का आयोजन किया गया। इससे छात्राओं को देश के चंद्र मिशन के बारे में सक्रिय रूप से संलग्न होने और अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन मिला। इस क्विज में लगभग 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

चंद्रयान उत्सव का आयोजन

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार संस्थान के शिक्षा विभाग में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल.जैन के निर्देशन में 18 सितम्बर को चंद्रयान उत्सव का आयोजन किया गया। प्रो. जैन ने कहा कि वैज्ञानिकों के प्रयास का उदाहरण देते हुए जीवन में असफलताओं से कभी विचलित नहीं होने और चुनौतियां का डटकर मुकाबला करने के लिए प्रेरित किया। प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी जी ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से छात्रों का उत्साहवर्धन होता है। चंद्रयान उत्सव के उपलक्ष्य में चंद्रमा पर भारत विषय पर नाटक एवं गीतिका का आयोजन किया गया, जिसमें हर्षिता, दिव्या, हंसा, वृंदा, योगेश, उषा, प्रेम, विजयलक्ष्मी, पालू, नैना, निकिता, पूजा, आरती, प्रमिला, विमला, दीपिका, सोनू, निशा आदि विद्यार्थियों ने अलग-अलग वेशभूषा में स्वयं को प्रदर्शित कर अलग-अलग भूमिका निभाई। कार्यक्रम की संयोजना एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अमिता जैन ने किया। कार्यक्रम में संकाय सदस्य एवं विभाग की लगभग 105 छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

दो दिवसीय कार्यशाला में 'स्वयम्' पोर्टल की जानकारी दी

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार संस्थान के शिक्षा विभाग में 17 व 18 अगस्त को दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यशाला में डॉ. अमिता जैन ने 'स्वयम' पोर्टल की जानकारी दी। उन्होंने यूजीसी, एनपीटीईएल, इग्नू, सीईसी आदि द्वारा चलाये जा रहे कोर्स एवं कैसे एनरोल्ड होते हैं? से विद्यार्थियों को अवगत कराया। विद्यार्थियों को एनरोल्ड होने के लिए प्रेरित भी किया।

गांधी जयंती पर जागरूकता कार्यक्रम

संस्थान के शिक्षा विभाग में 28 सितम्बर को महात्मा गांधी की जयंती के उपलक्ष्य में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि गांधीजी आत्म-निर्भरता के धनी थे। वे लोगों को स्वरोजगार, आत्मप्रेरणा, हुनर, क्राफ्ट, सिलाई, बुनाई, कताई आदि के प्रति जागरूक करते थे। वे सत्य और अहिंसा के पुजारी थे, उनके सिद्धांतों को हमें आत्मसात करना चाहिए। कार्यक्रम में सभी संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. दूगड़ को भ्रातृ-शोक

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के बड़े भ्राता मोतीलाल जी दूगड़ का देहावसान 19 दिसम्बर को हो गया। वे श्रीडूंगरगढ में निवास करते थे। उनकी आयु 76 साल थी और कुछ समय से उन्हें फेफड़ों में समस्या हो गई थी, जिसे चिकित्सकों ने कैंसर की समस्या बताई। मोतीलाल जी दूगड़ कुल पांच भाई थे। जिनमें वे तीसरे नम्बर पर थे। दो बड़े भाइयों का देहांत पहले ही हो चुका था। कुलपति प्रो. दूगड़ से बड़े एक भाई और हैं, जो अहमदाबाद में रहते हैं। मोतीलाल जी के दो पुत्र व एक पुत्री का भरापूरा परिवार है। उनका अंतिम संस्कार श्रीडूंगरगढ में ही किया गया है। यहां कुलपति निवास पर रखी गई शोकसभा में क्षेत्र के सभी गणमान्य व्यक्ति नगर पालिका के अध्यक्ष रावत खां, उपाध्यक्ष मुकेश खींची, भाजपा के जिलाध्यक्ष गजेन्द्र सिंह ओड़ींट, जिला उपाध्यक्ष नाथूराम कालेरा, शहर काजी सैयद मोहम्मद मदनी अशरफी, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरंद लूंकड़, ट्रस्टी रमेशचंद बोहरा, गौरव जैन, वरिष्ठ समाजसेवी भागचंद बरड़िया, संस्कृत महाविद्यालय जसवंतगढ के प्राचार्य डॉ. हेमन्तकृष्ण मिश्रा आदि एवं विश्वविद्यालय के समस्त स्टाफ ने भाग लेकर स्व. मोतीलालजी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रधानमंत्री के उद्बोधन 'विकसित भारत/2047 : वॉयस ऑफ यूथ' का लाईव विजन आयोजित

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशानुसार संस्थान के शिक्षा विभाग में 11 दिसम्बर को विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन के मार्गदर्शन में 'विकसित भारत/2047 : वॉयस ऑफ यूथ' में भारत सरकार का विजन लाईव वेबकास्ट के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के उद्बोधन से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को रूबरू करवाया गया। प्रधानमंत्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि देश की युवा शक्ति को एक मंच पर लाने का कार्य किया गया है। शिक्षण संस्थानों की भूमिका व्यक्ति निर्माण की होती है और व्यक्ति निर्माण से ही राष्ट्र निर्माण होता है। देश उन्नति की ओर अग्रसर है। हमें अमृत काल का पल-पल का लाभ उठाना है एक भी पल गंवाना नहीं है। भारत इस महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है, अपने विकास पथ पर आगे बढ़ने के लिए तैयार है, यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि भारत की नियति में जबरदस्त समर्पण और विश्वास है। विशेषकर युवाओं में अपार इच्छा, क्षमता, प्रतिभा और क्षमताओं के साथ-साथ दृढ़ता भी है। इस क्षमता को साकार करने के लिए नेतृत्व आवश्यक है। 2047 तक भारत को विकसित भारत बनाने के लिए मिशन मोड में बहुत बड़ा काम करने की जरूरत है। ऐसा करने के लिए, एक साहसिक, महत्त्वाकांक्षी और परिवर्तनकारी एजेंडा तैयार करने और सभी हितधारकों तक इसके संचार की आवश्यकता है। युवाओं की भूमिका, जो हमारे सबसे बड़े जनसंख्या समूह का गठन करते हैं, यहां बहुत बड़ी भूमिका है, क्योंकि वे 2047 तक देश को विकसित भारत की ओर ले जाएंगे। इसलिए, युवाओं को 2047 तक विकसित भारत के दृष्टिकोण पर विचार करने और उसमें योगदान देने के लिए आमंत्रित करके उनके नवीन विचारों को राष्ट्र-निर्माण में शामिल करना महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा विभाग के संकाय सदस्य एवं बी.एड. की छात्राध्यापिकायें उपस्थित रही। संयोजन डॉ. अमिता जैन ने किया।

हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता में जीनत बानो प्रथम रही

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित विवेकानंद क्लब द्वारा 'राजनीतिक दलों द्वारा की जाने वाली मुफ्त घोषणाएं कानूनी रूप से प्रतिबंधित की जानी चाहिए' विषय पर अंतः संकाय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता 4 नवम्बर को रखी गई। प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित प्रतियोगिता में कुल 14 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिनमें जीनत बानो प्रथम, रतन राठौर द्वितीय एवं सुनीता काजला ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता की सर्वश्रेष्ठ टीम के रूप में जीनत बानो एवं उर्वशी सांखला ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया, जिन्हें प्राचार्य प्रो. त्रिपाठी ने प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया।

निर्णायक के रूप में विवेकानन्द क्लब की सदस्य छात्राएं अभिलाषा स्वामी, हेमपुष्पा चौधरी एवं ममता गोरा रही। प्रतियोगिता के अंत में प्राचार्य प्रो. त्रिपाठी ने छात्राओं को प्रेरित किया। इस अवसर पर विवेकानंद क्लब प्रभारी एवं प्रतियोगिता संयोजक अभिषेक चारण एवं सह-संयोजक प्रेयस सोनी के अलावा संकाय सदस्य प्रो. रेखा तिवारी, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. बलबीर सिंह, श्वेता खटेड़, अनूप कुमार, घासीलाल शर्मा आदि मौजूद रहे।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी की प्रासंगिकता पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय केशव विद्यापीठ जामडोली जयपुर के साथ संयुक्त तत्वावधान में संस्थान द्वारा गांधी जयंती के उपलक्ष्य में 2 अक्टूबर को 'आधुनिक परिपेक्ष्य में महात्मा गांधी की प्रासंगिकता' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार में विषय विशेषज्ञ केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा की पूर्व निदेशक प्रो. बीना शर्मा ने महात्मा गांधी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा सत्य एवं अहिंसा के लिए किए गए प्रयास तथा शिक्षा के क्षेत्र में दिए गए बेसिक शिक्षा के संप्रत्यय पर अलग-अलग कविताओं के माध्यम से प्रकाश डाला और वर्तमान में भी उसकी प्रासंगिकता को स्पष्ट किया। वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए केशव विद्यापीठ समिति, जामडोली, जयपुर के सचिव एवं पूर्व प्रशासनिक अधिकारी ओ.पी. गुप्ता ने गांधीजी द्वारा सत्य, अहिंसा, स्वच्छता, ग्राम विकास, दलित उत्थान तथा वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता आदि के संदर्भ में किए गए प्रयासों पर प्रकाश डाला। वेबिनार में संयोजक जैन विश्वभारती संस्थान के शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने प्रस्तावना प्रस्तुत की।

श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय की प्राचार्य एवं वेबिनार की संयोजिका प्रो. रीटा शर्मा ने अतिथियों के परिचय देते हुए उनका स्वागत किया। वेबिनार में देश के अलग-अलग कोने से लगभग 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया। अंत में वेबिनार की सह संयोजिका डॉ. अमिता जैन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सूचना संचार प्रोद्यौगिकी आधारित तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 20 से 22 जुलाई को तीन दिवसीय सूचना संचार प्रोद्यौगिकी आधारित कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल जैन ने बताया कि विद्यार्थियों को वर्तमान में आईसीटी का ज्ञान होना आवश्यक है। डॉ. अमिता जैन ने आईसीटी के बारे में बताते हुए विद्यार्थियों को ई-मेल आईडी बनाने की जानकारी प्रेक्टिकल रूप से दी और उसका अभ्यास करवाया। साथ ही गूगल फॉर्म बनाने और उसके फंक्शनों के बारे में बताया। उन्होंने चैट जीपीटी के बारे में भी बताया और उसकी कार्यपद्धति समझाई। कार्यशाला में शिक्षा विभाग की 50 छात्राध्यापिकाओं ने भाग लिया।

शिक्षक दिवस मनाया

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के विद्यार्थियों ने 5 सितम्बर को सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन का जन्मदिवस एवं शिक्षक दिवस मनाया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने संकाय सदस्यों को सम्मानित किया। विभागाध्यक्ष डॉ.रविंद्र सिंह राठौड़ ने आयोजन के लिए बधाई देते हुए विद्यार्थियों को चरित्रवान व कर्तव्य-परायण रहने एवं राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना रखने का संदेश दिया। इस अवसर पर डॉ. लिपि जैन एवं डॉ. बलबीर सिंह के साथ सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सिमरन बानो तथा उषा टाक ने किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) की गतिविधियाँ

स्वीप कार्यक्रम के तहत छात्राओं को किया मतदान के प्रति जागरूक

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वाधान में भारत सरकार द्वारा मतदान जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए चल हो रहे स्वीप कार्यक्रम के तहत 31 जुलाई को आयोजित कार्यक्रम में निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी के मार्गदर्शन में कार्यरत टीम ने विद्यार्थियों को मतदान के प्रति जागरूकता बनाए रखने, मतदाता सूची में नाम जुड़वाने एवं मतदान की प्रक्रिया की जानकारी प्रदान की। साथ ही ज्यादा से ज्यादा मतदान करने एवं समाज के लोगों को अपने मत का प्रयोग करने की जानकारी देने के लिए प्रेरित किया। इस टीम में सांवरमल शर्मा, जालम सिंह, मोहन राम नेहरा, धनेश कुमार आदि उपस्थित रहे। टीम के सदस्यों ने इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन तथा वीवीपैट के बारे में छात्राओं को अवगत कराया एवं ईवीएम मशीन के माध्यम से मतदान करने की विधि समझाई।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने टीम द्वारा दी गई जानकारी को विद्यार्थियों के लिए काफी लाभदायक बताया। स्वीप कार्यक्रम के संस्थान के समन्वयक डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़, राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह, द्वितीय इकाई प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में प्रतिभागियों की संख्या 124 रही।

एनएसएस की स्वयंसेविकाओं ने पंचप्रण शपथ ग्रहण की

संस्थान में राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वाधान में भारत सरकार द्वारा संचालित 'मेरी-माटी मेरा-देश' अभियान के तहत 9 अगस्त को पंच-प्रण थीम के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त करने के लिए विद्यार्थियों को शपथ

ग्रहण करवाने का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन ने सबको शपथ दिलाई। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय के प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने बताया कि एनएसएस के तत्त्वावधान में 16 अगस्त तक संचालित इस अभियान की जानकारी दी।

राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा रैली एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित

संस्थान में संचालित एनएसएस की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में 'मेरी-माटी, मेरा-देश' अभियान के अंतर्गत 14 अगस्त को ग्राम खानपुर व भियानी में वृक्षारोपण एवं तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। इन दोनों गांवों को एनएसएस द्वारा गोद लिया हुआ है। खानपुर के शहीद तेज सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय में स्वयंसेवकों एवं स्वयंसेविकाओं ने वृक्षारोपण कार्यक्रम

में भाग लिया। भियानी के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के परिसर में भी औषधीय एवं छायादार पौधे एनएसएस की स्वयंसेविकाओं ने लगाए। पास-पास बसे इन दोनों गांवों के मुख्य मार्गो से शहीदों के सम्मान एवं मेरा माटी मेरा देश अभियान के तहत तिरंगा यात्रा रैली भी स्वयंसेविकाओं ने निकाली। ये कार्यक्रम राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक एवं इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह तथा इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह के निर्देशन में संपन्न हुए।

'फिट इंडिया' कार्यक्रम के तहत एनएसएस स्वयंसेविकाओं ने किया योगासन

भारत सरकार के युवा एवं खेल मामलात विभाग तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली के निर्देशानुसार कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित हो रहे फिट इंडिया कार्यक्रमों की श्रृंखला में 23 अगस्त को विद्यार्थियों के लिए योगाभ्यास कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में स्पोर्ट्स कोच दशरथ सिंह ने स्वयंसेविकाओं को योग की विभिन्न मुद्राओं का अभ्यास करवाया। फिट-इंडिया कार्यक्रम समन्वयक एवं राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने बताया कि 29 अगस्त तक प्रतिदिन भारत सरकार द्वारा चलाए गए 'खेलो इंडिया' अभियान के तहत विभिन्न खेल एवं योग गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें 29 अगस्त को खेल दिवस रहा।

फिट इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत रन फोर फिट का आयोजन

संस्थान में युवा एवं खेल मामले भारत सरकार तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली के निर्देशानुसार कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन एवं संरक्षण में राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित हो रहे फिट इंडिया कार्यक्रमों की श्रृंखला में फिट एवं स्वस्थ रहने के लिए 25 अगस्त को दौड़ करवाई गई। इस दौड़ में विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। इसका आयोजन एनएसएस समन्वयक तथा खेलसचिव एवं राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह, खेल प्रशिक्षक दशरथ सिंह के निर्देशन में किया गया।

स्वास्थ्य के लिए खानपान व दिनचर्या में बदलाव जरूरी

फिट इंडिया कार्यक्रम के तहत 'स्वस्थ्य मन-स्वस्थ शरीर' पर व्याख्यान आयोजित

युवा एवं खेल मामले भारत सरकार तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली के निर्देशानुसार व कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किए जा रहे फिट इंडिया कार्यक्रमों की श्रृंखला में 28 अगस्त को फिट एवं स्वस्थ रहने के लिए 'स्वस्थ मन, स्वस्थ शरीर' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। व्याख्यान के मुख्य वक्ता योग और जीवन विभाग के विभाग अध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने कहा कि शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए मानसिक रूप से स्वस्थ रहना भी आवश्यक है। वर्तमान समय में बदलती दिनचर्या एवं खानपान के कारण युवावस्था में ही हम अनेक बीमारियों के शिकार बन रहे हैं, इसके लिए हमें अपने खान-पान तथा दिनचर्या में बदलाव लाने की आवश्यकता है। साथ ही शारीरिक क्रियाएं एवं श्रम भी करना चाहिए, ताकि हम स्वस्थ एवं फिट रह सकें। शिक्षा विभाग के आईसीटी कक्ष में आयोजित इस व्याख्यान में संस्थान के विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन एनएसएस समन्वयक व इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. आभा सिंह, खेल सचिव एवं राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह व खेल प्रशिक्षक दशरथ सिंह के निर्देशन में किया गया।

खेल दिवस पर ली स्वस्थ रहने की शपथ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली तथा खेल एवं युवा मामले विभाग भारत सरकार द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना में चल रहे 'फिट इंडिया अभियान' के कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत 29 अगस्त को खेल दिवस के अवसर पर फिट रहने के लिए स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकाओं को दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने शपथ दिलाई। इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन, एन.एस.एस. समन्वयक व ईकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह, इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. सरोज राय, प्रमोद ओला, खुशाल जांगिड़ आदि संकाय सदस्यों के साथ विद्यार्थियों ने भी शपथ ग्रहण की।

स्वच्छता जागरूकता रैली निकाल कर दिया आमजन को स्वच्छता का संदेश

स्वच्छता जागरूकता पखवाड़े के अंतर्गत संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में 12 सितम्बर को 'स्वच्छता जागरूकता रैली' का आयोजन किया गया। कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन ने रैली को हरी झंडी दिखाकर संस्थान परिसर से रवाना किया। इसके बाद रैली यहां छठी पट्टी, पहली पट्टी, गांधी चौक, सब्जी मण्डी होते हुए गोपालपुरा रोड की तरफ से वापस संस्थान पहुंची। पूरे मार्ग में इस रैली में स्वयंसेवी छात्राओं ने स्वच्छता जागरूकता संबंधी नारे लगाते हुए आमजन को स्वच्छता के प्रति जागरूकता का संदेश दिया। रैली का नेतृत्व राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयक एवं इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह तथा इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने किया।

एनएसएस की स्वयंसेविकाओं ने नाटिका का मंचन कर बनाया स्वीप वीडियो

सहायक निर्वाचन अधिकारी एसडीएम सुमन शर्मा के निर्देशानुसार क्षेत्र में आगामी विधानसभा चुनावों को लेकर चलाए जा रहे स्वीप कार्यक्रम के तहत 29 नवम्बर को संस्थान में संचालित एनएसएस की दोनों इकाइयों के तत्वावधान में मतदाता जागरूकता के सम्बंध में एक वीडियो तैयार किया गया है। मतदान सम्बंधी इस वीडियो में लघु नाटिका के मंचन में छात्राओं ने अभिनय करके आमजन और विशेषकर ग्रामीण परिवेश के लोगों में मतदान के प्रति चेतना जागृत करने के लिए संदेश दिया गया है। इस नाटिका के वीडियो में छात्रा हंसा कंवर, निकिता खींची, हर्षिता पारीक, पूजा चौधरी, विमला, प्रमिला, सीमा, पालू, सरला, सोनू व उषा सारण ने अपने अभिनय की प्रस्तुति दी है। यह वीडियो तैयार करने में एनएसएस प्रभारी डॉ. आभासिंह व डॉ. बलवीर सिंह का पूर्ण सहयोग रहा।

देश की स्वच्छता के लिए शुरूआत स्वयं से करें- प्रो. त्रिपाठी

एनएसएस के स्वच्छता अभियान में व्याख्यान का आयोजन

भारत सरकार के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशानुसार कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की दोनों इकाइयों द्वारा आयोजित 'स्वच्छता ही सेवा' कार्यक्रमों की श्रृंखला में 28 अक्टूबर को स्वच्छता ही सेवा विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के निदेशक प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि भारत सरकार द्वारा चलाया गया एक विशेष अभियान 'स्वच्छता मिशन 2014' है, जिसका मुख्य उद्देश्य स्वच्छता के प्रति लोगों के मन में जागरूकता पैदा करना एवं भारत को स्वच्छ राष्ट्र बनाना है। उन्होंने विद्यार्थियों को से कहा कि तन की स्वच्छता के साथ व्यक्ति को मन की स्वच्छता भी अपने जीवन में अपनानी चाहिए और इसकी शुरूआत स्वयं से करते हुए अपने परिवार, संस्थान एवं आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखना चाहिए। यह हम सबका नैतिक दायित्व है। अंत में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने किया। इस अवसर पर संस्थान के विद्यार्थी एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेविकाएं एवं स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत रैली का आयोजन

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशानुसार कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में चल रहे 'स्वच्छता ही सेवा' कार्यक्रमों की इस श्रृंखला में तीसरे दिन 30 अक्टूबर को राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेविकाओं ने रैली निकाल कर लोगों को जागरूक बनाया। रैली को कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन ने हरी झंडी दिखाकर संस्थान परसिर से रवाना किया। यहां से रैली विभिन्न मार्गों से होकर गुजरी। इस दौरान सभी स्वयंसेविकाओं ने जन-जागरूकता के लिए स्वच्छता ही सेवा थीम पर नारे लगाए। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयक तथा इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह, इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह एवं डॉ.अमिता जैन उपस्थित रहे।

एनएसएस स्वयंसेविकाओं ने रेलवे स्टेशन पर सफाई के साथ ही रेलवे संचालन को समझा

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकाओं ने 'स्वच्छता ही सेवा 3.0' अभियान के तहत 31 अक्टूबर को लाडनूं रेलवे स्टेशन के भ्रमण के साथ वहां पर सफाई कर स्वच्छता के प्रति जागरूकता का संदेश दिया। इस कार्यक्रम के दौरान रेलवे स्टेशन के साथ उसके बाहर भी साफ-सफाई की गई। इस कार्यक्रम से पूर्व राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयं सेविकाओं एवं स्वयंसेवकों में राष्ट्रीय एकता की भावना जागृत करने के लिए राष्ट्रीय एकता दिवस पर एकता दौड़ आयोजित की गई। दौड़ में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रेलवे स्टेशन पर स्टेशन मास्टर राधेश्याम ने स्वयंसेविकाओं के इस स्वच्छता कार्यक्रम को लाभदायक माना और इसे समाज में स्वच्छता जागरूकता बढ़ाने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम बताया।

रेलवे संचालन की प्रक्रिया को समझा

इस अवसर पर स्टेशन मास्टर ने स्वयंसेविकाओं को रेल व्यवस्था के संचालन की प्रक्रिया को समझाया तथा उपकरणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने रेल व्यवस्था के नवीनीकरण एवं तकनीकी प्रयोगों के बारे में बताते हुए कहा कि इनके कारण रेलवे-संचालन की प्रक्रिया आसान हुई है। उन्होंने फाटक बंद करने, रेल को सिग्नल देने तथा आपातकाल में व्यवस्था बनाए रखने के तरीकों को भी बताया। रेलवे के मुख्य वाणिज्य लिपिक विक्रम सिंह ने ऑनलाइन टिकट बनवाने की प्रक्रिया के बारे में बताया एवं टिकट बनवाने में होने वाली सुविधाओं से बचने के उपाय भी बताए। सभी कार्यक्रम राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम प्रभारी एवं समन्वयक डॉ. आभा सिंह व इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह के नेतृत्व में हुए। कार्यक्रम में डॉ. सरोज राय, डॉ. अमिता जैन के अलावा 80 स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकाओं ने भाग लिया।

लैंगिक असमानता की रोकथाम के लिए साप्ताहिक कार्यक्रम में व्याख्यान आयोजित

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों की संयुक्त तत्त्वावधान में लैंगिक असमानता की रोकथाम हेतु जागरूकता बढ़ाने के लिए आयोजित किए जा रहे साप्ताहिक कार्यक्रम में 6 दिसम्बर को व्याख्यान रखा गया। इस व्याख्यान में राष्ट्रीय सेवा योजना की समन्वयक डॉ.आभा सिंह ने बताया कि लैंगिक समानता की स्थिति बनी रहने पर ही राष्ट्र सदैव प्रगति की ओर अग्रसर होता है और अनेक संकटों से भी बचा रहता है। अंत में कार्यक्रम में इकाई द्वितीय

प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में इस अवसर पर दोनों इकाइयों की स्वयंसेविकाएं एवं स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

वृक्षारोपण एवं देशभक्तिगायन प्रतियोगिता कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान में राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वाधान में 'मेरी माटी, मेरा देश' अभियान के तहत 12 अगस्त को वृक्षारोपण तथा देशभक्ति गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें संस्थान परिसर में 20 छायादार एवं 5 औषधियों के पौधे लगाए गए। इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन तथा दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के निदेशक व आचार्य कालू कन्या

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी उपस्थित रहे। प्रो. जैन व प्रो. त्रिपाठी ने पर्यावरण संरक्षण में वृक्षारोपण को उपयोगी बताया। इसके पश्चात स्वतंत्रता सेनानियों एवं शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि एवं उनके सम्मान में राष्ट्रभक्ति गीतों की प्रतियोगिता रखी गई, जिसमें ज्योति बुरड़क, मोनिका बुरड़क, संजू, पायल मीणा, रजनी स्वामी, हिमांशी चौधरी, ज्योति, कोमल प्रजापत, कंचन तथा दिव्या ने अपनी प्रस्तुतियां दी, जिसमें मोनिका बुरड़क प्रथम, कोमल प्रजापत द्वितीय तथा हिमांशी चौधरी तृतीय स्थान पर रही। इस प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में सहायक आचार्या प्रमोद ओला एवं नेहा शर्मा थी। राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयक डॉ. आभा सिंह ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। आभार ज्ञापन इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने किया। कार्यक्रम का संचालन स्वयंसेविका दिव्या पारीक ने किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस मनाया

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वाधान में 24 सितम्बर को राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस मनाया गया, जिसमें आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने मुख्य वक्ता के रूप में स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकाओं को समाज सेवा के महत्त्व को बताते हुए कहा कि कि समाज सेवा का कोई विकल्प नहीं होता, हमेशा समाज सेवा के प्रति रुचि की भावना रखनी चाहिए। कार्यक्रम का संचालन इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने किया और आभार ज्ञापन राष्ट्रीय सेवा योजना की समन्वयक एवं इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह ने किया।

स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत शपथ कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भारत सरकार द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के संरक्षण तथा मार्गदर्शन में स्वच्छता ही सेवा अभियान 3.0 के तहत आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्रार्थना हाल में 27 अक्टूबर को शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के संयोजक प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने स्वच्छता बनाए रखने के लिए विद्यार्थियों को शपथ दिलाई एवं स्वच्छता के महत्त्व को उजागर किया उन्होंने

बताया कि हमें इस अभियान की शुरूआत स्वयं से करनी चाहिए और लोगों को भी प्रेरित करना चाहिए। कार्यक्रम के सह-संयोजक कुलसचिव प्रो. बी.एल.जैन ने विद्यार्थियों को स्वच्छता बनाए रखने के लिए प्रेरित किया और ऐसे अभियानों को राष्ट्र में स्वच्छता को बढ़ावा देने में सार्थक कदम बतलाया। इस अवसर पर कार्यक्रम आयोजक समिति के सदस्य डॉ. आभा सिंह व डॉ. बलबीर सिंह, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, प्रेयस सोनी, मधुकर दाधीच, अनूप कुमार आदि संकाय सदस्यों के साथ घासीलाल शर्मा, हीरालाल देवासी सहित करीब 80 विद्यार्थी उपस्थित रहे।

मूक-बधिर विद्यार्थियों को बांटे गर्म ऊनी वस्त्र

प्रथम एक दिवसीय शिविर आयोजित

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रथम एक दिवसीय शिविर का आयोजन 19 दिसम्बर को किया गया। शिविर के प्रथम चरण में श्रमदान तथा युवा भारत पोर्टल पर स्वयंसेविकाओं एवं स्वयंसेवकों के रजिस्ट्रेशन में आ रही समस्याओं का समाधान करते हुए करीब 100 स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकाओं का इस पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन का कार्य करवाया गया। दूसरे चरण में 'राष्ट्र सेवा एवं स्वयंसेवकों की भूमिका' विषय पर व्याख्यान रखा गया, जिसमें संस्थान के कुल सचिव प्रो. बी.एल. जैन ने मुख्य वक्ता के रूप में कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक केवल शिविरों में औपचारिकता नहीं दिखाएं, अपितु निष्ठा एवं लगन से निर्धारित कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लेकर कार्यक्रम के उद्देश्यों को पूरा करने में योगदान भी दें। शिविर के अंतिम चरण में लाडनूं के मूक-बधिर विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को स्वयंसेवकों द्वारा ऊनी वस्त्र वितरित किए गए। उपर्युक्त सभी कार्यक्रम समन्वयक एवं इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह तथा इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह के निर्देशन में संपन्न हुए।

दिव्या और पूजा को सीनियर व जूनियर अंडर ऑफिसर रैंक की घोषणा

एनसीसी के कमांडिग ऑफिसर ने किया निरीक्षण

संस्थान में संचालित एनसीसी की 3 राज गर्ल्स बटालियन का निरीक्षण 15 दिसम्बर को कमांडिंग ऑफिसर कर्नल नवदीप सिंह बेदी ने किया और निरीक्षण के दौरान कैडेट दिव्या भास्कर को सीनियर अंडर ऑफिसर और पूजा इनाणियां को जूनियर अंडर ऑफिसर की रैंक देने की घोषणा करते हुए कैडेट्स चंचल चौधरी, दिव्या कंवर एवं हेमपुष्पा को सार्जेंट की रैंक प्रदान करने की घोषणा भी की। इस अवसर पर कर्नल नवदीप सिंह ने कहा कि एनसीसी कैडेट्स को हमेशा चरित्रवान, अनुशासित, सहयोग व साहस की भावना से युक्त तथा धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण वाला होना चाहिए। उन्होंने कैडेट्स से जिम्मेदार नागरिक के रूप

में सदैव समुदाय कर सेवा के लिए निःस्वार्थ भाव से समर्पित रहने की जरूरत पर बल देते हुए टीम वर्क की जरूरत बताई। इस अवसर पर उन्होंने कैडेट्स को ए, बी, सी सर्टिफिकेट्स एक्जाम और सर्टिफिकेट के महत्त्व के बारे में जानकारी प्रदान की। प्रारम्भ में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कर्नल नवदीप सिंह बेदी को पुष्पगुच्छ भेंट करके व शाल ओढा कर स्वागत-सम्मान किया। इस दौरान एनसीसी छात्राओं के साथ कर्नल बेदी के साथ आए सुबेदार मेजर धर्मपाल सिंह व हवलदार मनप्रीत सिंह भी मौजूद रहे। अंत में एनसीसी प्रभारी लेफ्टिनेंट डॉ. आयुषी शर्मा ने आभार ज्ञापित किया।

एनसीसी के एक दिवसीय शिविर में मैप रीडिंग व राईफल का प्रशिक्षण दिया

संस्थान में संचालित एनसीसी की 3 राज गर्ल्स बटालियन की 55 कैडेट्स छात्राओं ने यहां 22 नवम्बर को आयोजित एक दिवसीय शिविर में भाग लिया। शिविर में कैडेट्स को हेल्थ एंड हाईजीन तथा मैप रीडिंग व 22 राईफल को खोलने, जोड़ने व उसकी साफ-सफाई आदि के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण उन्हें हवलदार महावीर सिंह जोधपुर एवं एनसीसी प्रभारी लेफ्टिनेंट डॉ. आयुषी शर्मा ने प्रदान किया। इस अवसर पर आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कैडेट्स के लिए देश सेवा और नागरिक सेवा के लिए हरदम तैयार रहने की प्रेरणा दी।

एनसीसी कैडेट्स ने किया श्रमदान

संस्थान में संचालित गर्ल्स एनसीसी कैडेट्स ने 29 सितम्बर को खाद्य अपशिष्ट पर विश्व जागरूकता दिवस के रूप में एनसीसी प्रभारी व महाविद्यालय के प्राचार्य के साथ मिलकर श्रमदान किया। कार्यक्रम में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने खाद्य अपशिष्ट पर जानकारी प्रदान करते हुए छात्राओं को सचेत किया। कार्यक्रम का संचालन एनसीसी प्रभारी लेफ्टिनेंट डॉ. आयुषी शर्मा ने किया। अंत में कैडेट अभिलाषा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

एनसीसी का दो दिवसीय शिविर आयोजित

नेशनल कैडेट्स कोर का दो दिवसीय शिविर यहां संस्थान में 20 दिसम्बर को आयोजित किया गया। शिविर में एनसीसी 3 राज गर्ल्स बटालियन जोधपुर के हवलदार हवासिंह व हवलदार भाग सिंह ने कैडेट्स को एनसीसी की प्राथमिक नियमों की विस्तार से जानकारियां दी। शिविर में कैडेट्स को 22 राईफल व लेफिटनेंट डॉ. आयुषी शर्मा ने एनसीसी कैडेट्स को मैप को सेट करना, पढ़ना सिखाया। शिविर का शुभारम्भ आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने किया। उन्होंने एनसीसी को अपना भविष्य संवारने के लिए विशेष बताते हुए अनुशासित जीवन शैली के विकास और देशभक्त नागरिक बनाने में एनसीसी को मददगार बताया।

एनसीसी कैडेट्स ने की महात्मा गांधी की प्रतिमा की सफाई

संस्थान में संचालित गर्ल्स एनसीसी बटालियन ने यहां गांधी चौक में स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा की सफाई का कार्यक्रम रखा। एनसीसी कैडेट्स द्वारा 30 सितम्बर को गांधी जयंती के उपलक्ष में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा को साफ करके उज्ज्वल बनाया गया। प्रतिमा पर जमी कबूतरों की विष्टा को हटाया गया। प्रतिमा के साथ ही एनसीसी कैडेट्स ने गांधी चौक स्थित सब्जीमंडी की साफ-सफाई भी की। कुल 30 एनसीसी गर्ल्स कैडेट छात्राओं ने इस सफाई अभियान का बीड़ा उठाया, जिनमें सुमन, दिव्या भास्कर, सुनीता काजला, हेमपुष्पा, अभिलाषा आदि शामिल थी। इस अवसर पर आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, एनसीसी प्रभारी लेफ्टिनेंट डॉ. आयुषी शर्मा, अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ भी कार्यक्रम में मौजूद रहे।

लाडनूं में आधुनिकतम सुविधाओं से युक्त आचार्य महाप्रज्ञ नेचुरोपैथी चिकित्सा केन्द्र

प्राकृतिक चिकित्सा से स्वास्थ्य लाभ के साथ मेडिकल डिग्री व कोर्सेज से बनेगा विद्यार्थियों का कैरियर

आज की भागदौड़ भरी जिन्दगी में अपनी छोटी-मोटी शारीरिक व्याधि के लिए सभी सहज रूप से ऐलोपैथिक दवाओं का सहारा लेकर फिर से काम में जुट जाते हैं, लेकिन तात्कालिक लाभ के अलावा शरीर में मौजूद बीमारी जीर्ण हो जाती है और अंग्रेजी दवाओं के साइड इफेक्ट भी पैदा होने से व्यक्ति को गंभीर बीमारियां जकड़ लेती है। साइड इफेक्ट और स्वास्थ्य के लगातार गिरते जाने की चिंता को लेकर अब लोग प्राकृतिक चिकितसा पद्धति और योग का सहारा लेने लगे हैं। इससे मिलने वाले शारीरिक, मानसिक और आत्मिक पोषण के कारण पीड़ित व्यक्ति स्वतः ही आरोग्य की तरफ बढने लगा है। इसी कारण आमजन में नेचुरोपैथी के प्रति रूझान बढा है। सभी अपने आसपास सहज सुलभ ऐसा प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र तलाश करते हैं।

मनोरम वातावरण और आधुनिक सुविधाएं

जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) में तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यों की सोच के अनुकूल आचार्य महाप्रज्ञ नेचुरोपैथी सेंटर का प्रारम्भ किया गया है। यहां आते ही यहां का हरितिमा युक्त प्राकृतिक सौंदर्य व्यक्ति के मन को सुखद अहसास करवाता है। इस नेचुरोपैथी केन्द्र के विकास और सौंदर्यकरण के तहत परिसर में 350 छायादार एवं फलदार पेड़ों का सघन वृक्षारोपण, 700 ईनरी बाड़ एवं 400 फलों व फूलों के नवीन पौधों का पौधारोपण कर इसे मनोरम बनाया गया है। अंदर प्रवेश करने पर आंतरिक साज-सज्जा भी आधुनिक, वातानुकूलित बनाई जाने के साथ मल्टी-मीडिया, मनोरंजन आदि सभी सुविधाएं भी यहां प्रारम्भ की गई हैं। ओपन जिम्नेजियम, रोड़-लाईट्स एवं पावर बेकअप के लिए जनरेटर-सेट एवं पैदलपाथ-वे द्वारा सुविधाओं का पूरा विस्तार किया गया है, जिसका लाभ यहां आने वाले मरीजों व पारिवारिक परिचारकों को प्राप्त होता है। अस्पताल में जल-संग्रहण के लिए कुण्ड हैं। मरीजों की हर प्रकार की रूग्णावस्था के लिए उचित उपचार की पर्याप्त व्यवस्था के रूप में समस्त प्रकार के आधुनिकतम उपकरण व सुविधाएं उपलब्ध हैं। यहां एक बार प्रयुक्त की जाने वाली डिस्पोजेबल सामग्री एवं औषधीय तेलों एवं अन्य दवाओं का संग्रहण मौजूद है तथा 2 डीलक्स हाइड्रो थैरेपी मसाज टब एव दो स्टीम केबिन ओजोन जेनेरेटर सहित कई आधुनिक व्यवस्थाएं हैं। षट्कर्म योग-क्रिया-स्थल, मड-थैरेपी बाथरूम निर्मित कर चिकित्सा की जा रही है।

प्राकृतिक चिकित्सा की शक्ति को बढाया

मरीजों के शीघ्र आरोग्य प्राप्ति के लिए यहां प्राचीनतम और स्वास्थ्य की देखभाल की निर्दोष प्रणाली प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति में आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान को जोड़ कर इस पद्धति की शक्ति को बढा दिया गया है। विविध प्रकार के प्राकृतिक उपचारों के साथ आहार को नियंत्रित व पौष्टिक बनाकर भी व्यक्ति को स्वास्थ्य लाभ प्रदान किया जा रहा है, ताकि शरीर में समस्त तत्त्वों के संतुलन से स्वास्थ्य लाभ शीघ्र हो। इनके साथ ही शरीर सक्रिय व स्वस्थ बनाने के लिए हाईड्रोथेरेपी, मालिश, योग और ध्यान एवं अन्य प्राकृतिक चिकित्सा सिस्टम का उपयोग भी किया जाता है। यहां गठिया, दमा, ब्रोंकाइटिस, कोलाइटिस, मधुमेह, हृदय की समस्याओं, मोटापा, अम्लता, पीलिया, सांस की बीमारियों और स्पोंडीलाईटिस आदि बीमारियों का उपचार निसर्गिक पद्धति से किया जाता है। केन्द्र में डीलक्स और सेमी-डीलक्स कॉटेज के साथ 50 शैयाओं की सुविधा उपलब्ध करवाई गई है। यहां हाइड्रोथेरेपी, मैनिपुलेटिव थेरेपी, एक्यूपंक्चर, फिजियोथेरेपी, मड थेरेपी, सुगंध और मालिश थेरेपी, रंग और चुंबकीय थेरेपी, पोषण और आहार की उपचार पद्धति के साथ व्यायामशाला और हर्बल और प्राकृतिक भोजन प्रदान करने वाली भोजनशाला की सुविधा भी उपलब्ध है।

प्राकृतिक चिकित्सा के तरीके

इस पद्धति में डायटेटिक्स, वानस्पतिक चिकित्सा, होम्योपैथी, उपवास, व्यायाम, जीवनशैली परामर्श, विषहरण और केलेशन, नैदानिक पोषण, हाइड्रोथेरेपी, प्राकृतिक उपचार, आध्यात्मिक उपचार, पर्यावरण मूल्यांकन, स्वास्थ्य सहित प्राकृतिक उपचारों का उपयोग करके रोग

निदान, उपचार और इलाज को विज्ञान सम्मत बनाया गया है। व्यक्ति को अपनी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के मूल कारण के बारे में शिक्षित करके, स्वस्थ रहने के लिए स्वस्थ परिवर्तनों के बारे में जागरूक करने, आहार और जीवन शैली में बदलाव करने की दिशा में मार्गदर्शन से पूर्ण स्वास्थ्य लाभ के लिए तैयार किया जाता है। यहां चिकित्सा शिविरों का आयोजन भी किया जा रहा है। यहां लगाए गए चिकित्सा शिविरों में दो दिवसीय निसर्ग उपचार शिविर तथा तीन दिवसीय आचार्य महाप्रज्ञ निसर्ग उपचार शिविर में काफी लोगों ने यहां उपलब्ध सभी चिकित्सा सेवाओं का पूर्ण लाभ प्राप्त किया है। शिविरार्थियों ने अपने अनुभवों में इस चिकित्सा पद्धति और यहां की व्यवस्थाओं-सुविधाओं की सराहना की है। इन शिविरार्थियों ने अपने शरीर को स्वस्थ पाया और अपने घर पर भी नियमित अभ्यास करते रहने का संकल्प किया।

चिकित्सा के विभिन्न प्रकार

यहां निसर्गिक चिकित्सा पद्धति के आधुनिकतम उपकरणों व सुविधाओं की व्यवस्था की गई है और सुप्रशिक्षित चिकित्सकों व नर्सिंग स्टाफ द्वारा व्यक्ति को पूर्ण स्वस्थ्य बनाए जाने का प्रकल्प चलाया जा रहा है। केन्द्र में महिला व पुरूष तीन डॉक्टर्स के साथ एक डाईटीशियन, तीन थैरेपिस्ट, एक हाउस-कीपिंग सुपरवाईजर एवं प्रशासक की सेवाएं लगातार मिल रही हैं। इनके सहयोग से यहां बॉडी मसाज, स्टीम व सोना बाथ, मड पैक बाथ, सैंड फोर्मेशन, एक्यूपंक्चर, फेसियल व लोकल स्टीम, शिरोधारा, होट व कोल्ड कम्प्रेस एड पैक तथा थ्रोट, एब्डोमिन, आर्म, नी, लैग पैक, नेचुरल, होट एंड कोल्ड हिप बाथ, एनिमा, गेंजी, टर्मरिक, नीम बाथ, जकुजी व सर्कुलर जेट हायड्रोथैरेपी, कटि स्नान, जानु स्नान, ग्रीवा बस्ति आदि की सुविधाएं मरीजों को उपलब्ध करवाई जा रही है।

चिकित्सा के साथ डिग्री व अन्य कोर्सेज भी

जैन विश्वभारती संस्थान के इस नेचुरोपैथी विभाग में 'योग एवं नेचुरोपैथी' का नियमित एवं 'आहार शास्त्र' का ऑनलाईन प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। इसके अलावा बीएनवाईएस (बैचलर ऑफ नेचुरोपैथी एंड यौगिक साइंसेज) कोर्स के संचालन द्वारा योग और प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में उत्कृष्टता पैदा करने के उद्देश्य से विभिन्न कोर्सेज का भी संचालन भी राजस्थान सरकार की अनापति के पश्चात् शुरू किया जाएगा। इस प्राकृतिक चिकित्सा और योग में साढ़े पांच साल के मेडिकल डिग्री पाठ्यक्रम की वर्तमान में मांग भी बनी हुई है। इससे विद्यार्थी अपने कैरियर के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय, आयुष मंत्रालय, अनुसंधान परिषद जैसे केंद्रीय योग और प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरवाईएन) जैसे क्षेत्र के अलावा विदेशों में भी नौकरी के अवसर प्राप्त कर सकेगा। इसके अलावा स्कूलों में योग शिक्षक, चिकित्सा विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में व्याख्याता पद, प्रोफेसरशिप, रीडरशिप, योग शिक्षण, योग पंजीकृत मेडिकल प्रैक्टिस, सेना आदि विभिन्न क्षेत्रें में रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकता है।

भामाशाह बोकड़िया परिवार के आर्थिक सौजन्य से

नेचुरोपैथी चिकित्सा पर 50 प्रतिशत की विशेष छूट

जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय के उपक्रम आचार्य महाप्रज्ञ नेचुरोपैथी चिकित्सा केन्द्र में वर्तमान में चल रहे समस्त प्रकार के उपचारों व चिकित्सा सेवाओं के लिए दरों को 50 प्रतिशत की विशेष छूट करते हुए आधा कर दिया गया है। यह विशेष छूट तेरापंथ समाज के प्रमुख महामना-उदारमना भामाशाह श्री उम्मेदजी-श्रीमती सुशीला देवी बोकड़िया चैन्नई प्रवासी (लाडनूं निवासी) के आर्थिक सौजन्य से प्रदान की जा रही है। उन्होंने पूर्व में तीन माह (नवम्बर 2023 से जनवरी 2024) के लिए सहयोग करके छूट करवाई थी और तत्पश्चात् विशाल हृदय का परिचय देते हुए आगामी तीन माह के लिए फिर से यह सुविधा और उपलब्ध करवाई। अतः आगामी 30 अप्रेल तक यह सुविधा अनवरत चालू रहेगी। इस आचार्य महाप्रज्ञ नेचुरोपैथी चिकित्सा केन्द्र में अनुभवी डाक्टर्स, उपचारात्मक भोजन, उत्कृष्ट आवास व्यवस्था, आधुनिक संयंत्रों द्वारा पूरा दिन इलाज, सम्पूर्ण कायाकल्प, आउटडोर जिम्नेजियम, योगा स्टूडियो व आध्यात्मिक वातारण होने से मरीज को स्वस्थ्य होने का लाभ शीघ्र प्राप्त होता है। केन्द्र में गठिया, कमरदर्द, घुटनों का दर्द, जोड़ों के दर्द, साईटिका, सर्वाइकल स्पोडिलाइटिस, ब्लडप्रेशर, डायबिटिज, पेट की बीमारियों, कोलाइटिस, मोटापा, एसिडिटी, सांस की बीमारियों, दमा, ब्रोंकाइटिस, हृदय की समस्याएं आदि समस्त प्रकार की बीमारियों का उपचार नैसर्गिक तरीके से सफलता पूर्वक किया जाता है।

आचार्य जयकीर्ती पुरस्कार से प्रो. जिनेंद्र कुमार जैन का सम्मान

संस्थान के संस्कृत एवं प्राकृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो जिनेंद्र कुमार जैन को आचार्य जयकीर्ति राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है। आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज के सान्निध्य में फरीदाबाद में 5 अक्टूबर को आयोजित आगम निष्ठ राष्ट्रीय जैन विद्वत् संगोष्ठी में प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन को आचार्य जयकीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जैनविद्या, प्राकृत भाषा और सहित्य के अध्ययन-अनुसंधान, प्रचार-प्रसार, उन्नयन और जैन-प्राकृत जैसी प्राच्यविद्या के क्षेत्र में की गई अपूर्व सेवा के लिए उन्हें यह सम्मान दिया गया है। सकल समाज की तरफ से उन्हें सम्मान स्वरूप प्रशस्तिपत्र, शाल एवं नगद राशि प्रदान की गई। परम पूज्य आचार्य वसुनन्दी जी मुनिराज के शुभाशीर्वाद सहित और जैन विद्वानों की सन्निधि में सकल जैन समाज, फरीदाबाद की ओर से यह पुरस्कार उन्हें प्रदान किया गया। ज्ञातव्य है कि प्रो जिनेन्द्र कुमार जैन जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं में लगभग 21 वर्ष तक अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान से जुड़े रहने के बाद मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग के अध्यक्ष तथा कला महाविद्यालय के एसोसिएट डीन के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कर चुके है। प्रो. जैन भारतीय प्राकृत स्कॉलर्स सोसाइटी के अध्यक्ष भी हैं। वे अभी भी जैनविद्या-प्राकृत की सेवा में सतत रूप से संलग्न हैं।

संस्थान की छात्राओं ने राज्य स्तरीय वाद विवाद प्रतियोगिता में जीती चल वैजयंती

'सोशल मीडिया का बढ़ता उपयोग सामाजिक-पारिवारिक व्यवस्थाओं के लिए चुनौती' विषय पर 23 सितम्बर को आयोजित अखिल राजस्थान अन्तर्महाविद्यालय हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता में चल वैजयंती ट्रॉफी पर जैन विश्वभारती संस्थान ने कब्जा जमाने में सफलता प्राप्त की। संस्थान की छात्रा अभिलाषा स्वामी ने इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस राज्य स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में संस्थान की अभिलाषा स्वामी व ममता गोरा ने प्रथम पुरस्कार के साथ चल वैजयंती पुरस्कार जीता। इन दोनों विजेता छात्राओं को यहां विश्वविद्यालय पहुंचने पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ व रजिस्ट्रार प्रो. बी.एल. जैन ने उनका स्वागत व सम्मान किया। कुलपति ने उन्हें बधाई देते हुए कहा कि प्रतिभा की प्रखरता सभी जगह मुखर रहती है। कुलसचिव प्रो. जैन ने बताया कि सुजानगढ के राजकीय महाविद्यालय में कुन्दनमल सेठिया की स्मृति में इस अखिल राजस्थान स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन गौरव सेठिया के मुख्य आतिथ्य में किया गया। प्रतियोगिता के विशिष्ट अतिथि खुशबू सेठिया, राजेश सुन्दरिया, चतर सिंह डोटासरा व एसआर बालान थे। प्रतियोगिता संयोजक प्रमोद कुमार ने प्रतियोगिता के बारे में जानकारी प्रदान की। राजकीय कन्या महाविद्यालय लाडनूं के प्राचार्य डॉ. गजादान चारण एवं मास्टर भंवर लाल मेघवाल राजकीय गर्ल्स कॉलेज सुजानगढ के प्राचार्य डॉ. प्रेम बाफना ने अपने प्रतियोगिता सम्बंधी अनुभव साझा किए। निर्णायक साहित्यकार डॉ. घनश्यामनाथ कच्छावा, बलदेव ढाका व आलोक खटेड़ थे। अंत में प्राचार्या विनीता चौधरी ने आभार ज्ञापित किया।

प्रो. त्रिपाठी को मिला राजस्थान बाल साहित्य मनीषी सम्मान

पंडित जवाहरलाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी की ओर से ख्यातिनाम बाल साहित्यकार प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी रत्नेश को बाल साहित्य मनीषी 2023 के सम्मान से नवाजा गया है। यह सम्मान उन्हें जवाहर कला केंद्र जयपुर में शासन सचिव गायत्री राठौड़ की अध्यक्षता और राजीव अरोड़ा के मुख्य आतिथ्य में 22 अगस्त को आयोजित कार्यक्रम में प्रदान किया गया। इस अवसर पर अकादमी के अध्यक्ष गीतकार इकराम राजस्थानी ने उन सभी का स्वागत किया।

सम्मान के रूप में प्रो. डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी रत्नेश को शालार्पण के साथ मोमेंटो, सम्मान पत्र एवं 21 हजार की राशि प्रदान की गई। प्रो. त्रिपाठी पिछले 35 वर्षों से निरंतर बाल साहित्य का सृजन कर रहे हैं। अब तक उनके 18 बाल कहानी संग्रह, एक काव्य संग्रह, एक एकांकी संग्रह और एक बाल उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं।

इसके अतिरिक्त पांच कहानी संग्रह, दो लघुकथा संग्रह, तीन नाटक, दो जीवनी साहित्य, दो निबंध संग्रह, 12 दार्शनिक ग्रंथ एवं कई संपादित ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुके हैं। उन्हें अब तक अनेक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं, जिनमें भवानीलाल गुप्ता कहानी पुरस्कार, सोहनलाल द्विवेदी बाल साहित्य पुरस्कार, बाल साहित्य संस्थान पुरस्कार, साहित्य एवं संस्कृति सम्मान, महावीर प्रसाद द्विवेदी सम्मान, अणुव्रत शिक्षा सम्मान, अणुव्रत लेखक पुरस्कार एवं बाल साहित्य मनीषी सम्मान आदि प्रदान किए जा चुके हैं।

Acharya Mahaprajna Naturopathy Centre

(A Commitment for A System of Life; Made of Humility and Empathy)

FEATURES:

- Comfortable Stay and Hospitality
- Detox and Rejuvenation
- Spiritual Environment
- Experienced Doctors
- Full Day Treatment
- Therapeutic Food
- Outdoor Gym
- Yoga Studio

THERAPIES:

- Colon Therapy
- Mud Therapy
- Hydrotherapy
- Steam/Sauna Bath
- Shirodhara, Panchkarma
- Stone Therapy
- Cupping Therapy
- Circular Jet, Spine Jet
- Jacuzzi .....*and many more*

Accommodation	Rates
Dormitory	Rs. 25,000/-
Semi-Deluxe	Rs. 42,000/-
Deluxe	Rs. 60,000/-

Specialized Treatment Programs:

Detox Program, Pain Management, Weight Loss Program, Allergy & Asthma Care, Diabetes Care, Wellness, Special Yoga Therapies

Separate Treatment Facility for Males & Females

Book Now

Note: Extra 50% off on all treatments till April 2024.

Sponsoured by Sh. Ummed Ji Bokariya- Sushila Devi Bokaria (Ladnun-Chennai)

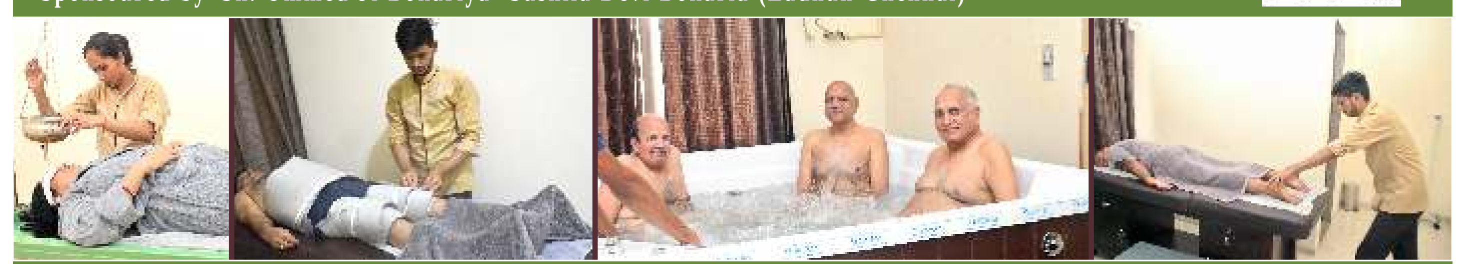

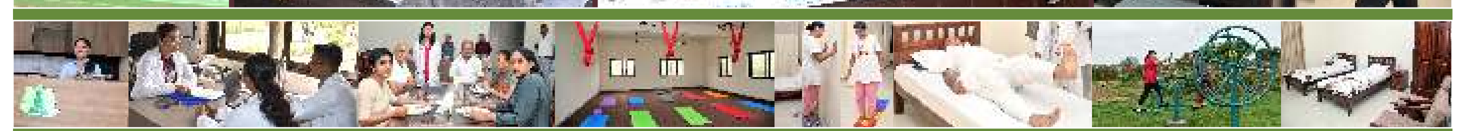

FOR REGISTRATION

+91-8209184651 ammcn001@gmail.com https://naturopathy.jvbi.ac.in